

आपकी अपनी साहित्यिक पत्रिका

संपर्क भाषा भारती

samparkbhashabharati@gmail.com

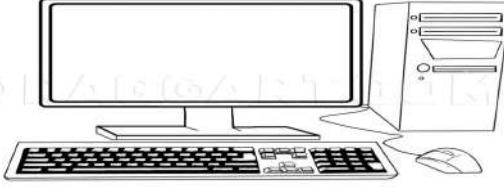
वर्ष 1990 से नई दिल्ली से प्रकाशित
साहित्य-समाज को समर्पित राष्ट्रीय मासिकी,
अक्टूबर-2024, RNI-50756
वर्ष-34, अंक-407 मूल्य 150/-



भारतीय डाक : 170 वर्षों का गौरवशाली सफर हिंदी आलोचना का जनपक्ष : संवाद

तथा अन्य नियमित स्तम्भ.....





अपनी बात...

प्रिय समस्त!

‘छाती कूट’ का सामूहिक पर्व

ये नेट भी अजीब है, नेट माने जाला। हम सब इस नेट में फंसे हुए प्राणी हैं। फंसे हुए शब्द से यह प्रतीति होती है जैसे हमें बहेलिये ने धोखे से फंसा लिया हो। ऐसा नहीं है। यह नेट स्वयं हमने उठा कर अपने ऊपर ओढ़ लिया है। इस नेट में जानवर भी हैं पक्षी भी और मनुष्य भी।

देखा यह गया है कि जानवर, जानवर को लाइक कर के उसके समूह में शामिल होना चाहता है। कई बार ऐसा भी हुआ है कि कोई चिड़िया जानवरों के समूह में फंस जाती है तो जानवर समूह उसे चट्ट कर जाता है। कई बार जानवर भी मनुष्य का ढोंग रचा कर उस समूह का सदस्य बन जाता है। पर वह चूंकि मूल रूप से जानवर है अतः वह मनुष्यों द्वारा पोस्ट किए उन तत्वों की तलाश करता है जो पशुवत होते हैं। मनुष्य ही इनमें ऐसा है जो अपनी चतुराई से जानवर समूह का भी सदस्य बना रहता है और पक्षी समूह का भी। लेखकीय और साहित्यिक बुराई लिए हुए ये मनुष्य बगुले की तरह साधना करते हैं। एक पैर पर खड़े-खड़े। क्या तपस्या और साधना होती है उनकी। कुछ मत पूछिए। चिड़ियों से मिलेंगे तो उनकी तरह चह-चहाने की कोशिश करेंगे। कुत्तों के समूह में होंगे तो आपके सारे शरीर को चाट कर आपमें उत्तेजना का संचार कर देंगे। मनुष्य नामक यह परजीवी अक्सर चुपके से जानवरों को चट्ट कर जाता है। चिड़िया फंसाना तो उसके बाएँ हाथ का खेल है।

मनुष्यों की इस श्रेणी में कुछ महंत टाइप भी होते हैं। कोई उन्हें लाइक करे ना करे वे सब को लाइक कर के मन जीत लेते हैं। ऐसे शिकारी मनुष्य निरीह या नवोदित साहित्यकार, लेखक या ऐसे व्यसन रखनेवालों को अपना शिकार बनाते हैं। उन्हें फ्रेंड रिक्वेस्ट भेज कर। एक बार जैसे ही वे फ्रेंड बन जाते हैं, नए मित्र के पुराने सारे पोस्ट को लाइक मार देते हैं। कुछ दिनों तक उनका लाइक करने का यह तमाशा छद्म रूप से चलता रहता है। इस प्रकार वे मित्र के मन में पैठ बना लेते हैं। एकाध महीने बाद वे अपने दिमाग का कूड़ा, भारतीय स्वच्छता मिशन के तहत दूसरे के ऊपर उंडेलना शुरू कर देते हैं। अब वे लाइक नहीं करते। अब वे अपने दरबार में आपको कूदे की गंध का लालच देकर बुलाते हैं। जब भी आप जाल या नेट खोलोगे आपको मेल से संदेश मिल जाएगा कि आज फिर वे अपने दिमाग की उलटी या वमन आपके मोहारे पर रख गए हैं। चूंकि संकोच में आपको उनके कूड़े को सूंघने की आदत पड़ चुकी है आप उसे लाइक कर दोगे। आपकी लाइक देख कर ऐसे मनुष्यों में उलटी करने की प्रवृत्ति बहुत तेजी से बढ़ती देखी गई है।

कुछ मनुष्य तो इस नेट में ऐसे हैं, जब तक उन्हें 50-100 लाइक का नोटिस अपने नाम के सामने ना दिखाई दे उन्हें लगता है, उनका शृंगार करना ही व्यर्थ गया। समुचित संख्या में लाइक ना मिलने पर वे सार्वजनिकरूप से लाइक ना करनेवालों को गरियाने लगते हैं और चूड़ियाँ तोड़ कर वैधव्य अपना लेने की धमकी देने लगते हैं। जाल से निकाल जाने को विधवा होना समझते हैं।

भारत में इसी मनुष्य की श्रेणी में कुछ लल भइये भी हैं। वे जिस थाली में खाते हैं चम्मच से उसी थाली में छेद करने की कोशिश करते हैं। घर का मुखिया जब उन्हें ऐसा करते हुए पकड़ लेता है तो ये तरह-तरह की शकलें बनाते हैं, जब इनकी कान-खिंचाईय्या होती है तो ये घर के मालिक को ही गरियाने धमकाने लगते हैं। कई बार इन्हें घर तोड़ने का नारा लगते हुए भी देखा गया है। ये निर्धनों के पैरोकार हैं। खुद कुछ नहीं करते किन्तु पूँजीपतियों के श्रम और कमाई पर अपने बाप का हक मानते हैं। जिस से तर्क नहीं चलता उसे फासीवादी बताते हैं। कौए की तरह चार इकट्टा हो जाएँ तो शहर सिर पर उठा लें। अकेले पाए जाने पर बड़ा निरीह दिखते हैं।

कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें इटालियन ब्रांड के कुत्तों की गंदगी साफ करते देखा जा सकता है। ये भारतीय कुत्तों की गंदगी नहीं साफ कर सकते हैं। इन्हें बस और बस इटालियन ब्रांड के कुत्तों की गंदगी से प्यार है।

कुछ जो देश, समाज, राष्ट्र, उचित, अनुचित, उपदेशात्मक बात करते हैं उन्हें लल भइये और इटालियन कुत्तों की गंदगी साफ करनेवाले हेय समझते हैं, कभी-कभी जाती सूचक शब्द ‘भक्त’ से भी संबोधित करते हैं। अपने बराबर का नहीं समझते क्योंकि देश, समाज, राष्ट्र, उचित, अनुचित, उपदेश सुन लेंगे तो इनका स्टेटस गिर जाएगा। इन्हें इटालियन कुत्ते अपनी बची हुई हड्डी फेंक दिया करते थे।

आज ‘विजय दिवस’ है। आज ऐसा हुआ है जो इस देश के इतिहास में शायद छत्रपति शिवाजी जैसे ही नायक कर गए थे। दुश्मन को घर के अंदर मार पड़ी है। हमारे यहाँ के इटालियन कुत्तों के वफादार सेवादार आज उदास हैं, लल भैया भी उदास हैं। फूट-फूट के विलाप करना चाहते हैं। पर यह भी चाहते हैं कोई उन्हें देखे नहीं। एक दूसरे की ‘छाती कूट’ का सामूहिक पर्व आज उनके यहाँ है.....

मुबारकबाद.....

सादर,

सुधेन्दु ओझा

संपर्क भाषा भारती : प्रधान संपादकीय कार्यालय : सुधेन्दु ओझा (संपादक), ग्राम : मकरी, पोस्ट भुइँदहा, पृथ्वीगंज, प्रतापगढ़-230304

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-

क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, दिल्ली पत्र व्यवहार का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली 110092

"संपर्क भाषा भारती" हिन्दी साहित्य की आपकी साहित्यिक परिचायिका...

संपर्क भाषा भारती



मुख्य संपादक : सुधेन्दु ओझा

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

संपर्क भाषा भारती क्षेत्रीय कार्यालय के रूप में संबद्धता के लिए पत्रिकाओं का स्वागत

आप अपनी रचनाएँ,

गोष्ठी/सम्मान समारोह संबंधी सूचना फोटो सहित

स्वयं www.newzlens.in पर सब्मिट कर सकते हैं ...

सभी पत्रिकाएँ डाऊनलोड के लिए www.newzlens.in पर उपलब्ध हैं...



अक्तूबर-2024



क्रमः	शीर्षक	लेखकः	पृष्ठ संख्या
1	संपादकीय		2
2	साहित्यिक समाचार		6
3	कविता	नवीन माथुर पंचोली	8
4	कविता	डॉ शरदनारायण खरे	8
5	कविता	संदीप मिश्र सरस	9
6	नवगीत	शिवानंद सिंह सहयोगी	9
7	आंतरिक-बाह्य खलनायकों का सफाया...	सीताराम गुप्ता	10
8	कविता	डॉ केवल कृष्ण पाठक	14
9	नवगीत	सूर्य प्रकाश मिश्र	15
10	कविता	गौरी शंकर वैश्य	16
11	कविता	डॉ अखिलेश शर्मा	16
12	लेखन, मात्र कमाई का जरिया नहीं	प्रफुल्ल सिंह	18
13	लाहौल स्पीति जनपद की संस्कृति के....	छविन्दर कुमार	22
14	ईमानदारी की अकड़	डॉ मुकेश असीमित	24
15	ग़ज़ल	वाई वेद प्रकाश	26
16	यादों के गलियारे से : डॉ लक्ष्मी नारायण लाल	शीला झुनझुनवाला	27
17	अंधेरे से प्रकाश की ओर जाने का पर्व है ...	आकांक्षा यादव	34
18	हिन्दी आलोचना का जनपक्ष : संवाद	डॉ अमल सिंह भिक्षुक	36
19	कविता	गौरीशंकर वैश्य	40
20	कोशिशों के पुल और....	डॉ रंजना गुप्ता	41
21	नवगीत	मार्तण्ड	42
22	कविता	विकास कुमार शर्मा	44
23	आज का श्रवण कुमार	सविता चड्ढा	45
24	लघुकथा	सीताराम गुप्ता	48
25	लघुकथा	व्यग्र पाण्डे	49
26	लघुकथा	अशोक वाधवानी	49
27	आर्य संस्कृति की जन्मस्थाली : हरियाणा	गौरीशंकर वैश्य	53
28	कविता	कुमकुम कुमारी	52
29	कविता	राजेंद्र ओझा	54

30	भारतीय डाक : 170 वर्ष का गौरवशाली सफर...	कृष्ण कुमार यादव	60
31	कविता	ममता राही	70
32	कविता	गिरेन्द्र सिंह भदौरिया 'प्राण'	76
33	कविता	ममता राही	76

पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक, मुद्रक तथा संपादक : सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-110092 फोन : 9868108713



पत्रिका में प्रकाशित लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com

साहित्यिक समाचार

डॉक्टर सविता चड्ढा को टोक्यो में मिला "परिकल्पना यात्र सम्मान " और राष्ट्र गौरव साहित्य सम्मान"

परिकल्पना संस्था के रजत जयन्ती यात्रा समारोह का जिन्जा स्थित कोको आडिटोरियम, टोकियो में आयोजन किया गया। हिंदी अन्तर्राष्ट्रीय साहित्य सम्मेलन व सम्मान समारोह के आयोजन मे

हिंदी साहित्याकार डॉक्टर सविता चड्ढा को "परिकल्पना यात्र सम्मान " से सम्मानित किया गया इसके साथ हि उन्हें आई. पी. फाउंडेशन इंटरनेशनल द्वारा 'राष्ट्र गौरव साहित्य सम्मान' से सम्मानित किया गया। डॉक्टर रविन्दर प्रभात और डॉक्टर स्मिता मिश्रा द्वारा सम्मानित करते हुए लेखिका का परिचय देते हुए उनके साहित्य सृजन की सराहना की गई। ये सम्मान उन्हें उनकी सृजनात्मक एवं रचनात्मक अभिव्यक्ति , हिंदी समाज, साहित्य , भाषा एवं संस्कृति को वैश्विक स्तर समृद्ध करने और हिंदी समाज में उच्च मानक स्थापित करने के लिए प्रदान किया गया। उल्लेखनीय है की लेखिका सविता चड्ढा पिछले चलीस वर्षों से हिंदी साहित्य में सृजनरत हैं और देश विदेश में अनेक सम्मानों से सम्मानित हैं।

इस आयोजन में अमेरिका, प्रयागराज, दिल्ली, आगरा, उज्जैन, लखनऊ व दिल्ली के अनेक साहित्यकारों ने सहभागिता की।

बाल कविता के श्रेष्ठ रचनाकार हैं वरिष्ठ ग़ज़लकार एवं चित्रकार विज्ञान व्रत : : सिद्धेश्वर

बच्चों के चारित्रिक विकास के लिए भी साहित्य का बहुमूल्य योगदान होता है। किंतु बाल साहित्य को आज उपेक्षित किया जा रहा है। वर्तमान समय में बाल साहित्य के प्रति उपेक्षा के कारण ही बच्चे भटककर अपराध की ओर मुड़ने लगे हैं। उनके भीतर, अपना संस्कार नहीं आ पा रहा है। वे अपना समय अन्य माध्यमों के बीच बिताना पसंद करने लगे हैं। सोशल मीडिया पर अनर्गल दृश्यों को देखने में अभिरुचि रखने लगे हैं। जिस कारण पढ़ने के प्रति उनकी रुचि घटती जा रही है। लेखकों को बाल साहित्य सृजन के प्रति भी गंभीरता से ध्यान देना होगा। इसी उद्देश्य से हमने हर सप्ताह साहित्य की अलग-अलग विधाओं पर चला रहे कार्यशालासह-पाठशाला तथा हेलो

फेसबुक साहित्य सम्मेलन में भी बाल साहित्य को जोड़ने का मन बना लिया। ताकि कविता, कहानी, लघुकथा के साथ-साथ हम बाल साहित्य सृजन की ओर भी लेखकों और बाल रचनाकारों का ध्यान मोड सके। उम्मीद से अधिक सफलता मिली।

भारतीय युवा साहित्यकार परिषद के तत्वावधान में, गूगल मीट के माध्यम से, फेसबुक के अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के पेज पर, हेलो फेसबुक लघुकथा सम्मेलन का संचालन करते हुए संयोजक सिद्धेश्वर ने उपरोक्त उद्गार व्यक्त किया।

प्रथम सत्र में मुख्य अतिथि विज्ञान व्रत का एकाल पाठ हुआ तथा बाल कविता में उनके सृजन का मूल्यांकन भी किया गया। इस विषय पर केंद्रित डायरी को पढ़ते हुए सिद्धेश्वर ने कहा कि विज्ञान व्रत जैसे तो एक से बढ़कर एक ग़ज़ल लिखते रहे हैं और अपनी एक अलग पहचान बना रखा है छोटे बहर की ग़ज़लों के साथ। इस बार उनकी एक से बढ़कर एक बाल कविताओं को देखकर मन मुग्ध हो गया। अपनी बाल कविताओं में भी उन्होंने छोटे बहर की ग़ज़ल जैसा करतब दिखलाया है। उनकी एक बाल कविता की रवानगी की देखिए -“ बंदर भैया बने मिनिस्टर /दिल्ली में है बांग्ला दफ्तर /कुर्ता पहने धोती बाँधी /गांधी टोपी रक्खी सर पर। उन्होंने जानवर को पात्र बनाकर भी दफ्तरी बाबू के प्रति लोगों की क्या नज़रिया होती है, इसका समावेश करने में वे पीछे नहीं रहे। विज्ञान व्रत की बाल कविताओं को पढ़ते हुए लगता है कि विख्यात ग़ज़लकार चित्रकार विज्ञान व्रत का काव्य सृजन अद्भुत है। बाल कविता के श्रेष्ठ रचनाकार हैं वरिष्ठ ग़ज़लकार एवं चित्रकार विज्ञान व्रत।

अपने अध्यक्षीय टिप्पणी में वरिष्ठ लेखिका अनिता रश्मि ने कहा कि - बाल साहित्य को लोग समझते हैं कि सरल मासूम बच्चों के लिए लिखी जा रही है। प्रौढ, युवा या बुजुर्ग लिख रहे हो, बादलों के लिए लिखने के लिए बच्चा बनना पड़ता है। तभी सफल बालोपयोगी रचनाएँ लिखी जा सकती है। कलाकार, चित्रकार, बेहतरीन ग़ज़लकार विज्ञान व्रत जी की तीनों बाल कविताएँ बचपन की यादों की सैर कराती है। सिद्धेश्वर द्वारा संयोजित यह बाल साहित्य सम्मेलन अद्भुत रहा। बाल साहित्य पर ऐसी गोष्ठियों होती रहनी चाहिए। जिससे बच्चों में नैतिकता और जीवन मूल्य की स्थापना हो सके, बच्चे साहित्य से जुड़ सकें।

इस ऑनलाइन कवि सम्मेलन में पढ़ी गई कविताओं पर समीक्षात्मक

टिप्पणी करते हुए बाल साहित्य सम्मेलन के अंत में धन्यवाद ज्ञापन देने के क्रम में चर्चित लेखिका रत्ना मानिक ने कहा कि -अवसर साहित्यधर्मी पत्रिका के आभासी मंच पर पत्रिका के संपादक और संयोजक सुप्रसिद्ध चित्रकार और साहित्यकार सिद्धेश्वर जी के द्वारा हेलो फेसबुक बाल साहित्य सम्मेलन का सुंदर आगाज किया गया। स्वयं संपादक सिद्धेश्वर जी ने बाल साहित्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए वर्तमान परिपेक्ष्य में बाल साहित्य सृजन की आवश्यकता पर बल देते हुए कार्यक्रम का प्रभावी ढंग से संचालन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता ख्यातिलब्ध साहित्यकार श्रीमती अनिता रश्मि जी ने किया। अनिता रश्मि ने अपनी एक बाल कहानी का वाचन भी किया। मंच को समृद्ध करने हेतु मैं डॉ रत्ना मानिक आदरणीया अनिता रश्मि जी का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित करती हूँ। मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित आदरणीय विज्ञान व्रत जी का भी मंच आभारी है जिन्होंने एक तरफ अपने अनुभवों एवम बाल कविताओं, सब्जी वाला और तितली के माध्यम से जहाँ आज की पीढ़ी को ज़मीन से जुड़े रहने का सुंदर संदेश प्रेषित किया वहीं दूसरी तरफ अपनी कविता बंदर भैया के माध्यम से मौजूदा सरकारी तंत्र पर तीखा कटाक्ष भी किया।

इस सुंदर सम्मेलन में आदरणीय अनिता पांडा जी, राजप्रिया रानी जी, सच्चिदानंद किरण जी, रजनी श्रीवास्तव अनंता जी, तेज नारायण जी एवम डॉ रत्ना मानिक ने सम्मिलित होकर कार्यक्रम की निरंतरता बनाए रखने एवं अपनी उम्दा प्रस्तुति से सम्मेलन को सार्थक दिशा प्रदान की। मैं उन सभी सृजनकर्ता की आभारी हूँ। इस प्रशंसनीय आयोजन के लिए मैं आदरणीय सिद्धेश्वर जी के प्रति अपना आभार व्यक्त करना चाहती हूँ जिन्होंने आज के हलचलपूर्ण माहौल में बाल मन को पुनः अंकुरित करने का सुकाज किया है।

इस संगोष्ठी में विजयजा कुमारी मौर्या, कल्पना भट्ट, दुर्गेश मोहन, मुरारी मधुकर बीना गुप्ता, नरेश कुमार आस्ता आदि की भी महत्वपूर्ण भागीदारी रही।

शशिबिन्दुनारायण मिश्र की कविता : स्वच्छाञ्जलि कार्यक्रम और श्रद्धाञ्जलि

(02 अक्टूबर पर विशेष)

भारत सरकार का आह्वान / स्वच्छता से हो जीवन आसान / सहस्राब्दियों से मेरा भारत महान् / है महान् रहेगा महान् / अज्ञानी मानव को गीता ने दिया दिव्यज्ञान / दो अक्टूबर को जन्मा, किया गीता को आत्मसात / उसके पदचिह्नों पर हम भी हो लें साथ / दो अक्टूबर दो महान् आत्माएँ / जीवन सच के धरातल पर, नहीं झूठ कल्पनाएँ / एक सत्य-अहिंसा- सद्भाव का पुजारी / दूसरा था जय-जवान, जय-किसान / गाँधी और शास्त्री होना नहीं है आसान / उनके हाथों में थी

केवल गीता और एक सोंटा / घर के अलावा हर गली-कूचे का सफाई -काम नहीं है छोटा / सर्वत्र सफाई कर दुनिया को दिखलाया / केवल दिखलाने के लिए झाड़ू नहीं लगाया / फोटो खिंचवाने के लिए झाड़ू नहीं उठाया / पूरे देश और दुनिया को यह आचरण से समझाया / भारत सरकार का आह्वान / मेरा भारत महान् / हर एक में दीखे स्वच्छता के प्रति समर्पण / पर यत्र-तत्र ही दिखता कार्य में अर्पण / सर्वत्र नहीं है यह आचरण / कुछ के हाथों में नहीं / बहुतों के हाथों में देखा जाता है दो अक्टूबर के आसपास झाड़ू / अनेकानेक के हाथों में पड़कर / अब झाड़ू गाँव-गाँव, गली-कूचों में बहुतों को चमकाता है / बहुतों को मुँह चिढ़ाता है / बहुतों ने झाड़ू थाम कैमरे को निहारा है / केवल कैमरे को निहारा है / भद्दी मुस्कान सहित दाँत निपोरा है / जो जीवन में निज-शरीर से इतर स्वच्छता से सदा रखते रहे किनारा / उन्होंने भी अब लिया झाड़ू का सहारा / फोटो खिंचवाने के लिए / शासन को दिखाने के लिए / अखबारों में छपवाने के लिए / जनता को दिखलाने के लिए / सोशल मीडिया के हर प्लेटफार्म पर चिपकाने के लिए / जैसे पौधारोपण में / वृक्ष नहीं लग पाता है / नहीं पनप पाता है / हरा-भरा नहीं हो पाता है / जैसे एक पौध दश वीआईपी लगाते हैं / बाद में एक मिनट की सेवा उसे नहीं दे पाते हैं / जैसे कागजों पर बाँध बाँधा जाता है / बाद में घर का घर बह जाता है / सब कुछ फोटो खिंचवाने भर के लिए होता है / या तारीफ भर के लिए होता है / सादा जीवन उच्च विचार / केवल नहीं था नारा / शास्त्री ने उसे जीवन में उतारा / जिसने हर अच्छे-बुरे सच को स्वीकारा / मुण्डकोपनिषद के 'सत्यमेव जयते' को रोम-रोम में धारा / सत्य को ईश्वर मान जीवन में उतारा / अपने हर सच को सार्वजनिक कराया / यह साहस ही उसे जगत् में प्रतिष्ठा दिलाया / अपने जीवन के हर सच को दुनिया को बताया / फिर वह महात्मा गाँधी कहलाया / उसने बहुतों को वास्तव में नेता बनाया / सुभाषचन्द्र ने कहा बापू, तो टैगोर ने उसे कहा महात्मा / धन्य हो गयी तब-तब भारतवर्ष की आत्मा / हम पूर्वाग्रह में रह जाते / कभी अपने को कठघरे में नहीं कर पाते / वह महात्मा अपने द्वारा अपने को ही अनेक बार कठघरे में खड़ा कर गया / यही उसे दुनिया में महान् कर गया / तुम ज़रा अपने जीवन के एक सच को / केवल अपने एक सच को / दुनिया को ईमानदारी से बतलाना / कभी झूठ और 'फ्राड' मत करवाना / तब जाकर गाँधी के विरुद्ध बड़बड़ाना / बात तो बनेगी तब दिलचस्प / दो अक्टूबर पर हो यह संकल्प / सत्य-अहिंसा पथ पर चलने का / स्वभाषा और स्वदेशीयता अपनाने का / जवान और किसान दोनों बनने का / दोनों की जय करने का / दोनों थे अप्रतिम सहज / सहज होना होता है धर्म / हर कर्म रहा उनका स्वाभाविक / दोनों थे कर्मयोगी और धार्मिक / वाह्यभ्यन्तर व्यक्तित्व से दोनों महापुरुष स्वाभाविक / उनके प्रति यही है मेरी सच्ची स्वच्छाञ्जलि / और मानवता के पुजारी-द्वय को विनम्र-श्रद्धाञ्जलि।

शशिबिन्दुनारायण मिश्र

गज़लें

1

थके जब पर उड़ानों तक नहीं आते।
सफ़र यूँ आसमानों तक नहीं आते।
कभी जब तक यहाँ ढलता नहीं सूरज,
परिदे सब ठिकानों तक नहीं आते।
चुकाये ग़र चलाये तीर जो तुमने,
निशाने फिर निशानों तक नहीं आते।
पले दिल में हमारे फ़लसफ़े जितने,
सभी चलकर जुबानों तक नहीं आते।
पुराने क़ायदे उनके मुसलसल बन,
सभी बदले ज़मानों तक नहीं आते।

2-

सोचता जो रहा शराफ़त से।
बात रखता रहा रिवायत से।
वास्ता, दोस्ती, वफ़ा रखकर,
दूर रहता रहा अदावत से।
ठोकरें राह की बचाकर वो,
पाँव रखता रहा हिदायत से।
चाह उसको नहीं दुआओं की,
साथ जिसका रहा लियाक़त से।
जीत या हार हो खुशी से वो,
काम करता रहा सदाक़त से।

3

दोस्ती का सिलसिला।
वास्तों से जा मिला।
बेवज़ह रखना पड़ा,
आपसे शिकवा-गिला।
रास्ता ठहरा रहा,
रुक गया जब काफ़िला।
वो अकेला रह गया।
फूल जो छुप कर खिला।
पेड़ तो मुरझायेगा,
हो अगर जड़ से हिला।
साथ उसके सब हुए,
जो सही थी इतिला।

नवीन माथुर पंचोली

हिंदी के दोहे

हिंदी तो जीवंत है,खिलता हुआ प्रसून।
हिंदी बिन तो देश में,सभी ओर हो सून।।

हिंदी तो उत्कृष्ट है,हिंदी सदा विशिष्ट।
हिंदी तो समृद्ध है,हिंदी मानो इष्ट।।

हिंदी का गुणगान हो,हिंदी का यशगान।
हिंदी का अभिमान हो,हिंदी लगे महान।।

हिंदी का संगीत हो,हिंदी की हो जीत।
अधरों पर शोभित रहे,हिंदी का ही गीत।।

हिंदी में लालित्य है,हिंदी है गतिशील।
हिंदी देती चेतना, बनकर नेहिल झील।।

हिंदी भाषा नेहमय,हिंदी है उत्कर्ष।
हिंदी लिख-पढ़ कर मिले,हमको नित ही हर्ष।।

हिंदी गीता पाठ है,मानस का संकल्प।
नहीं दूसरा है कहीं,इसका आज विकल्प।।

हिंदी युग-अनुरूप है,हिंदी युग की रीति।
हिंदी देती है हमें,नित्य सुपावन नीति।।

प्रो (डॉ) शरद नारायण खरे

प्राचार्य

शासकीय जेएमसी महिला महाविद्यालय



हर आँसू पुरुषत्वहीन है

सपनों के रेतीलेपन को कतरा कतरा बहा न दे तो,
मानूँगा मेरी आँखों का हर आँसू पुरुषत्वहीन है।

प्रीत जगी तो मीत मिलेंगे भाव जगे तो गीत मिलेंगे।
हर उतार पर हर चढ़ाव पर सांसों के संगीत मिलेंगे।

लेकिन फिर भी भावपक्ष से शर्तों पर समझौता कर लूँ,
तो मानूँगा रचनाओं का शब्द शब्द अस्तित्वहीन है ॥1॥

मन रूठेगा तन रूठेगा, साँसों का बंधन रूठेगा।
कूचे गलियाँ रूठेंगी ही जब जब घर आँगन रूठेगा।

फिर भी मेरे पपड़ाए अधरों ने तुझको याद किया तो,
मानूँगा, व्यक्तित्व पक्ष का अंश अंश व्यक्तित्वहीन है ॥2॥

संदीप मिश्र 'सरस'

पराली

खेत में जलने लगी है
फिर पराली।

वायु गुणवत्ता प्रबंधन
शोक में है,
पास दिल्ली के प्रदूषण
थोक में है,
डर रही है डाक्टरी की
लघु मनाली।

है न धुँधका रोक पाती
नभ-पहाड़ी,
सह रही है कष्ट साँसों
की महाड़ी,
दे रही झाँसा समय को
नम दलाली।

हो गया पर्यावरण भी
बावला अब,
कोर्ट में पहुँचा हुआ है
मामला सब,
पंगु शासनकाल है यह
क्या? मवाली।

शिवानन्द सिंह 'सहयोगी'

वाराणसी



आंतरिक व बाह्य खलनायकों का सफाया करना ही वास्तविक विजयादशमी है

प्रत्येक वर्ष विजयादशमी अथवा दशहरे से पहले रावण के असंख्य पुतले बनाए जाते हैं। उन्हें आकर्षक रूप देने के लिए रंग-बिरंगे कागजों व अन्य सामग्री से सजाया जाता है तथा उनमें बारूद भरा जाता है। प्रश्न उठता है कि एक खलनायक के ही विशाल पुतले क्यों बनाए जाते हैं? क्यों रावण के पुतले बनाकर रामलीला के समापन पर उनका दहन किया जाता है? एक महत्त्वपूर्ण पर्व है विजयादशमी, जो असत्य पर सत्य की विजय का प्रतीक है। उसी प्रतीक को दोहराने के लिए, उससे प्रेरणा लेने के लिए हर वर्ष शारदीय नवरात्रों के दौरान आश्विन मास की प्रतिपदा से लेकर दसवीं तिथि अर्थात् दशहरे तक जगह-जगह रामलीलाओं का मंचन और अंतिम दिन रावण का दहन किया जाता है।

रावण असत्य अथवा बुराई का प्रतीक है और रावणदहन प्रतीक है बुराई की समाप्ति का। पर क्या इस प्रतीकात्मकता से हम कोई संदेश ग्रहण कर रहे हैं? हम हर साल रावण के पुतलों अथवा बाह्य रावणों का तो दहन कर देते हैं, उन्हें जला डालते हैं, लेकिन हमें अपने आंतरिक रावण के वध की सुध क्यों नहीं रहती? राम ने इस दिन आततायी रावण का वध किया था। कौन था वह रावण और क्या तात्पर्य

है रावण के वध से? रावण वास्तव में बुराई का प्रतीक है। आज के संदर्भ में देखें तो रावण अनीति, अनाचार, आतंक, अंधविश्वास, अशिक्षा भ्रष्टाचार, शोषण तथा अन्य बुराइयों का प्रतीक है। यही कारण है कि हम प्रतिवर्ष रावण का पुतला ही नहीं फूँकते, अपितु समय-समय पर मंहगाई, भ्रष्टाचार, आतंकवाद आदि के पुतले भी दहन करते रहते हैं।

रावणदहन का अर्थ है बुराइयों पर विजय अथवा उनकी समाप्ति का संकल्प। अब इन बुराइयों का वाहक व्यक्ति भी हो सकता है और समाज अथवा व्यवस्था भी। रावण का एक नाम है दशानन या दशमुख अर्थात् दस मुखों वाला। किसी आदमी के तो दस सिर हो नहीं सकते, अतः ये भी एक प्रतीकात्मक शब्द ही है, जो रावण के वास्तविक स्वरूप या अर्थ को प्रकट करता है। दशानन का शाब्दिक अर्थ है दस मुखों वाला। अब दस मुख हैं तो वह दसों मुखों से भोग भी करेगा। व्यक्ति की पाँच ज्ञानेंद्रियाँ और पाँच कर्मेन्द्रियाँ हैं। इन्हीं दसों इंद्रियों से सदैव निरंकुश भोग करने वाला ही तो वास्तव में दसानन अथवा रावण है। क्या असीमित इच्छाओं और निरंकुश भोग-विलास के कारण आज हम स्वयं रावण अथवा खलनायक नहीं



बन चुके हैं?

आज नायकों की पूजा नहीं खलनायकों की पूजा की प्रधानता है। जीवन के हर क्षेत्र में खलनायकत्व हावी है। समाज में हर जगह खलनायकों की भरमार है। आज देश में प्रजातंत्र मज़ाक बन कर रह गया है। राजनीति जनसेवा या समाजसेवा नहीं व्यवसाय बन गई है। अधितर लोगों के लिए चुनाव जीतना एक लाभकारी प्रोजेक्ट की तरह होता है। राजनीति में बाहुबलियों की मनमानी चलती है। रावण रूपी राजनेताओं के सामने गिने-चुने राम रूपी ईमानदार व्यक्ति उनकी क्रदमबोसी करने को विवश हैं। आम आदमी की बेबसी और विवशता के तो कहने ही क्या हैं। कहने को तो प्रजातंत्र है, लेकिन वास्तव में राजतंत्र से भी बुरी स्थिति है। चारों तरफ लूट-खसोट मची हुई है। शिक्षण संस्थाओं में प्रवेश के नाम पर अथवा पशुओं के चारे के नाम पर तथाकथित ग्वालेनुमा राजनेता करोड़ों डकार जाते हैं।

दस-बीस हजार करोड़ रुपयों का घोटाला सामान्य बात हो गई है। इन भ्रष्टाचारी राजनेताओं के पुतले जलाओ, तो भी इन्हें लज्जा नहीं आती। सरकार की ग़लत नीतियों के विरुद्ध आंदोलन करना भी बेकार है, क्योंकि किसी भी आंदोलन से सरकार के कानों पर जूँ तक नहीं रेंगती। सत्ताधारी पार्टी ही नहीं विपक्षी पार्टियाँ भी देशहित या जनहित नहीं, अपनी पार्टी या अपने हितों को साधने में लगी रहती हैं। यदि कोई तथाकथित जनप्रतिनिधि कानून की गिरफ्त में आकर कुछ दिनों के लिए जेलयात्रा पर चला भी जाता है, तो अपने स्थान पर अपनी पत्नी या पुत्र को गद्दी पर आसीन कर जाता है। और हमारे पास नपुंसकों की तरह उसे स्वीकार करने के अतिरिक्त कोई अन्य चारा नहीं। लोकतंत्र का इससे बड़ा मज़ाक और रावणराज क्या होगा? राजनेताओं के चरित्र को देखकर दुष्यंत कुमार का ये शेर याद आता है:

इस सिरे से उस सिरे तक सब शरीके-जुर्म हैं,

आदमी या तो ज़मानत पर रिहा है या फ़रार।

राजनीति में ही नहीं ब्यूरोक्रेसी में भी भ्रष्ट अधिकारियों व कर्मचारियों का बोलबाला है। समाज में सर्वत्र शोषण और उत्पीड़न का तांडव व्याप्त है। कहाँ से आया ये खलनायकत्व का दौरदौरा? चंद्रकांत देवताले की कविता 'यमराज की दिशा' याद आ रही है जिसमें कहा गया है कि पहले दक्षिण दिशा को यमराज की दिशा माना जाता था और दक्षिण दिशा में पैर करके सोना यमराज को नाराज कर मौत को बुलाना था, पर आज हर दिशा में यमराज मौजूद है और हम किधर भी पैर करके सोएँ सुरक्षित नहीं हैं। पग-पग पर जीवन के हर क्षेत्र में आज यमराज रूपी रावण अथवा खलनायक मौजूद हैं।

राजनीति और ब्यूरोक्रेसी में ही नहीं समाज में हमारे बीच भी

खलनायकों की कमी नहीं। चोरी-डकैती, लूट-खसोट, हिंसा, बलात्कार, अपहरण जैसी घटनाएँ आम हो गई हैं। जहाँ देखो अव्यवस्था और अराजकता का साम्राज्य व्याप्त है। रक्षक भक्षक बने हुए हैं और प्रशासन को अपनी जेबें भरने से ही फुर्सत नहीं। धर्म और अध्यात्म के नाम पर ठगी और अंधविश्वास को बढ़ावा देना तो देखा-सुना था, लेकिन आज तो हद ही हो गई है। अपरिग्रह का संदेश देने वाले धर्मगुरु अरबों-खरबों में खेल रहे हैं। आम आदमी को जहाँ सर छुपाने के लिए टूटी-फूटी झोंपड़ी भी नसीब नहीं होती, वहीं ये धर्मगुरु व योगगुरु देश की लाखों हैक्टेयर ज़मीन पर वैध-अवैध क़ब्ज़ा जमाए बैठे हैं।

हर तीसरा धर्मगुरु व्याभिचार व भ्रष्टाचार में ही नहीं, शोषण और बलात्कार जैसे जघन्य कुकृत्यों तक में लिप्त है। शिक्षा जगत माफिया की मजबूत गिरफ्त में है। ये सब उसी रावण के प्रतीक और प्रतिनिधि हैं, जिनका मर्यादा पुरुषोत्तम राम ने सफाया किया था। आज द्वापरकालीन रावण के पुतलों का दहन करने की बजाय ज़रूरत है आज के वास्तविक रावणों का सफाया करने की। जिस प्रकार हमारे बाह्य जगत में विभिन्न खलनायकों का बोलबाला है, उसी प्रकार हमारे आंतरिक जगत में भी इन खलनायकों की कमी नहीं और ये आंतरिक खलनायक हैं हमारे अपने नकारात्मक विचार या भावधारा। जब तक हम अपनी आंतरिक नकारात्मकता का समापन नहीं करते, बाहरी नकारात्मकता का समापन करना असंभव है इसलिए हमें अपने आंतरिक रावण को समाप्त करने को प्राथमिकता देनी होगी। इसके अभाव में विजयादशमी मनाने अथवा रावणदहन का कोई औचित्य दिखलाई नहीं पड़ता।

सीताराम गुप्ता, ए.डी. 106 सी., पीतमपुरा, दिल्ली - 110034

मोबा0 नं0 9555622323 Email : srgupta54@yahoo.co.in

लेख में व्यक्त विचार लेखक के हैं उनसे संपादक मण्डल

या संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना

आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद की स्थिति में

न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा। प्रकाशक तथा संपादक :

सुधेन्दु ओझा, 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर, दिल्ली-

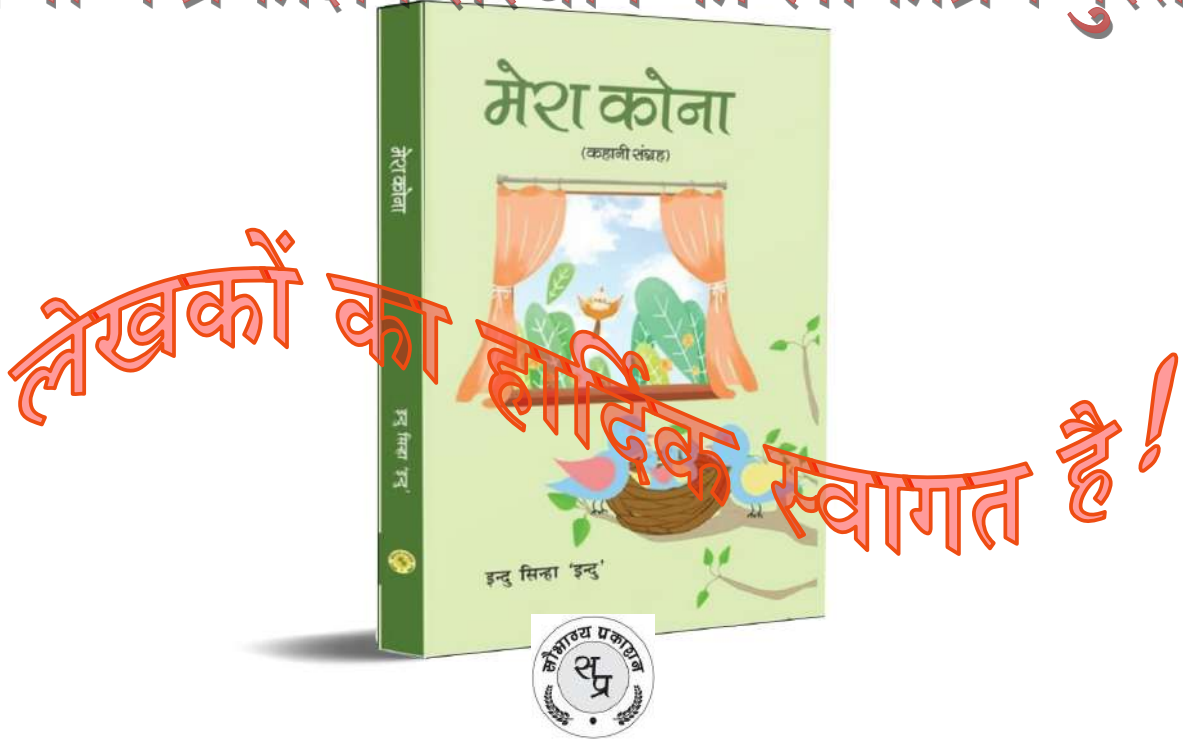
110092



अक्तूबर-2024



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें



Book is Available on Flipkart

Book Name : मेरा कोना (कहानी संग्रह)

Author : इन्दु सिन्हा 'इन्दु'

ISBN : 978-81-958985-1-0

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250/-

Genre : Prose /गद्य

Soubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in



अक्तूबर-2024



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें



Book Name : मौत और रहस्य (उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-964179-9-4

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 208

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)



Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092
Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

संपर्क भाषा भारती, अक्तूबर—2024

तेरह



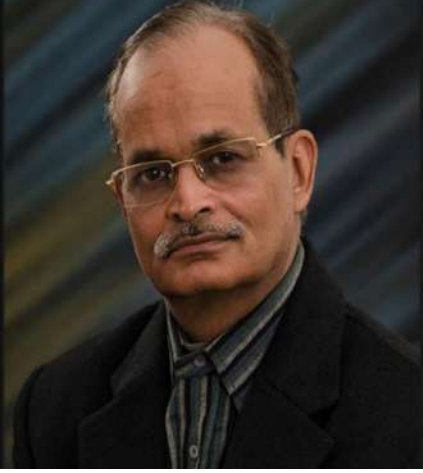
गाँधी जी क्या चाहते थे? (डा केवलकृष्ण पाठक)

गाँधी जी क्या यह चाहते थे?
भारत को स्वतंत्र करा कर
हिन्दू मुस्लिम भेद बनाकर
एक दूसरे का जीवन लें
अपनी धरती माँ को बाटें
या निर्बल आशय जनों का
यौवन लूटें, बच्चे काटें
कितने दुःख की बात यही है
मानव ने मानव का केवल
इसीलिए था जीवन लूटा
मंदिर मस्जिद घर ईश्वर के
किया था इन में भेद अनूठा
ये पदलोलुप भँवरे काळा
जनता के बनते रखवाले
उन्होंने ही सारे भारत का
ऐसा सुंदर नाश किया है
जो अबतक भी संभल न पाया
गाँधी के स्वराज्य का देखो

क्या गाँधी जी यह कहते थे
हर भाषा इक प्रान्त बना दो
हिन्दू- सिख- ईसाई सारे
भारत के टुकड़े करवा दो
गलत बात मनवाने हेतु
असहयोग आंदोलन कर दो
इतने पर भी सफल ना हो तो
मरण व्रत का ढोंग ही कर लो
छात्रों को ऐसा सिखलाओ
रेल बसें सरकारी वास्तु
सभी को मिलकर आग लगाओ
क्रोध की आग में ऐसे भड़को
हानि अपनी आप ही करलो
इसीलिए सब जेल में जाओ
क्योंकि कल को वोट मांगते

जेल काटी प्रसंग उठाओ
या जनता को लोभ लाभ दे
जनता पर अधिकार जमाओ
निर्धन का फिर शोषण करके
महलों की शोभा बन जाओ
सोचके मन को दुःख होता है
देश का कितना किया सफाया
गाँधी के स्वराज्य का देखो
कितना अच्छा व्यंग्य बनाया

गाँधी जी तो यह चाहते थे
भारत इक संपन्न देश हो
सोने की चिडिया हो जाये
छोटे-बड़े सभी एक हों
इसको उन्नत देश बनायें
अन्य देश इसको ना लूटें
हम में इतना बल हो जाये
सच्चे इतने बब्बन भारती
सच्चाई पर जान लुटाएं
और अहिंसा को अपना कर
सारे ही निर्भय हो जाएँ
सुशिक्षित हों सभी भारती
bure-भले को सभी जान लें
इतनी सच्चाई हो मन में
अपनी गलती खुद ही मान लें
छात्र सभी हों आज्ञाकारी
गुरु शिष्य को सुशिक्षा दें
पास पड़ोस में रहने वालों
की पीड़ा को पूर्णता हर लें
युवा देश के अभी समय है
गाँधी के सपनों का भारत
अब भी तुमको यह कहता है
जागो मिलकर मुझे सम्भालो
आजादी कार्य: जानकर
इसका बीड़ा तुम्ही उठा लो



सूर्य प्रकाश मिश्र

बी 23/42 ए के
बसन्त कटरा (गाँधी चौक)
खोजवा, दुर्गाकुण्ड
वाराणसी 221001
मोबाइल 09839888743

पाला

चल रही गाँव में राम कथा
रंग जमा मुफ्त की बिजली का
बलिहारी कँटिये की क्षमता
भावों का सागर उमड़ रहा
हर कोई लगा रहा गोता
दशरथ के मरने की पीड़ा
महसूस कर रहा हर श्रोता
मिल गई कुसंगति बहक गई
कैकेयी जैसी पतिव्रता
उपकार से बड़ा धर्म नहीं
ईर्ष्या में छिपी बुराई है
जीवन की दिशा बदल देता
सत्संग बड़ा सुखदायी है

है त्याग तपस्या के समान
सच में बसती है सुन्दरता

पंचायत की हर ऊँच- नीच
ये सारा गाँव ढो रहा है
लेकिन इस पर सब सहमत हैं
ये अच्छा काम हो रहा है

पाला बदल गये मुखिया जी
ये बात किसी को नहीं पता

मदार

मुखिया गुडहल बुधुवा हुआ मदार
हर तरफ हरा भरा है

सारा पानी खाद अकेले सोख ले गये
मुखिया जी में जमकर कल्ले फूट रहे हैं
इस विकास की आँधी ने सब बदल दिया है
गाँव गाँव फुलझड़ी पटाखे छूट रहे हैं

अखबारों पर काबिज हुए सियार
हर तरफ हरा भरा है

दुश्मन दोस्त सभी मुद्दों पर एक हो गये
पंचायत किस्मत पर रोये चली जा रही
क्या करना है जीत हार के गुणा गणित से
मड़ई बेचारी तो फिर से छली जा रही

फिर पायेगी चुनी हुई सरकार
हर तरफ हरा भरा है

नाम बड़ा था जिन पेड़ों का सिकुड़ रहे हैं
बौनेपन का रोग लग रहा आम हो गया
खेती की पड़ताल चल रही जोर शोर से
सारा मौसम बुधुवा के ही नाम हो गया

झूम रहे मस्ती में खर पतवार
हर तरफ हरा भरा है



दीप

कभी न तम से हारे दीपा
फैलाते उजियारे दीपा

घर कर देते आलोकित
जल आँगन - चौबारे दीपा

दीवाली में भूपर ज्यों
आये उतर सितारे दीपा

डर प्रतिकूल हवाओं का
काँप रहे बेचारे दीपा

निज अस्तित्व बचाना है
लगा रहे हैं नारे दीपा

स्नेह और बाती के संग
जीवन - मूल्य सँवारे दीपा

निर्धन की भी कुटिया में
ससम्मान पधारें दीपा

रत हैं राष्ट्र - साधना में
रूप तपस्वी धारे दीपा

-गौरीशंकर वैश्य विनम्र
117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022 दूरभाष 09956087585



छंदों से खुशहाल करते हो.....

बहुत बेहूदा सवाल करते हो
बेमतलब बवाल करते हो

बनो खिलाड़ी देखो खेल
क्यूं खेल बिगाड़ करते हो

अलट, पलट, सलट सब जायज है
राजनीति है भैया, कमाल करते हो

दाग इंगित करते हो दूसरों के
और अपने धब्बे बहाल करते हो

समय सबक देगा हर दुर्जन को
ठहरो क्यों मलाल करते हो

अधखिले, शुष्क, मुरझाए चेहरों को
गीतों, छंदों से खुशहाल करते हो

डॉ अखिलेश शर्मा
23, अंबिकापुरी मेन 60फीट रोड, इन्दौर 452005



अक्तूबर-2024



लेखकों का हार्दिक स्वागत है!



Book is Available on Flipkart

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : गंदी औरतें (सामाजिक उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-9-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 188

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in



लेखन, मात्र कमाई का जरिया नहीं

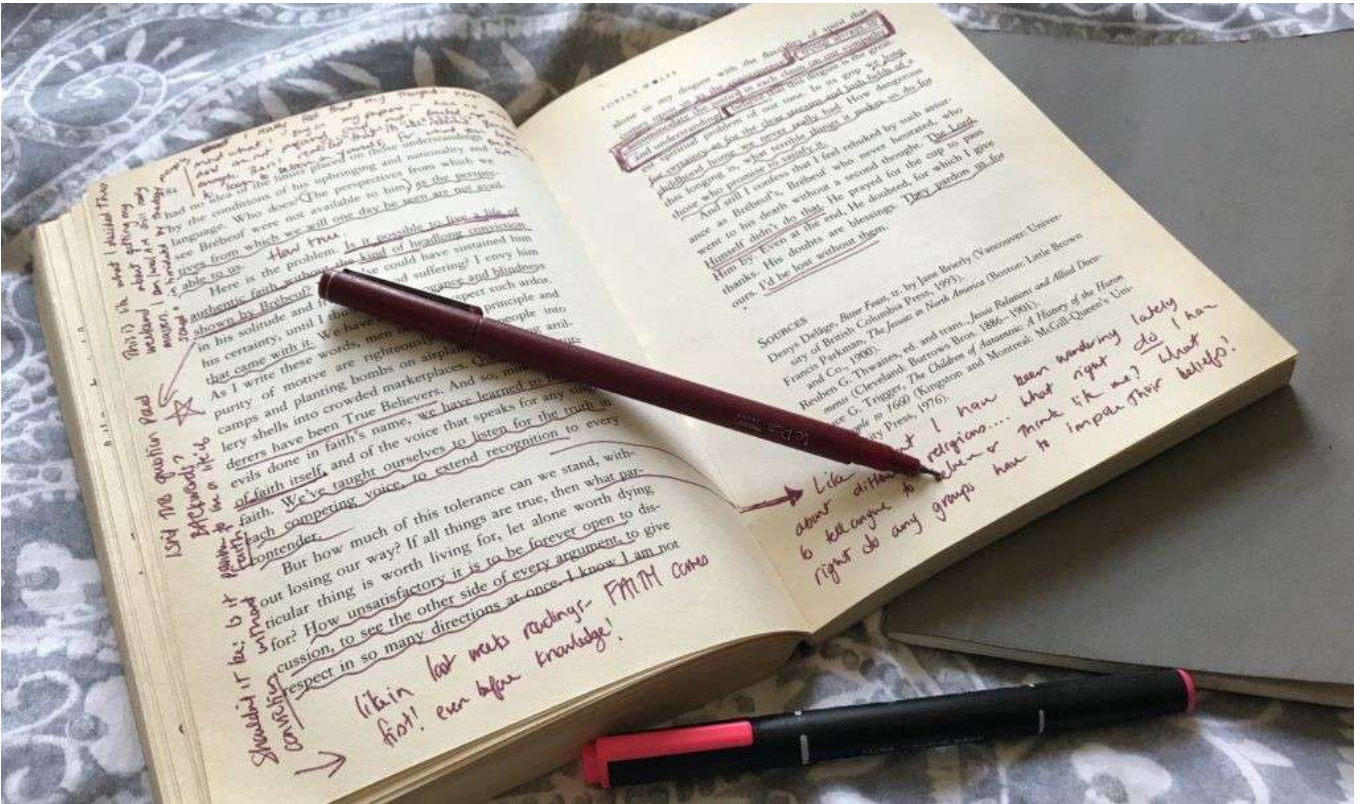
अब जब नोटफ्री आंदोलन के जरिये इस विषय पर जोरदार चर्चा छिड़ चुकी है और आंदोलन के समर्थकों द्वारा बहुत आक्रामक और उपहासपूर्ण स्वर में इस विषय में तर्क दिए जा रहे हैं तो इसके कुछ और केंद्रीय आयामों पर बात कर लेना चाहिए। यहाँ पर सबसे बुनियादी प्रश्न यह है कि लेखक क्यों लिखता है? क्या वह आजीविका के लिए लिखता है? मान लीजिये कोई व्यक्ति आजीविका के लिए कोई कार्य करता है। वह एक दुकान लगाता है। उससे अगर कोई भलामानुष पूछे कि यह कार्य क्यों करते हो, तिस पर वह जवाब देगा- रोजी-रोटी के लिए। अगर उससे कहा जाए कि तुम्हें जितनी आमदनी होती है, वह मुझसे ले लो, लेकिन यह दुकान मत लगाओ- तब वह क्या करेगा? सम्भव है वह पैसा ले ले और दुकान ना लगाए। किंतु अगर लेखक से कहा जाए कि फलां पुस्तक के प्रकाशन से तुम्हें जितनी आमदनी होगी, वह पैसा मुझसे ले लो किंतु पुस्तक मत लिखो- तब क्या लेखक पुस्तक नहीं लिखेगा? अगर वह पुस्तक पैसों के लिए

ही लिखी जा रही है, तो सम्भव है वो पैसा ले ले और एक अरुचिकर कार्य करने से अपनी जान छुड़ाए। पर उसके बाद यह भी सम्भव है कि वह अपने समय और परिश्रम का उपयोग वह लिखने में करे, जो वह वास्तव में लिखना चाहता है। इस दृष्टान्त से हमें यह भेद दिखलाई देता है कि लेखन और आजीविका में कार्य-कारण का

सीधा सम्बंध नहीं है, भले लेखन से आजीविका मिल सकती हो। किंतु लेखन की तुलना आजीविका के दूसरे साधनों से इसलिए नहीं की जा सकती, क्योंकि जहाँ वो दूसरे साधन विशुद्ध रूप से आजीविका के लिए होते हैं, वहीं लेखन किसी और वस्तु के लिए भी होता है।

मूलतः मकसद यह स्पष्ट करना है कि लेखक का प्राथमिक दायित्व क्या है। लेखक का प्राथमिक दायित्व है लिखना और अपने लिखे को पाठकों तक पहुँचाना। एक बार यह दायित्व पूरा हो जाए, उसके बाद उसे अपने लेखन से जो धन, मान-सम्मान, सुख-सुविधा, उपहार





आदि मिलते हैं, वो अतिरिक्त है, बोनस है। किंतु लेखक जब कोरे कागज़ का सामना करता है तब उसके सामने यह प्रश्न नहीं होता कि लिखने से कितना धन-मान मिलेगा, बशर्ते वो बाज़ारू लेखक ना हो। उसके सामने एक ही संघर्ष होता है और वो यह कि जो मेरे भीतर है- विचार, कल्पना या कहानी- उसे कैसे कागज़ पर उतारूँ कि उसमें मेरा सत्य भी रूपायित हो जाए और पाठक तक भी वह बात किसी ना किसी स्तर पर सम्प्रेषित हो जाए।

यह कल्पना करना ही कठिन है कि आज से बीस साल पहले तक लेखक के लिए प्रकाशन कितना दुष्कर था। वास्तव में इंटरनेट के उदय से पहले लेखन का इतिहास अप्रकाशित पाण्डुलिपियों के ज़खीरे से भरा हुआ है। आज लिखने की सुविधा हर किसी को प्राप्त है- पुस्तक ना सही तो पोस्ट ही सही, किसी पोस्ट पर कमेंट ही सही- किंतु आज से बीस साल पहले प्रकाशित लेखन एक लगभग एक्सक्लूसिव परिघटना थी। तब लेखन का सबसे प्रचलित माध्यम चिट्ठियाँ ही थीं और लोग बड़े मनोयोग से पत्र लिखते थे। कोई लेख, कविता या कहानी लिखी तो उसे किसी पत्रिका या समाचार-पत्र को भेजते थे, उसे प्रकाशित करने का निर्णय सम्पादक के पास सुरक्षित रहता था। कोई पुस्तक लिखी तो उसकी पाण्डुलिपि भेजते थे, जिसके प्रकाशन का निर्णय प्रकाशक के पास सुरक्षित था। सम्पादक और प्रकाशक का वर्चस्व था, लगभग एकाधिकार था- इस प्रक्रिया में बहुत कम चीज़ें ही प्रकाशित हो पाती थीं। अखबार में पाठकों के पत्र स्तम्भ में प्रकाशित

होना भी तब बड़ी बात होती थी। आज जब सोशल मीडिया ने लेखक के लिए प्रकाशन सर्वसुलभ बना दिया है, उसे अपने लिखे पर तत्काल पाठक मिलते हैं और पाठकों की बड़ी संख्या उसकी पुस्तकों के प्रकाशन का पथ-प्रशस्त करती है- तब लेखक के अस्तित्व का प्राथमिक प्रयोजन- यानी अच्छे से अच्छा लिखना और अधिक से अधिक पाठकों तक पहुँचना- कहीं सरलता से सध जा रहा है। इसके लिए उसके मन में कृतज्ञता का भाव होना चाहिए। तब लेखक का यह कहना कि इसके लिए मुझको पैसा चाहिए, इसीलिए एक अर्धसत्य है क्योंकि इसमें यहाँ पर वह इस बात को छुपा ले जा रहा है कि उसके लिए प्रकाशित होना और पाठकों तक पहुँचना कितना बड़ा सौभाग्य है। और अगर यह ना होता तो वह अपनी रचना को लिए भीतर ही भीतर घुटता रहता।

लेखन की प्रकृति ऐसी है कि उसे दूसरी लोकप्रिय कलाओं- जैसे सिनेमा, रंगमंच, नृत्य या संगीत- की तुलना में कम प्रसार मिलेगा। शेखर एक जीवनी पढ़ने और सराहने के लिए एक विशेष प्रकार की शैक्षिक पृष्ठभूमि की आवश्यकता है, जो कोई नाच-तमाशा देखने, गाने -बजाने का आनंद लेने के लिए ज़रूरी नहीं। एक चलताऊ उपन्यास तक पाठक को खींचकर लाना भी एक सामान्य दर्शक को सिनेमाघर में ले जाने की तुलना में कहीं अधिक दुष्कर है। एक लेखक अपनी कला से कभी भी उतना सफल और धनाढ्य नहीं हो सकता, जितना कि एक फ़िल्म अभिनेता, खिलाड़ी, संगीतकार या नर्तक हो सकता है, बशर्ते



देशकाल-परिस्थितियां उसके पक्ष में हों।

नोटफ्री आंदोलन के कर्णधार इन तमाम तर्कों और तथ्यों को नज़रंदाज़ कर देते हैं। इतना ही नहीं, वो यह कहकर परिप्रेक्ष्यों को विकृत भी करते हैं कि लेखक जब किसी कार्यक्रम में जा रहा है तो वो अपना समय दे रहा है, जिसकी कीमत उसे मिलना चाहिए। जैसे कि जो आयोजक वह कार्यक्रम कर रहा है, उसके समय का कोई मूल्य नहीं है, या वह निठल्ला है? लेखक यह जतलाता है कि आयोजक को उसकी ज़रूरत है, पर वो यह छुपा जाता है कि उसे भी आयोजक की उतनी ही ज़रूरत है! उसे भी मंच चाहिए, विज़िबिलिटी चाहिए, नए पाठक और नए प्रशंसक चाहिए, उसे भी महत्व चाहिए, जो उस कार्यक्रम से उसे मिल रहा है। यह कार्यालय में काम करने जैसा नीरस नहीं है, जो लेखक यह तर्क देता है कि वह कार्यालय से छुट्टी लेकर आ रहा है, इसलिए उसे इसके ऐवज़ में पैसा चाहिए। लेखक को वैसे कार्यक्रमों में जो मान-सम्मान, महत्व-प्रचार मिलता है, उसे हासिल करना आज लाखों का सपना है (और जब लेखक युवा था और अखबारों में अपनी कविताएं प्रकाशित करने भेजता था और उनके छपने की प्रतीक्षा करता था, तब यह उसका भी सपना हुआ करता था), लेकिन इस सपने को जीने का अवसर जब उसे मिलता है, तो लेखक यह जतलाता है मानो इसका कोई मूल्य ही ना हो, जैसे इसके लिए उसे स्वयं कुछ ना चुकाना हो, उल्टे उसे इसके बदले में पैसा चाहिए?

जब लेखक यह कहता है कि मैं पैसा लिए बिना किसी कार्यक्रम में

नहीं जाऊंगा तो वह मन ही मन यह रूपरेखा भी बनाता ही होगा कि कितना पैसा? वह अपना एक रेट तय करता होगा। एक बार यह रेट तय होते ही यह निश्चित हो जाता होगा कि कुछ ही आयोजक उसे अफ़ोर्ड कर सकेंगे। किंतु ये जो आयोजक उसे अफ़ोर्ड करेंगे, वो लेखक में निवेश की गई राशि का रिटर्न कैसे पाएंगे (क्योंकि कोई भी लन्च फ्री में नहीं मिलता, यह नोटफ्री आंदोलन के कर्णधारों का प्रिय वाक्य है)। क्या कोई पूँजीपति अपनी जेब से पैसा लगाकर लेखक को एक दिन की वह सितारा-हैसियत दिलाएगा, या वह किन्हीं प्रायोजकों की मदद लेगा? ये प्रायोजक तब उस कार्यक्रम को कैसे प्रभावित करेंगे? क्या लेखक कविता या कहानी-पाठ के बीच में रुककर किसी प्रायोजक के उत्पाद (गुटखा या जूते?) का विज्ञापन भी करेगा? क्योंकि जब पैसे को ही सबकुछ मान लिया तो शर्म-लिहाज़ कैसी? जो आयोजक लन्च दे रहा है, होटल में रूम बुक कर रहा है, हवाई जहाज़ का टिकट दे रहा है, प्रोग्राम के लिए ऑडिटोरियम बुक कर रहा है और आपको लिफ़ाफ़ा भी दे रहा है- वो खुद क्या यह सब फ्री में करेगा, क्या नोटफ्री में उसका स्वयं का विश्वास नहीं होगा?

मैं देख रहा हूँ कि नोटफ्री आंदोलन युवाओं में विशेषकर लोकप्रिय हो रहा है, क्योंकि ये पीढ़ी ही येन-केन-प्रकारेण सफलता की भाषा में सोचती है। किंतु दौर बदलने से दस्तूर नहीं बदल जाता। लेखक क्यों लिखता है, किसके लिए लिखता है, लेखक लेखन से क्या चाहता है- ये बुनियादी प्रश्न अपनी जगह पर तब भी क्रायम रहते हैं- इन्हें कोई बदल नहीं सकता।

मेरी पुस्तक बिके और मुझे उसका पैसा मिले- यह एक बात है- और मेरी पुस्तक कितनी बिकी, उससे मुझे कितना पैसा मिला, यही मैं रात-दिन सोचता रहूँ और पैसा कमाने के लिए ही लिखूँ- ये एक नितांत ही दूसरी बात है।

कोई आयोजक मुझे बुलाए, मान-सम्मान-मंच प्रदान करे और चलते-चलते अपनी सामर्थ्य से मुझे कुछ पैसा भी दे दे- यह एक बात है- किंतु मुझे पैसा दिया जाएगा तो ही मैं आऊँगा, यह भी नहीं देखूँगा कि मुझे बुलाने वाला कौन है, उसकी क्या क्षमता है, उसकी क्या प्रतिष्ठा है, उसके पास कितने उच्चकोटि के निष्ठावान श्रोता हैं- यह एक दूसरी ही बात है। और इन दोनों बातों में ज़मीन-आसमान, आकाश-पाताल का भेद है!

जिस लेखक में इन दोनों में अंतर करने का विवेक नहीं, वो समाज को क्या मूल्य देगा? उसको तब कोई दुकान ही लगा लेना चाहिए, लेखन वगैरा उसके बस का रोग नहीं।

प्रफुल्ल सिंह

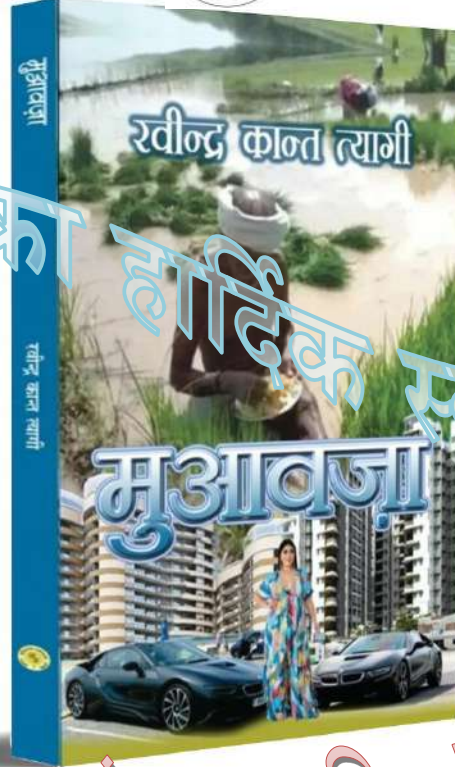
शोध सदस्य, लखनऊ, उत्तर प्रदेश, 6392189466



अक्टूबर-2024



लेखकों का हार्दिक स्वागत है!



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book Name : मुआवजा

Author : रवीन्द्र कान्त त्यागी

ISBN : 978-81-958985-2-7

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 160

Price : 250

Genre : Prose /गद्य

मुआवजा का कथालोक देश की राजधानी दिल्ली के समीप बसे ग्रामीण इलाके से संबंधित है किन्तु इस कथालोक का विस्तार कर के देश के इसे किसी भी उस ग्रामीण क्षेत्र के ऊपर लागू किया जा सकता है जो विस्तृत होते हुए शहर के समीप हो या फिर जहां विकास की आंधी पहुँच रही हो।

जरूरी नहीं कि ग्रामीण अंचल शहर में विलीन हो कर शहर की संस्कृति या विकृति के अनुरूप हो जाएँ।

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

संपर्क भाषा भारती, अक्टूबर—2024

इक्कीस



लाहौल स्पीति जनपद की संस्कृति के परिचायक त्यौहार एवं मेले

हिमालय भारतीय संस्कृति, धर्मशास्त्रों तथा पुराणों का जनक है। विश्व साहित्य के पुरातन ग्रन्थ वेद भी इसी भूभाग में लिखे गये हैं। स्कंद पुराण में कहा गया है कि "वह मनुष्य जो हिमभूमि के बारे में चिंतन करता है, हिमालय का स्मरण करता है भले ही वह उसे देखें या न देखें, उससे भी बड़ा है जो काशी में पूजा अर्चना करता रहता है। वे मनुष्य जो मृत्यु रूपी शैया पर पड़कर हिम के बारे में चिंतन-मनन करते हैं, वे शीघ्र ही पापों से मुक्ति पा लेते हैं। देवताओं के सैंकड़ों युगों में भी मैं उस हिमाचल (हिमालय) की महिमा का बखान आपसे नहीं कर सकता जिसमें भगवान शिव का वास था और मां गंगा भगवान विष्णु के चरणों से कमल-फूल की पतली डण्डल की तरह निकलती है।" हिमाचल हिमालय का पर्याय है। पौराणिक संदर्भ में यदि कहें तो जिस पर्वतराज हिमालय के वास पर पार्वती का आविर्भाव हुआ, वह क्षेत्र आज हिमाचल है। हिमालय पुत्री कुल्लू जनपद के मणिकर्ण में सरिता बनकर प्रवाहित होती है। भगवान श्री कृष्ण ने स्वयं भगवद्गीता में कहा है कि " पर्वतों में हिमालय मैं ही हूं।" हिमालय का वर्णन करना कितना सार्थक है, इस बात का निर्णय करना सम्भव नहीं है, परन्तु

यदि व्यावहारिक दृष्टि से देखें तो इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि हिमालय वास्तव में भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से रहस्यमय पर्वत है और हिमाचल प्रान्त इसका एक धार्मिक भूखण्ड है।

जनजातीय जनपद लाहौल स्पीति हिमाचल प्रदेश का एक अनूठा व अद्वितीय भू-भाग है। वर्ष भर हिमाच्छादित गगनचुंबी शिखरों, गहरी घाटियों, सीमित कृषि क्षेत्रों, गहरी घाटियों, तीव्रगामिनी नदियों तथा कठोर जलवायु का क्षेत्र है। किसी भी क्षेत्र से प्रवेश करें, यहां पहुंचने के लिए कोई न कोई दर्रा अवश्य लांघना पड़ता है। यदि कुल्लू जनपद की ओर से प्रवेश करें तो रोहतांग दर्रा लांघना पड़ता है। लद्दाख की तरफ से प्रवेश करना हो तो बारालाचा दर्रा, स्पीति से प्रवेश करें तो कुंजुम और चंबा की ओर से प्रवेश करें तो कुगती दर्रा लांघना पड़ता है। सर्द ऋतु में भारी हिमपात के चलते यह क्षेत्र शेष विश्व से कट जाता है दूसरी ओर ग्रीष्म ऋतु में यह क्षेत्र सैलानियों और साहसिक गतिविधियों के लिए बहुत ही प्रसिद्ध है। हर कोई यहां आने के लिए उत्सुक रहता है लेकिन यह सफर तमाम चुनौतियों से परिपूर्ण होता है। वर्तमान में रोहतांग दर्रे के निम्न भू-भाग में एक सुरंग निर्मित हो चुकी है जो कि विश्व की सबसे ऊंची सुरंग है, इसके निर्मित हो जाने से अब



यह क्षेत्र सैलानियों के लिए हर मौसम में आकर्षण का केंद्र बना रहेगा। लाहौल स्पीति जनपद चिरकाल से ही अपनी समृद्ध संस्कृति को संरक्षित किये हुए हैं। यहां की संस्कृति ही लाहौल स्पीति की अस्मिता है। सभ्यता के परिवर्तित होते प्रतिमानों के कारण प्राचीन विचारधाराएं लुप्त हो जाती है लेकिन लाहौल स्पीति में ऐसा नहीं हो पाया। यहां प्राचीन परम्पराएं अपने स्वरूप को अक्षुण्ण रखने में सफल हुई है। इसका श्रेय यहां के लोक देवताओं और यहां के आम जनमानस को जाता है। लाहौल स्पीति के त्यौहार - उत्सव, यज्ञ - अनुष्ठानों, व्रत-उपवासों, लोक नृत्य एवं लोक गीतों का अपना विशेष महत्व है।

यहां पर हिन्दू और बौद्ध संस्कृति का मणिकंचन संयोग दिखाई देता है। भगवान त्रिलोकीनाथ जी के मन्दिर का कारदार अर्थात मुखिया त्रिलोकी गांव का राणा होता है और मन्दिर का पुजारी एक बौद्ध लामा होता है। करुणानिधान भगवान बुद्ध का यह मन्दिर जिसका प्रथम वाक्य ही " अहिंसा परमो धर्मः " से आरम्भ होता है। यहां हर साल ग्रीष्म ऋतु में 'पोरी' मेला लगता है जो विश्व प्रसिद्ध है। पोरी के अलावा लोसर, खोगल, शेचुंग, तम्बा-रिगी, छोदपा, लआहडआ-खोगला, छेशु, छम-गुई-थोर और गुतोर इत्यादि यहां के प्रमुख उत्सव एवं त्यौहार है। लाहौल स्पीति की समृद्ध व जीवन्त संस्कृति इन त्यौहारों एवं उत्सवों में दिखाई देती है। आज के भौतिक युग में और पाश्चात्य संस्कृति ने हमारे जीवन को प्रभावित किया है। हम पश्चिमी संस्कृति का अनुसरण कर अपने संस्कारों और संस्कृति को विस्मृत

कर रहे हैं। हिमाचल प्रदेश भी इससे अछूता नहीं है लेकिन हमारे जनजातीय क्षेत्रों की एक विशेषता है जो प्रदेश की संस्कृति से इसे भिन्न बनाती है। यहां के लोग अभी भी अपनी संस्कृति को सहेजे और संरक्षित किये हुए हैं। आज भी इन त्यौहारों एवं उत्सवों में अपनी पारम्परिक वेशभूषा धारण करते हैं और वैसे ही पारम्परिक व्यंजनों को ही बनाते हैं। यहां की संस्कृति कितनी महान् है तो इसका जीवन्त उदाहरण इन त्यौहारों एवं मेलों में देखने को मिलता है। ये मेले एवं त्यौहार ही यहां की संस्कृति को जानने और समझने का सबसे बेहतर तरीका है। दो धर्मों एवं संस्कृति का अनुपम समन्वय यदि हमें कहीं दिखाई देता है तो वह लाहौल-स्पीति की पवित्र भूमि है। जहां पर भिन्न-भिन्न बौद्ध महापुरुषों ने कठोर तप और साधना से इस भूमि को पावन व पवित्र बनाया। उन्होंने कठोर साधना से इस भूमि में मानवता का संचार किया। इस दुर्गम क्षेत्र तक जहां पहुंचना असम्भव था तो ऐसे में यहां के आदिम पुरुषों ने इसे निवास के लिए चुना। वास्तव में यह देव भूमि है और ये मेले एवं त्यौहार इसके जीवन्त दस्तावेज है।

आज लाहौल स्पीति हर क्षेत्र में अग्रसर है। भारतवर्ष में ही नहीं अपनी विश्व स्तर पर पहचान बना चुका है।

छविन्दर कुमार

शोधार्थी, विद्या वाचस्पति हिन्दी

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला



ईमानदारी की अकड़

इमानदारी अकड़ लाती है। बिना रीढ़ के नहीं होती न। जबकि बेइमानी डरी सी, सहमी हुई एक कोने में सिकुड़ी रहती है। ईमानदारी इसलिए पसंद नहीं की जाती है। अकड़ती बहुत है, सीधे मुह बात नहीं करती है। बेईमानी देखो न, उसे मेहमान वाजी आती है। अवसरवादिता आती है। वह जब चाहे पल भर में गधे को भी बाप बना सकती है! ईमानदारी पैदाइशी नहीं होती है, हालातों के द्वारा पैदा होती है। जिनको मौका नहीं मिला, वे ईमानदार होते हैं। असल में, ये 'ईमानदार' वे लोग हैं जिन्हें बड़ा हाथ मारने का अवसर नहीं मिला। छोटी मोटी बेईमानी से अपना इमान खराब नहीं करते, बल्कि बड़े हाथ मारने में विश्वास रखते हैं।

कुछ लोग जो अपने आपको 'पैदाइशी ईमानदार' बताते हैं, ये वो लोग हैं जो हर डिपार्टमेंट में सरदर्दी का कारण बनते हैं। इनकी अकड़, जिद्दीपन और 'ईमानदारी की तूती' से ऑफिस का माहौल हमेशा खराब रहता है। इनसे निपटने के लिए लोग तरह-तरह की जुगाड़ें

लगाते रहते हैं। ईमानदारी टिकती नहीं है, यहाँ से वहा टप्पे खाती रहती है।

आदमी या तो बेइमान हो सकता है या कामचोर। जो ईमानदारी का ढोंग रचता है वो सबसे बड़ा कामचोर होता है। ऑफिस में आपको कोने कुचारे में ऐसा कोई अड़ियल बाबू मिल ही जायेगा। अरे यहाँ एक पैसे के दागी नहीं है समझे। काम काम के तरीके से होगा। त्यागपत्र अपनी जेब में रखते है। जाओ कर दो शिकायत, डरते थोड़े ही है। अब तो तुम्हारा काम करेंगे ही नहीं। अगर दुसरे बाबू से ले दे कर करवाया भी न तो हम टांग अडायेंगे देख लेना।" ऐसा कुछ सुनने को मिल सकता है।

'ईमानदारी' इतनी बहुमूल्य बना दी, बिलकुल जैसे की दुर्लभ प्रजाति, जल्दी ही विलुप्त प्रजाती का दर्जा प्राप्त करके किसी कन्सर्वेशन सेण्टर में छोड़ दी जायेगी। देश में न जाने क्या हो गया, राजनीतिक पार्टियों ने भी ईमानदारी का रंडी रोना शुरू कर दिया। ईमानदारी के

इमानदारी

नारों,टोपियों,बैनर और पोस्टरों ने शहर का कचरा कर दिया । इमानदारी को ऐसे ढूँढा जा रहा है जैसे जंगली सफारी में टाइगर को । जंगल सफारी में टाइगर साइडिंग की है कभी ?लोग सुबह से निकलते हैं, घंटों कैमरा लेकर जंगलों में दौड़ते भागते हैं । अगर टाइगर नहीं तो उसकी पूंछ ही दिख जाए तो इतनी खुश होते है की जैसे काली पहाडी का खजाना मिल गया हो । उसे सोशल मीडिया पर वायरल करते है । इमानदारी के साथ भी कुछ ऐसा ही हो रहा है।

एक बार का वाक्या सुनें -किसी ऑटोवाले ने पर्स लौटा दिया, जिसमें पूरे 105 रुपये सही सलामत थे । इस इमानदार ऑटो वाले की खबर पूरे शहर में आग की तरह फैल गई। इमानदारी की चर्चाएं होने लगीं, लोग आने लगे, उसके इंटरव्यू होने लगे। रातों-रात वह सेलेब्रिटी बन गया। बिग बॉस का ऑफर मिल गया । साथ ही कई लुभावने ऑफर भी बाजार से आने लगे । कोई उसके साथ रील बनाना चाहता था ,कोई यू टूब और फेसबुक पर उसके साथ लाइव रिकॉर्डिंग डाल कर लाइक्स एंड कमेंट्स बटोर रहा था ।अब तो ये जिंदा इमानदारी का एक ब्रांड बन गया। कंपनियों में विज्ञापन के लिए भी उसके पास लंबे-चौड़े ऑफर लेकर आने लगे। इमानदारी का कब बाजारीकरण हो गया पता ही नहीं लगा ।

शहर के निठल्ले पड़े सड़ रहे अखबार वालों को भी ताजा मसाला मिल गया ।

इस इमानदार में एक खासियत थी, ये अकड़ू नहीं था। रीढ़ की हड्डी नहीं थी, बिल्कुल केंचुआ था। मामला यहाँ तक पहुँचा कि उसके

घरवालों को भी लगने लगा, "चलो इसकी ऑटो चलाने की औकात से तो घर की रोजी-रोटी चल नहीं रही थी, अब कम से कम राजनीति में जाएगा तो कुछ तो काम आएगी इसकी इमानदारी।"

फिर राजनीतिक पार्टियां भी उसके घर के चक्कर लगाने लगीं। पार्टियों में होड़ मच गयी । इमानदार आदमी की चर्चा शहर से राज्य और फिर केंद्र तक तक पहुँची ।"ये तो हमारे पार्टी में होना चाहिए! ऐसे इमानदार की तो हमें जरूरत है। "उस इमानदार को अपनी पार्टी में शामिल करने के लिए, बोली लगाई जाने लगी । उसे पार्टी का ब्रांड एंबेसडर बनाया जाने का ऑफर । राजनीतिक पार्टियों को भी कुछ ऐसे इमानदार आदमी की तलाश थी । लंबे-चौड़े ऑफर आए और उसे चुनावी मंचों पर ले जाया जाने लगा। इमानदारी धीरे-धीरे महंगी हो गई, और वापस नेताओं की कोठियों में पलने लगी। कब इमानदारी नेताओं की कोठियों की रखैल बन गयी पता ही नहीं लगा ।

दरअसल, पार्टियां भी चाहती हैं कि बेइमानी की छवि को साफ किया जाए। चुनाव नजदीक हैं, तो कुछ इमानदार दूसरी पार्टी के नेताओं को भी उचित कीमत देकर खरीद लिया गया है । अपनी पार्टी के बेइमान दागियों को कुछ समय के लिए निकाल दिया गया है, ताकि जनता की शॉर्ट मेमोरी का फायदा उठाया जा सके। बेइमानी के दाग मिटाने के लिए जो तेल-साबुन का खर्चा है, वो भी बेइमानी से कमाई हुई दौलत से ही आता है।

बेइमानी ही इमानदारी की इमारत खड़ी करती है। संस्थाएं बनती हैं इमानदारी के लिए, फिर बेइमान हो जाती हैं। फिर संस्था अपना

रेनोवेशन करा लेती है, नए तमगे और ब्रांड लोगो के साथ।

"हम बेइमान नहीं, हमारी संस्था बेदाग है। "नेता जी इमानदार हैं, ये तो विरोधी पार्टियों की चाल है, जो उन्हें बेइमान साबित करने पर तुली हुई हैं।" जब वे सत्ता में थे, तब वो भी इमानदार थे। सत्ता ऐसी वॉशिंग मशीन है, जिसमें आते ही सारी बेइमानी धुल जाती है। बेइमानी ऐसी साफ़ दिखती है कि हर कोई उसे पकड़ने को तैयार है। जैसे ई डी और सी बी आई वाले पीछे पड़े रहते हैं। हर कोई भौंकने को तैयार रहता है। गली का कुत्ता भी पीछे पड़ा रहता है। अब ये मुश्किल से अपनी जान बचा पाती है। जैसे बेइमानी नहीं हुई मोहल्ले की सविता भाभी हो गयी, जिसे हर कोई छेड़ता रहता है।

इमानदारी तो कहीं नज़र ही नहीं आती, ऐसे गायब है कि दिखाई ही नहीं देती। पकड़ेगा भी कौन? आखिर, जो दिखेगा नहीं, वो पकड़ा भी कैसे जाएगा!

नेता लोग हर जगह इमानदारी दिखाते हैं। वो कहते हैं, "इमानदारी दिखाने की चीज है, निभाने की नहीं," तो जैसे हाथी के दांत दिखाने के होते हैं, वैसे ही हमारे इमानदारी के दांतों पर जनता वोट छिड़कती है। बेइमानी के पैसों को हम हाथ नहीं लगाते, सीधे खाते में जाते हैं।

इमानदारी का डंका बजाने में, लोग अपनी बगल में दबी बेइमानी को छिपाने में माहिर हो गए हैं। इमानदारी के इस पुछल्ले से सीटें हड़पी जा रही हैं, वोट कबाड़े जा रहे हैं।

आजकल इमानदारी एक ऐसा शेर बन गई है, जिसकी खाल ओढ़कर गधे भी मैदान में कूद पड़े हैं।

अगर सच पूछो तो इमानदारी सबसे ज़्यादा बेइमानों में ही मिलती है। बेइमान लूट की राशि में बंटवारे में पूरी इमानदारी बरतते हैं। कभी देखा है किसी बेइमान ने अपने साथी के खिलाफ रिपोर्ट लिखवाई हो कि उसने मेरे साथ बेइमानी कर ली?

इमानदारी ड्रामा क्वीन है। निकलती है तो पूरी सज धज के, अकड़ से, किसी को भाव नहीं देती। बेइमानी दबे पाँव निकलती है, चुपके से। इशारों इशारों में बात करती है। हर कोई इसके वश में हो लेता है। इमानदारी की रिज़र्व सीट होती है, किसी को बैठने नहीं देती, बेइमानी आर ए सी की वेटिंग की तरह, सेटिंग और जुगाड़ करके सीट कबाड़ ही लेती है।

डॉ. मुकेश' असीमित'
दूरभाष नंबर-8619811757

ग़ज़ल

रह गयी आंखें तरसकर चांद के दीदार को।
पूनमी अंबर लिए इक चांदनी के हार को।

जान तो तुम पर छिड़कता ही रहा है आज भी,
भूल कर बैठी हुई है जाने क्यों खाकसार को।

बढ़कर तुमको चूम लेगी ही सफलता हर क़दम
तुम अगर पहचान लोगे इस समय की धार को।

हर कदम पर झेलनी पड़ती मुसीबत आपको,
नाव जब फंस जाये मेरी दोष क्या मज़धार को।

आज इतना चिड़चिड़ापन तुममें कैसे आ गया,
हो गया क्या आपके उस मखमली व्यवहार को।

तुम हमारी जिन्दगी हो बस! तुम इतना जान लो
भूल जाऊं क्यों भला बीते हुए अभिसार को।

लूटते ही जा रहे हो छोड़कर धर्म और ईमान,
चेहरा कैसे दिखा पाओगे तुम इस संसार को।

ऐसे लोगों को मिले सम्मान न इज़्जत कहीं,
भूल जाते हैं जो खुद पर ही किये उपकार को।

वाई.वेद प्रकाश

द्वारा विद्या रमण फाउंडेशन

121, शंकर नगर, मुराई बाग, डलमऊ, रायबरेली

उत्तर प्रदेश 229207



यादों के गलियारों से : डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल

शीला झुनझुनवाला

पहली बार आज से वर्षों पूर्व, जब प्रसिद्ध साहित्यकार, कथाकार डॉ. लक्ष्मीनारायण लाल से मेरी भेंट हुई थी, तब सहज ही उन्होंने मुझे 'शीला बहन' के संबोधन से पुकारा था। उस क्षण से लेकर अपने जीवन के अंतिम दिनों तक वे मुझे उसी तरह संबोधित करते रहे और उसके धर्म को जीते रहे। महानगरीय जीवन में यह बात अपने आपमें विरल है। लक्ष्मी भाई का नाम याद आते ही एक ऐसे सरल, सहज, सम्पूर्ण व्यक्ति का चित्र उभरता है, जो जीवन के न जाने कितने संघर्षों के मंथन से निकला था। मैंने लक्ष्मी भाई को उनके जीवन की पृष्ठभूमि, उनके परिवार और परिवेश को जितना जाना, यही पाया कि अपने श्रेष्ठतम को अर्जित करने के लिए उन्होंने बहुत साधना की होगी। साधना तो सभी को करनी पड़ती है, रंक को भी, राजा को भी, अमीर को भी, किसान को भी, किन्तु, राजा और अमीर के बेटे को साधना करने के लिए सभी साधन उपलब्ध होते हैं जबकि, किसान और रंक के बेटे को अपनी ही क्षमता पर भरोसा करना पड़ता है।

डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल अपने को प्रायः देहाती ठेठ देहाती ही कहते थे। पर कोई दूसरा व्यक्ति उन्हें देहाती समझकर उनकी अवज्ञा करे, या

उन पर दया करे, यह उन्हें कभी बर्दाश्त नहीं होता था। अपने आत्मसम्मान पर होने वाले इन कटाक्षों को वे समझ भी न सकें इतने सरल और अव्यवहारिक भी वे नहीं थे। कभी-कभी ऐसे सब कटाक्षों की ताबड़तोड़ रस्म अदायगी भी कर देते थे चाहे ऐसा करने में उनके उत्तर कड़वे और कसैले क्यों न हो जाएं। अक्सर ऐसे अवसरों पर मैंने देखा, वे ठेठ देहाती किस्म की हंसी हंस कर सामने वाले को निरस्त कर देते थे। वे कस्बे में रहे और हिंदी के गढ़ इलाहाबाद शहर में भी। पर दोनों परिस्थितियों के कारण कोई असहजता उनमें नहीं थी – न उनमें देहाती होने के कारण कोई असमंजस की स्थिति थी और न शहराती रंग ढंग ओढ़ लेने की कोई उत्सुकता। वे शहर के कृत्रिम जीवन में रहते हुए भी खेतों की खुशबू से जुड़े देहाती मिट्टी को जी-जान से प्यार करते थे।

लक्ष्मी भाई किसान के बेटे थे। साधनों का अभाव होते हुए भी उन्होंने साहित्य में डॉक्टरेट की और रचनाकार के धर्म को निभाते हुए अनेक विधाओं जैसे नाटक, कविता, लेख, कहानी सभी में लिखा।

अपनी धुन के पक्के होने के कारण, जिस भी कार्य का बीड़ा उठाया, उसे पूरी निष्ठा से पूर्ण किया। जब कोई असहज स्थिति पैदा होती थी तो नौकरी छोड़ने में जरा भी देर नहीं लगाते थे। उन्होंने सदैव अपने



आत्मसम्मान को अहम् माना । जिसने भी स्नेहवश थोड़ी-सी ममता दिखाई, वहां आकृष्ट हो गए और जहाँ थोड़ी सी उपेक्षा दिखी, आत्मसम्मान को ठेस पहुँची, उससे अलग होने में एक क्षण भी देर नहीं लगाई । जो अपने आप को पसंद नहीं, उसे त्यागने में संकोच नहीं, उनके स्वभाव का मूल मन्त्र था ।

उनकी आर्थिक स्थिति को लेकर हम बड़े चिंतित रहते । अक्सर हमारे घर बीच-बीच में जब आते, एक ही वाक्य उनके मुख से निकलता, “टी.पी. भाई, मैंने विश्वविद्यालय की नौकरी भी छोड़ दी ।” आश्चर्य यह कि उनकी नौकरी छोड़ने की बात से मित्रगण दुखी होते परन्तु वे हँसते ही रहते, मुक्ति की निश्चल हंसी ।

उनकी पत्नी, आरती भाभी ! सहज, सरल, माथे पर बड़ी-सी लाल बिंदी, मांग में भरा सिंदूर, उनके हलके श्याम रंग पर बहुत सजता था । कठिन से कठिन परिस्थिति में भी उनके होठों पर स्नेहपूर्ण मुस्कान सदैव खिलती रहती थी । उनके घर में सदैव बड़े से बड़े लेखक और बुद्धिजीवी आते रहते थे किन्तु उन्होंने कभी उनके बीच में कोई असहजता महसूस नहीं की । कभी मैं मिलती तो वे सदैव पूछतीं, “कढ़ी खाने कब आ रही हैं ।” पति के हर कदम पर साथ देने वाली पत्नी थीं वे । डॉ. लाल को भी मैंने कभी उनका असम्मान करते नहीं देखा । उनकी हर जरूरत पूरी करते – उनके दांत निकलवाने हैं तो डॉक्टर को ले जाकर दिखाने से लेकर तीज-त्योहार पर पीहर ले जाने तक ।

मैं उन दिनों कादम्बिनी पत्रिका में संयुक्त संपादक के रूप में कार्यरत थी । डॉ. लाल से अक्सर भेंट होती रहती थी । लक्ष्मी भाई अक्सर मुझसे कहते थे - “देश में व्यक्ति हैं, लोगबाग हैं, विभिन्न जातियाँ हैं, वर्ग हैं, पर समाज नहीं है । समाज के माता, पिता, गुरु ये तीन आधार होते हैं, जिनसे व्यक्ति समाज बनाता है और उससे अपना व्यक्तित्व भी प्राप्त करता है । परन्तु गुलामी के कारण समाज-निर्माण के तीनों आधार कमजोर पड़ गये । इसी कारण लोगों के जीवन में और समाज में भी अनैतिकता का बोलबाला है ।”

यह वह दौर था, जब देश में कांग्रेस विरोधी वातावरण पनप रहा था - महंगाई, भ्रष्टाचार आदि से लोग परेशान थे । सार्वजनिक जीवन में इन सब बातों को लेकर बहसें छिड़ी रहती थीं – कांग्रेस के अन्दर भी लावा सुलग रहा था, वरिष्ठ नेताओं की कोई पूछ नहीं थी क्योंकि वे इंदिरा जी की नीतियों से असंतुष्ट थे । सोने पे सुहागा तब हुआ जब जयप्रकाश नारायण के सम्पूर्ण क्रांति के आन्दोलन ने गुजरात में सरकार पलट दी थी । अब विरोधी पक्ष केंद्र में भी वही दोहराना चाहता था जो गुजरात में हुआ ।

इसी बीच इलाहाबाद उच्च न्यायालय के जस्टिस जगमोहन लाल सिन्हा ने लोहियावादी नेता राजनारायण की चुनाव याचिका पर देश की तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी का चुनाव अवैध घोषित कर दिया । न केवल अवैध घोषित किया था वरन ६ वर्षों तक किसी निर्वाचित पद पर बने रहने पर पाबन्दी भी लगा दी थी । परिणाम यह हुआ कि देश में एक स्वयं स्फूर्त जन आन्दोलन की



लहर उठी। इंदिरा जी के इस्तीफे की मांग जोर पकड़ने लगी और इसी समय आन्तरिक आपातकाल की घोषणा हुई। उस समय यदि इंदिरा जी स्वयं इस्तीफा दे देतीं तो स्थिति कुछ और ही होती, किन्तु ऐसा नहीं हुआ।

इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में अपील दायर की गई और जस्टिस कृष्ण अय्यर ने 23 जून को स्टे आर्डर दे दिया। उन्होंने श्रीमती गाँधी को चुनाव में किसी संगीन गड़बड़ी का दोषी नहीं पाया और कहा कि वे प्रधानमंत्री बनी रह सकती हैं, लेकिन जब तक सर्वोच्च न्यायालय, इलाहाबाद उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ उनकी अपील नहीं निबटा देता, तब तक वे लोकसभा में मतदान में भाग नहीं ले सकतीं। इस फैसले से जहाँ इंदिरा गाँधी और उनके समर्थकों को राहत मिली, वहीं विपक्ष ने 25 जून को दिल्ली में विशाल प्रदर्शन की योजना बना डाली। जयप्रकाश जी दिल्ली पहुँच चुके थे। रैली में जयप्रकाश जी ने सेना और पुलिस का आह्वान किया कि वे सरकार के किसी भी गैर-कानूनी हुक्म को मानने से इनकार कर दें।

उनकी अपील की मिश्रित प्रतिक्रिया हुई। लेकिन बढ़ते जन-आन्दोलन पर जयप्रकाश जी की इस अपील ने इंदिराजी के समर्थकों को भयभीत कर दिया। उनका मानना था कि इंदिराजी पद पर नहीं रहेंगी तो पार्टी टूट जाएगी और देश भी टूट जाएगा। 'इंदिरा इज इंदिरा' जो थीं ! अंततः 25 जून की रात को ही 11 बजकर 45 मिनट पर तत्कालीन

राष्ट्रपति फखरुद्दीन अली अहमद ने आपातकाल की घोषणा पर हस्ताक्षर कर दिए।

आपातकाल के समय सेंसरशिप, संविधान प्रदत्त अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर कुठाराघात हुआ। देश में अजीब सा माहौल था। टेलीप्रिंटर ठप पड़ गये थे – अफवाहों के बाजार गर्म होने लगे थे – अफवाहें निकलती रहीं और आग में घी का काम करती रहीं। जयप्रकाश जी, मोरारजी भाई, आडवाणी बहुत से नेताओं को जेल में डाल दिया गया। चारों ओर गिरफ्तारियां ही गिरफ्तारियां। आतंक का एक अजीब-सा माहौल बन गया था। स्थितियां तेजी से बदल रही थीं – सब कुछ अनिश्चित था – बहुत से नेता पकड़े गए। कुछ सोच रहे थे कि पकड़े जाने से कोई फायदा नहीं – भूमिगत हो जाना ही अच्छा है क्योंकि उस स्थिति में काम तो चलता रह सकता है। दिल्ली में इस योजना की जिम्मेदारी लोक संघर्ष समिति के सचिव और जन संघ के नेता नानाजी देशमुख ने ली। उनके जैसे कर्मठ व्यक्ति की क्षमता थी कि देश में एक व्यापक आन्दोलन दक्षता पूर्वक संचालित हो सका।

मैं उन दिनों नानाजी देशमुख से कई बार मिली। उनके विचारों से प्रभावित भी हुई। नानाजी के संपर्क में आने के बाद कुछ और ऐसे कार्यकर्ताओं से भी मिली - तब पता चला कि यह कठिन काम कैसे पूरा हुआ।

जयप्रकाश नारायण द्वारा चलाए जा रहे आन्दोलन से डॉ. लाल व्यक्तिगत रूप से बहुत पहले से जुड़े रहे थे और उनकी जीवनी पर काम कर रहे थे, जो बाद में आपातकाल से 8-10 माह पहले ही



प्रकाशित हुई। डॉ. लाल अपने को आन्दोलन से अलग नहीं रख सके। डॉ. लाल आन्दोलन के पक्षधर थे और जयप्रकाश जी के निकट संपर्क में थे। इसलिए तत्कालीन हवा के प्रतिकूल चल रहे थे। यह वह समय था जब देश में भाषण, समाचार, आलोचना सब पर प्रतिबन्ध लगा था। डॉ. लाल को भी कई बार कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ा था।

उनकी रचनाओं का प्रकाशन और अन्य कार्यों पर भी प्रतिबन्ध लग गया था। उनकी विद्रोही प्रवृत्ति ने कभी किसी अनुशासन को स्वीकार नहीं किया था – न कभी महत्वाकांक्षाओं को तरजीह दी थी।

इसी दौरान एक दिन डॉ. लाल ने मुझे फोन किया और कहा – “पंडित कमलापति त्रिपाठी के जन्मदिवस के अवसर पर विट्टल भाई स्पीकर हॉल में एक समारोह का आयोजन किया जा रहा है और मैं भी आमंत्रित हूँ। क्या आप भी वहां आ रही हैं?”

मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि आयोजकों से यह बात कैसे छिपी रह गई कि डॉ. लाल तो आपातकाल के सख्त विरोधी हैं।

मैंने डॉ. लाल से कहा – “हां, मैं भी आमंत्रित हूँ और वहां जा रही हूँ। पर आपके लिए तो यह बड़े असमंजस की स्थिति है – आप तो

आपातकाल के सख्त विरोधी हैं, आप वहां कैसे जायेंगे? और जायेंगे तो आपको मंच पर भी अवश्य बुलाया जायेगा।”

डॉ. लाल का उत्तर था – “शीला बहन, क्या करूँ, मेरे मित्रों का आग्रह था इसलिए मैं मना नहीं कर सका – जाना तो पड़ेगा ही।”

मैं विट्टल भाई पटेल सभागार दीर्घा निश्चित समय पर पहुँच गई। देखा डॉ. लाल पहले से ही वहां दर्शकों में मौजूद थे। उनकी सहज मुद्रा को देखकर यह तनिक भी नहीं लग रहा था कि उन्हें मंच पर आमंत्रित किया जायेगा। शायद आयोजकों से इस बात का आश्वासन उन्हें मिल गया था। आयोजन के प्रारंभिक स्वागत भाषण, माला अर्पण आदि के बाद कार्यक्रम शुरू हुआ। एक, दो वक्ताओं के भाषण भी हुए। अचानक संचालक महोदय उठे, उन्होंने माइक हाथ में लिया और बोले, “बड़े हर्ष की बात है, हमारे बीच यहाँ प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. लक्ष्मी नारायण लाल भी उपस्थित हैं। मैं उनसे आग्रह करूँगा कि वे आर्ये और दो शब्द कहें।”

अब कोई चारा नहीं था – डॉ. लाल को मंच पर जाना पड़ा। मंच पर आते ही माइक हाथ में पकड़कर उन्होंने कहा – “मैं रचनाकार हूँ, इस नाते शब्द ही हमारी पूंजी है और आज शब्द पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है।”



यह सुनते ही हॉल में सन्नाटा छा गया। पंडित कमलापति त्रिपाठी की मुद्रा भी असहज हो गई। हॉल में बैठे हुए लोग भी इस आशंका में थे कि लाल भाई अब क्या बोलेंगे। डॉ. लाल ने अपने उन्हीं शब्दों को दोहराया “मैं रचनाकार हूँ, इस नाते शब्द ही हमारी पूंजी है और आज शब्द पर प्रतिबन्ध लगा हुआ है। मैं उन्हीं प्रतिबंधित शब्दों के माध्यम से पंडित जी को जन्मदिन की बधाई और आदर देता हूँ।” और यह कहकर वे मंच से उतर गए।

लक्ष्मी भाई ने बड़े सशक्त और संतुलित स्वर में पंडित जी के प्रति अपनी श्रद्धा भी व्यक्त कर दी और लेखन धर्म का निर्वाह भी किया। अपनी प्रकृति के अनुरूप वे संतुष्ट थे। उन्होंने वही कहा जिस पर उन्हें विश्वास था और उसे ही अभिव्यक्त कर देना उनका धर्म था।

लक्ष्मी भाई के परिवार से जैसे-जैसे हमारी घनिष्ठता बढ़ती गई, मैंने पाया कि उनके व्यक्ति और साहित्यकार के बीच एक समान वस्तु है, और वह है उनके भीतर की अनुभूति और आत्म प्रसाद। जितना कुछ मैंने इनका लिखा हुआ पढ़ा है, धर्मयुग, अंगजा और साप्ताहिक हिंदुस्तान के सम्पादकत्व काल में, जितना कुछ देखा है, उस सबसे मुझे बराबर लगा है कि लाल एक वेदनामय चैतन्य लेकर हमारे बीच आये हैं। इसी तत्व के ही आधार पर उनकी प्रकृति निर्मित हुई थी।

अपनी इसी प्रकृति द्वारा वह मानव प्रकृति के साथ आत्मीयता स्थापित करते हैं। लाल के हृदय में और उनकी लेखनी में जो आदर्श हैं वह पूरी तरह उसके ही ऊपर निर्भर होने के अलावा और कोई साधारण रास्ता या उपाय नहीं अपनाते।

डॉ. लाल के नाटक प्रायः मानवीय संबंधों के ही ऊपर केन्द्रित हैं। पहला – स्त्री-पुरुष सम्बन्ध संसार और दूसरा व्यक्ति का अपने से सम्बन्ध का संसार। स्त्री-पुरुष के संबंधों की गहराई और उसकी जटिलता की तलाश और उसके रहस्य को उद्घाटित करने में लक्ष्मी भाई को आनंद आता था। इंसानी रिश्ते डॉ. लाल के आसपास के संबंधों के संसार से जुड़े हुए थे – आधारित थे उन संगतियों और विसंगतियों पर, जो वे अपने व्यक्तिगत जीवन और परिवेश से पाते थे और जिनका प्रस्तुतीकरण होता था उनके नाटकों में।

इसलिए जब मैं ‘साप्ताहिक हिंदुस्तान’ में संपादक थी, एक बार मैंने उनसे एक लेखमाला लिखवाई, इंसानी रिश्ते : मानव सम्बन्ध।

एक बार डॉ. लाल ने मुझसे कहा, “शीला बहन, आपके और ठाकुर भाई के जीवन को मैंने बहुत करीब से देखा है। आप दोनों एक-दूसरे को प्यार भी करते हैं, झगड़ते भी हैं – आम पति-पत्नी की तरह छोटी-से-छोटी और फालतू-सी लगनेवाली बात पर भी। ठाकुर भाई में



तेजी है, आप में धीरज है। उनमें कर्म-निष्ठ की गतिशीलता है, आप छोटी-छोटी बातों पर गुस्सा हो जाती हैं। वे दौड़ते हैं, आप चलती हैं। वे बड़ी-से-बड़ी चीज को महत्त्व नहीं देते, आप छोटी-छोटी चीजों को भी महत्त्व देती हैं। वे संबंधों और जिम्मेदारियों से इतने जुड़े हैं कि लगता है परिवार को भी समय नहीं दे पाते, जबकि आप बच्चों की बात हमेशा सोचती रहती हैं। इतने विरोधाभास रहते हुए भी आप इतने घुले-मिले हो जैसे, शिव और पार्वती, सच्चे अर्थों में सहभागी! ऐसा कैसे संभव होता है?"

मैंने कहा, "लाल भाई, हम स्त्रियों को बचपन से यह महसूस कराया जाता है कि हमारे विचारों और कर्मों का कोई महत्त्व नहीं है। हमें सदैव दूसरों के साथ सामंजस्य करके चलना है। धीरे-धीरे जब अपने स्वतंत्र विचार बनने लगते हैं, तब तक हर स्थिति के साथ सामंजस्य बैठाना एक 'आदत' बन जाती है। टकराव भी होते हैं बौद्धिक स्तर पर, स्वाभाविक है, पर वे क्षणिक होते हैं और हमारे आपसी संबंधों पर उनका कोई प्रभाव नहीं पड़ता। उस समय ठाकुर बहुत नाराज भी हो जाते हैं, कभी-कभी। वहां चाहे मैं स्वयं ही सही क्यों न होऊँ, 'सौरी, आई एम सौरी' तो मुझे ही कहना पड़ता है। तब आप जानते हैं इनका एक वाक्य, जो ऐसी स्थितियों में अक्सर होता है, वह यह है, 'तुम मन में तो सोच रही हो कि तुम सही हो और मैं गलत। केवल मुझे शांत करने के लिए 'सौरी' बोल रही हो। तब मैं कहती हूँ, 'अब हनुमानजी की तरह अपना हृदय खोलकर तो नहीं दिखा सकती, इसलिए मुख से निकले शब्दों पर ही उसी प्रकार भरोसा कीजिये जैसे मैं आपके प्यार

पर भरोसा करती हूँ और इसी कारण आपकी ज्यादातियां भी सह जाती हूँ।' और बस, फिर थोड़ी देर में हमारी लड़ाई खत्म हो जाती है।

'मैं समझती हूँ, पति अपनी पत्नी के रूप में प्रेमिका, माँ, बहन, धर्मपत्नी, नौकर, सखा, गुरु, पथप्रदर्शक-सब कुछ देखना चाहता है। एक में अनेक। मैंने अपने को हर स्तर पर, इनकी भावनाओं के अनुरूप, सहेज रखा है, इसीलिए शायद, गाड़ी ठीक ही चल रही है।'

इस बात को हुए बहुत दिन बीत गये। एक दिन देखा डॉ. लाल अपने हाथ में एक नव-प्रकाशित नाटक की प्रति लिए आ रहे हैं। नाम था - 'व्यक्तिगत' और उन्होंने उसे समर्पित किया था हमें यानी 'टी.पी भाई और शीला बहन को' जब नाटक पढ़ा तो लगा, लेखकों से बात करना भी बहुत खतरनाक है।

'व्यक्तिगत' नाटक में दाम्पत्य-जीवन के संबंधों की कथावस्तु लेकर डॉ. लाल चले, किन्तु, उसको इतना उलझा दिया कि जिन संबंधों की मधुरता को लेकर उन्होंने कथानक प्रारम्भ किया था, वह कहीं खो गया। समाज की व्यापक पृष्ठभूमि में उन्होंने यही देखा कि अधिकांश व्यक्ति खंडित व्यक्तित्व जी रहे हैं और इसीलिए समस्याओं के बाहरी समाधान ढूँढ़कर आनंद प्राप्त करना चाहते हैं।

यही कारण है कि उनके उपन्यास ही नहीं, नाटकों में भी अक्सर कतार की कतार टूटते लोगों दिखाई पड़ती है जो आत्मदया में घुला करते हैं। निरंतर टूटते आदमियों का चित्र खींचते हुए भी डॉ. लाल खुद टूटे हुए आदमी नहीं थे। उनमें देहाती आदमी की कर्मठता और सहिष्णुता भी थी और एक स्वस्थ कर्मरती भी।

एक बार डॉ. लाल ने मुझसे कहा था - "ये जो लाल बाहर से दिखता है, यह तो उसकी मूर्ति है। मूर्ति में सच्चाई कहाँ होती है। उसे तो नित्य ढूँढ़ना और नित्य प्रति उसका अनुसन्धान करना पड़ता है।"

नित्यप्रति अपने आपको शोधना, शुद्ध करना, जानना और पाना, आत्मविश्लेषण करने की इस प्रक्रिया में डॉ. लाल जीवन पर्यन्त लगे रहे।

उनका कहना था "चिंतन अलग है और सृजन अलग है। अर्थात् बुद्धि अलग शक्ति है तथा हृदय अलग शक्ति है - चिंतन बुद्धि की और सृजन हृदय की चीज है इसलिए जितना हम संवेदनशील होंगे - हमारा लेखन भी उतना ही सफल होगा।"

डॉ. लाल सदैव अपने भीतर आश्रित और सुरक्षित रहे। उनका यह आश्रय और सुरक्षा उनका स्वयं अर्जित किया हुआ था। उनको देखकर मुझे हमेशा लगा कि उनमें सारा संसार समाया हुआ है, चाहे व्यक्तिगत जीवन हो, सामाजिक हो या धार्मिक अथवा इनके साहित्य सृजन का हो, हर क्षेत्र में वे भरे पुरे रहे।



अक्तूबर-2024



Book Name : जीवन उल्लास

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : 978-81-958985-3-4

Language : हिन्दी

Year of Publication :2023

Page Numbers : 108

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

जीवन के विभिन्न भाव-दशाओं और सत्य को निरूपित करती सरल एवं सरस कविता।



Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

अंधेरे से प्रकाश की ओर जाने का पर्व है दीपावली

मानव जीवन में प्रकाश की महत्ता किसी से छुपी नहीं है। दुनिया के कई देशों में भिन्न-भिन्न रूपों में प्रकाश-पर्व मनाये जाते हैं। अंधकार पर प्रकाश की

विजय का यह पर्व समाज में उल्लास, भाई-चारे व प्रेम का संदेश फैलाता है। भारतवर्ष में मनाए जाने वाले सभी त्यौहारों में दीपावली का सामाजिक और धार्मिक दोनों दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है। इसे दीपोत्सव भी कहते हैं। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय' अर्थात् 'अंधेरे से ज्योति अर्थात् प्रकाश की ओर जाइए' यह भारतीय संस्कृति का मूल है। देश के विभिन्न क्षेत्रों में दीवाली मनाने के कारण एवं तरीके अलग हैं पर सभी जगह कई पीढ़ियों से यह त्योहार चला आ रहा है। यह पर्व सामूहिक व व्यक्तिगत दोनों तरह से मनाए जाने वाला ऐसा विशिष्ट पर्व है जो धार्मिक, सांस्कृतिक व सामाजिक विशिष्टता रखता है।

दीपावली शब्द की उत्पत्ति संस्कृत के दो शब्दों 'दीप' अर्थात् 'दिया' व 'आवली' अर्थात् 'लाइन' या 'श्रृंखला' के मिश्रण से हुई है। इसके उत्सव में घरों के द्वारों, घरों व मंदिरों पर लाखों प्रकाशकों को प्रज्वलित किया जाता है। इस पर्व पर लोग अपने घरों का कोना-कोना साफ़ करते हैं, नये कपड़े पहनते हैं। मिठाइयों के उपहार एक दूसरे को बाँटते हैं, एक दूसरे से मिलते हैं। घर-घर में सुन्दर रंगोली बनायी जाती है, दिये जलाए जाते हैं और आतिशबाजी की जाती है। बड़े छोटे सभी इस त्योहार में भाग लेते हैं।

दीपों के प्रकाश पर्व दीवाली की चर्चा भारत में तमाम पुराने ग्रंथों और साहित्य में प्राप्त होती है। दीवाली का पद्य पुराण और स्कन्द पुराण नामक संस्कृत ग्रंथों में उल्लेख मिलता है जो माना जाता है कि पहली

सहस्राब्दी के दूसरे भाग में किन्हीं केंद्रीय पाठ को विस्तृत कर लिखे गए थे। दीये (दीपक) को स्कन्द पुराण में सूर्य के हिस्सों का प्रतिनिधित्व करने वाला माना गया है, सूर्य जो जीवन के लिए प्रकाश

आकांक्षा यादव



और ऊर्जा का लौकिक दाता है और जो हिन्दू कैलेंडर अनुसार कार्तिक माह में अपनी स्थिति बदलता है। कुछ क्षेत्रों में हिन्दू दीवाली को यम और नचिकेता की कथा के साथ भी जोड़ते हैं। नचिकेता की कथा जो सही बनाम गलत, ज्ञान बनाम अज्ञान, सच्चा धन बनाम क्षणिक धन आदि के बारे में बताती है; पहली सहस्राब्दी ईसा पूर्व उपनिषद में दर्ज की गयी है। 7 वीं शताब्दी के संस्कृत नाटक नागनंद में राजा हर्ष ने इसे दीपप्रतिपादुत्सव: कहा है जिसमें दीये जलाये जाते थे और नव दुल्हन व दूल्हे को तोहफे दिए जाते थे। 9 वीं शताब्दी में राजशेखर ने काव्यमीमांसा में इसे दीपमालिका कहा है जिसमें घरों की पुताई की जाती थी और तेल के दीयों से रात में घरों, सड़कों और बाजारों सजाया जाता था। फारसी

यात्री और इतिहासकार अल्बरूनी ने भारत पर लिखे अपने 11वीं सदी के संस्मरण में, दीवाली को कार्तिक महीने में नये चंद्रमा के दिन पर हिंदुओं द्वारा मनाया जाने वाला त्यौहार कहा है।

भारतीय संस्कृति में हर त्यौहार के पीछे कुछ मान्यतायें छिपी हुई हैं। दीपावली मनाये जाने के पीछे मान्यता है कि दीपावली के दिन ही श्रीराम अपने चौदह वर्ष के वनवास के पश्चात अयोध्या लौटे थे। अयोध्यावासियों का हृदय श्रीराम के आगमन से प्रफुल्लित हो उठा था। अपने राजा श्रीराम के स्वागत में अयोध्यावासियों ने घी के दीपक जलाए। कार्तिक मास की सघन काली अमावस्या की वह रात्रि दीयों की रोशनी से जगमगा उठी। तभी से प्रति वर्ष प्रकाश-पर्व को हर्ष व



उल्लास से मनाये जाने की परम्परा आरम्भ हुई। एक अन्य मान्यतानुसार इस दिन भगवान श्री कृष्ण ने अत्याचारी राजा नरकासुर का वध किया था। इस नृशंस राक्षस के वध से जनता में अपार हर्ष फैल गया और प्रसन्नता से भरे लोगों ने घी के दीए जलाए। एक पौराणिक कथा के अनुसार विष्णु ने नरसिंह रूप धारणकर हिरण्यकश्यप का वध किया था तो इसी दिन समुद्रमंथन के पश्चात लक्ष्मी व धन्वंतरि का प्रकट दिवस भी माना जाता है।

दीपावली दीपों का त्योहार है। दीपावली स्वच्छता व प्रकाश का पर्व है। यह सिर्फ समाज में प्रकाश ही नहीं फैलाता, बल्कि अंधकार व बुराईयों को दूर भी करने का दिन है। यह इस विश्वास पर टिका है कि सत्य की सदा जीत होती है झूठ का नाश होता है। दीवाली यही चरितार्थ करती है- असतो माऽसद्गमय, तमसो माऽज्योतिर्गमया। कई सप्ताह पूर्व ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती हैं। लोग अपने घरों, दुकानों आदि की सफाई का कार्य आरंभ कर देते हैं। घरों में मरम्मत, रंग-रोगन, सफ़ेदी आदि का कार्य होने लगता है। लोग दुकानों को भी साफ़ सुथरा कर सजाते हैं। बाजारों में गलियों को भी सुनहरी झंडियों से सजाया जाता है। दीपावली से पहले ही घर-मोहल्ले, बाजार सब साफ-सुथरे व सजे-धजे नज़र आते हैं।

दीपावली सिर्फ एक दिन का पर्व नहीं अपितु पर्वों का समूह है। दशहरे के पश्चात ही दीपावली की तैयारियाँ आरंभ हो जाती हैं। लोग नए-नए वस्त्र सिलवाते हैं। दीपावली से दो दिन पूर्व धनतेरस का त्योहार आता है। धनतेरस के दिन बरतन खरीदना शुभ माना जाता है। अतः प्रत्येक परिवार अपनी-अपनी आवश्यकता अनुसार कुछ न कुछ खरीदारी करता है। इस दिन तुलसी या घर के द्वार पर एक दीपक जलाया जाता है। इससे अगले दिन नरक चतुर्दशी या छोटी दीपावली होती है। इस

दिन यम पूजा हेतु दीपक जलाए जाते हैं। अगले दिन दीपावली आती है। इस दिन घरों में सुबह से ही तरह-तरह के पकवान बनाए जाते हैं। बाजारों में खील-बताशे, मिठाइयाँ, खांड के खिलौने, लक्ष्मी-गणेश आदि की मूर्तियाँ बिकने लगती हैं। स्थान-स्थान पर आतिशबाजी और पटाखों की दुकानें सजी होती हैं। सुबह से ही लोग रिश्तेदारों, मित्रों, सगे-संबंधियों के घर मिठाइयाँ व उपहार बाँटने लगते हैं। दीपावली की शाम लक्ष्मी और गणेश जी की पूजा की जाती है। पूजा के बाद लोग अपने-अपने घरों के बाहर दीपक व मोमबत्तियाँ जलाकर रखते हैं। चारों ओर चमकते दीपक अत्यंत सुंदर दिखाई देते हैं। रंग-बिरंगे बिजली के बल्बों से बाजार व गलियाँ जगमगा उठते हैं। बच्चे तरह-तरह के पटाखों व आतिशबाजियों का आनंद लेते हैं। रंग-बिरंगी फुलझड़ियाँ, आतिशबाजियाँ व अनारों के जलने का आनंद प्रत्येक आयु के लोग लेते हैं। देर रात तक कार्तिक की अँधेरी रात पूर्णिमा से भी से भी अधिक प्रकाशयुक्त दिखाई पड़ती है।

दीपावली से अगले दिन गोवर्धन पूजा होती है। इस दिन श्री कृष्ण ने गोवर्धन पर्वत अपनी अँगुली पर उठाकर इंद्र के कोप से डूबते ब्रजवासियों को बचाया था। इसी दिन लोग अपने गाय-बैलों को सजाते हैं तथा गोबर का पर्वत बनाकर पूजा करते हैं। अगले दिन भाई दूज का पर्व होता है। भाई दूज या भैया दूज को यम द्वितीय भी कहते हैं। इस दिन भाई और बहिन गांठ जोड़ कर यमुना नदी में स्नान करने की परंपरा है। इस दिन बहिन अपने भाई के मस्तक पर तिलक लगा कर उसके मंगल की कामना करती है और भाई भी प्रत्युत्तर में उसे भेंट देता है। दीपावली के दूसरे दिन व्यापारी अपने पुराने बहीखाते बदल देते हैं। वे दुकानों पर लक्ष्मी पूजन करते हैं। उनका मानना है कि ऐसा करने से धन की देवी लक्ष्मी की उन पर विशेष अनुकंपा रहेगी। कृषक वर्ग के लिये इस पर्व का विशेष महत्त्व है। खरीफ़ की फसल पक कर तैयार हो जाने से कृषकों के खलिहान समृद्ध हो जाते हैं। कृषक समाज अपनी समृद्धि का यह पर्व उल्लासपूर्वक मनाता है।

आज दीपावली का पर्व सिर्फ भारत तक ही सीमित नहीं रहा अपितु दुनिया भर में बसे भारतीयों ने इसे ग्लोबल फेस्टिवल बना दिया है। कई देशों ने इस पर डाक टिकट जारी किये हैं तो कुछेक देशों में इस दिन अवकाश भी होता है। आज यह पर्व अंधकार पर प्रकाश, अन्याय पर न्याय, अज्ञान और बुराई पर ज्ञान व अच्छाई की विजय का प्रतीक है।

आकांक्षा यादव

पोस्टमास्टर जनरल आवास

बंगला नं.-22. कैटोनमेंट, शाही बाग, अहमदाबाद (गुजरात)-

380004

मो.-09413666599 ई-मेल: akankshay1982@gmail.com



हिंदी आलोचना का जनपक्ष : संवाद

डॉ. हरेराम सिंह द्वारा लिखित 'हिंदी आलोचना का जन पक्ष' हिंदी साहित्य के आलोचना क्षेत्र में एक उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण योगदान है। यह पुस्तक हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं और प्रवृत्तियों को समाजवादी दृष्टिकोण से समझने और समझाने का प्रयास करती है, जो इसे विशिष्ट और विचारोत्तेजक बनाता है। पुस्तक में हिंदी साहित्य के विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया है। इसमें हिंदी साहित्य के बड़े नामों और उनके साहित्यिक योगदानों को नए संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है; जहां प्रेमचंद से लेकर आधुनिक काल के लेखकों और साहित्यिक प्रवृत्तियों तक का विस्तृत विश्लेषण है।

पुस्तक का आरंभिक भाग प्रेमचंद की रचनाओं पर केंद्रित है। प्रेमचंद को हिंदी साहित्य का जनवादी लेखक माना जाता है, और उनकी कृतियाँ भारतीय समाज की गहराइयों में जाकर उसके यथार्थ को उजागर करती हैं। 'प्रेमचंद का गोदान' अध्याय हिंदी साहित्य के महानतम उपन्यासकार प्रेमचंद के सबसे प्रमुख उपन्यास

'गोदान' पर केंद्रित है। इसमें होरी और धनिया के माध्यम से भारतीय किसान की व्यथा और संघर्ष को अत्यंत सजीवता से चित्रित किया गया है। इसमें उनके सामाजिक-आर्थिक विषमताओं का उत्कृष्ट चित्रण है। हरेराम सिंह ने इस उपन्यास को समाजवादी दृष्टिकोण से देखा है, जिसमें उन्होंने बताया है कि कैसे प्रेमचंद ने समाज के सबसे निचले तबके की पीड़ा और उनकी आर्थिक बदहाली को साहित्यिक रूप में व्यक्त किया है। उन्होंने दिखाया है कि कैसे प्रेमचंद ने गोदान में किसानों के संघर्ष, उनके सपनों, और उनकी टूटती आशाओं को यथार्थवादी तरीके से प्रस्तुत किया है। इस अध्याय प्रेमचंद के समाजवादी दृष्टिकोण उजागर हुआ है और उनके साहित्य को जनपक्षीय दृष्टि से समझने का प्रयास है। यह अध्याय पाठकों को इस बात की समझ देता है कि प्रेमचंद का साहित्य केवल मनोरंजन नहीं है, बल्कि वह समाज की उन गूढ़ समस्याओं को सामने लाता है, जिनसे जनसमूह प्रभावित होता है।

वस्तुतः प्रेमचंद की कहानियों में मानवीय संवेदना का गहरा प्रवाह है। उनकी कहानियाँ भारतीय समाज की सच्ची तस्वीर पेश

करती हैं। उनमें समाज की जटिलताओं का सुंदर चित्रण मिलता है। 'प्रेमचंद की कहानियों में मानवीय संवेदना' अध्याय प्रेमचंद की उन कहानियों का विश्लेषण करता है, जो सामाजिक यथार्थ और मानवीय मूल्यों को उजागर करती हैं। डॉ. हरेराम सिंह ने इस अध्याय में प्रेमचंद की कहानियों में निहित संवेदनशीलता, मानवीय संबंधों की जटिलता, और समाज के कमजोर तबके की समस्याओं को समझाने का प्रयास किया है। उन्होंने प्रेमचंद की कहानियों में यथार्थवाद और उनके पात्रों की जीवन्तता को विशेष रूप से रेखांकित किया है। अतः प्रेमचंद की कहानियों में निहित सामाजिक और मानवीय संवेदनाओं का विवेचन करना ---- इस पुस्तक का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है।

राजेंद्र यादव हिंदी साहित्य के प्रख्यात लेखक, आलोचक और विचारक हैं। वह अपनी साहित्यिक दृष्टि और सामाजिक चेतना के लिए प्रसिद्ध हैं। शायद इसीलिए उन्होंने अपनी दर्शन-दृष्टि से साहित्य को एक नई दिशा दी है। 'राजेंद्र यादव की दर्शन-दृष्टि' अध्याय में डॉ. हरेराम सिंह ने उनकी साहित्यिक दृष्टि और उनके विचारों का विस्तृत एवं व्यापक विवेचन किया है। उनका साहित्यिक दर्शन समाज में व्याप्त अन्याय, असमानता, और शोषण के विरुद्ध संघर्ष का है। अतएव इस अध्याय में राजेंद्र यादव के साहित्यिक योगदान को जनवादी दृष्टिकोण से समझने का प्रयास हुआ है। उन्होंने हिंदी साहित्य में दलित और नारी विमर्श को नई पहचान दी, जिसे इस अध्याय में बखूबी दर्शाया गया है।

'जादूगर के मुलुक में एक उपन्यास का छपना' शीर्षक अध्याय सूर्यनाथ सिंह के 'नींद क्यों रात भर नहीं आती' उपन्यास की साहित्यिक परंपरा और उसकी प्रकाशन प्रक्रिया पर केंद्रित है। यहाँ उपन्यास लेखन के पीछे की जटिलताओं, सामाजिक संदर्भों, और साहित्यिक संस्थानों की भूमिका पर विचार किया गया है। डॉ. सिंह ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि कैसे एक उपन्यास सामाजिक परिवेश का प्रतिबिंब बनता है और किस प्रकार उसकी साहित्यिक और सामाजिक मूल्यांकन प्रक्रिया विकसित होती है।

'नई आर्थिक समीक्षा एवं हिंदी उपन्यास' अध्याय में, अनंत कुमार सिंह के दो उपन्यास 'ताकि बची रहे हरियाली' और 'नागफाँस के लिए घट भीतर' को नई आर्थिक नीति के प्रभाव और हिंदी उपन्यासों में उनके चित्रण की दृष्टि से विश्लेषित किया गया है। वैश्वीकरण, उदारीकरण, और निजीकरण ने समाज के विभिन्न पहलुओं

को प्रभावित किया है, और इसका प्रभाव साहित्य पर भी पड़ा है। डॉ. हरेराम सिंह ने यह बताया है कि नई आर्थिक समीक्षा के बाद हिंदी उपन्यासों में किस प्रकार से आर्थिक विषमताएँ, शहरीकरण, और ग्रामीण जीवन की समस्याएँ चित्रित की गई हैं। उन्होंने इस पर भी विचार किया है कि कैसे इन उपन्यासों ने समाज में नए तरह के संघर्षों और चुनौतियों का सामना करने का प्रयास किया है।

'इतिहास और परिवर्तन को रेखांकित करती कहानियाँ' अध्याय अनंत कुमार सिंह की उन कहानियों का विश्लेषण करता है, जो इतिहास और समाज में परिवर्तन की प्रक्रियाओं को दर्शाती हैं। ये कहानियाँ न केवल साहित्यिक दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं, बल्कि समाज में घटित परिवर्तनों को भी प्रतिबिंबित करती हैं। डॉ. हरेराम सिंह ने इस अध्याय में इतिहास के गतिशील स्वरूप और साहित्य में उसके प्रतिबिंब को रेखांकित किया है। उन्होंने यह दिखाया है कि कैसे कहानियाँ समाज के परिवर्तनशील चरित्र को समझने और उसे

अभिव्यक्त करने का माध्यम बनती हैं। यह अध्याय साहित्य और इतिहास के संबंध को गहराई से समझने का प्रयास करता है।

'वैदिक काल में वर्ग-संघर्ष का गवाह 'पहला-शुद्र' ' अध्याय में सुधीर मौर्य के उपन्यास 'पहला-शुद्र' का विश्लेषण किया गया है। इस विश्लेषण के माध्यम से डॉ. हरेराम सिंह ने यह दिखाया है कि कैसे भारतीय समाज में प्राचीन काल से ही जातिगत भेदभाव और सामाजिक असमानता का अस्तित्व रहा है। उन्होंने वैदिक साहित्य और उसकी विचारधारा को समाज के विभिन्न वर्गों के संघर्ष के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। यह अध्याय जातिगत भेदभाव के ऐतिहासिक पहलुओं को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

'जनवादी आलोचना का युवा-पाठ-रमेश ऋतंभर' अध्याय में जनवादी आलोचना के संदर्भ में युवा समीक्षक रमेश ऋतंभर के योगदान का विश्लेषण किया गया है। डॉ. सिंह ने ऋतंभर की साहित्यिक रचनात्मक कार्यों को जनवादी दृष्टिकोण से देखा है और उनकी आलोचना-पद्धति का विस्तृत विवेचन किया है। उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार ऋतंभर ने साहित्य को समाज के निचले तबके की आवाज़ बनाया और उनकी समस्याओं को साहित्यिक माध्यम से प्रस्तुत किया।

'इतिहास के पन्नों पर, हिंदी कविता में नारी चेतना' अध्याय में

"गांठ में बांधकर रुपए
निकलता हूँ घर से बाजार
और लौटता हूँ
एक छोटे से थैली में लेकर
सामान
जो पूरे नहीं पड़ते घर के
लिए
सिकुड़ती जा रही है जेब
बढ़ती जा रही है भूखा।"

अनिता नायर के शोधग्रंथ ' हिंदी कविता में नारी चेतना का विकास ' की समीक्षा की गई है जिसमें हिंदी कविता में नारी चेतना के उद्भव और विकास का विश्लेषण किया गया है। डॉ. हरेराम सिंह ने हिंदी साहित्य में नारी के अधिकारों, उनकी संवेदनाओं और उनके संघर्षों को रेखांकित किया है। "जहां स्त्रियां दर्प से स्नात हो गई हैं और इतिहास फक्र में सीना तान उनका महिमामंडन करने को बाध्य है।" (पृष्ठ-50) उन्होंने यह दिखाया है कि कैसे हिंदी कविता ने समाज में नारी के स्थान और उनकी समस्याओं को अभिव्यक्त किया है। यह अध्याय नारीवादी दृष्टिकोण से साहित्य को समझने में सहायक है।

' छायावाद, नई कविता और नवगीत पर एक आलोचनात्मक दृष्टि ' अध्याय डॉ. अमल सिंह 'भिक्षुक' की आलोचना-पुस्तक 'छायावाद, नई कविता और नवगीत' का आलोचनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। डॉ. हरेराम सिंह ने छायावाद के रहस्यवाद, नई कविता की यथार्थवादी दृष्टि, और नवगीत के जनवादी स्वर को परखा है। उन्होंने इन साहित्यिक आंदोलनों को सामाजिक और ऐतिहासिक संदर्भों में विवेचित किया है। यह अध्याय साहित्यिक प्रवृत्तियों के विकास और उनकी सामाजिक प्रासंगिकता को समझने में मदद करता है।

'अपने जमाने का दृष्टि संपन्न व प्रतिभाशाली उपन्यासकार कुशवाहाकांत ' अध्याय में कुशवाहाकांत के साहित्यिक योगदान का विवेचन है। डॉ. हरेराम सिंह ने कुशवाहाकांत के उपन्यासों को उनके समय के सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में प्रस्तुत किया है। उन्होंने यह दिखाया है कि कैसे कुशवाहाकांत ने अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज की समस्याओं को अभिव्यक्त किया और उनके समाधान के लिए समाज को दिशा देने का प्रयास किया। यह अध्याय कुशवाहाकांत के साहित्यिक दृष्टिकोण और उनके जनपक्षीय सोच को समझने में सहायक है।

'हिंदी साहित्य में ओबीसी साहित्यकार बनाफर चंद्र ' अध्याय ओबीसी साहित्यकार बनाफर चंद्र के साहित्यिक योगदान को उजागर करता है। डॉ. हरेराम सिंह ने हिंदी साहित्य में ओबीसी साहित्यकारों की स्थिति और उनके साहित्यिक योगदान का विश्लेषण किया है। उन्होंने यह दिखाया है कि कैसे बनाफर चंद्र ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के पिछड़े वर्गों की समस्याओं को आवाज दी। यह अध्याय हिंदी साहित्य में ओबीसी साहित्यकारों के महत्त्व और उनकी चुनौतियों को समझने का प्रयास करता है।

'गांव में कविता का वसंतोत्सव ' बनाफर चंद्र के कविता संग्रह ' कविता का वसंत ' की समीक्षा है। जिसमें ग्रामीण परिवेश और वहाँ की कविता के विकास का विश्लेषण किया गया है ; जहाँ --

" गाँठ में बांधकर रुपए
निकलता हूँ घर से बाजार
और लौटता हूँ
एक छोटे से थैली में लेकर सामान

जो पूरे नहीं पड़ते घर के लिए
सिकुड़ती जा रही है जेब
बढ़ती जा रही है भूखा।"

डॉ. हरेराम सिंह ने ग्रामीण जीवन के संघर्षों, वहाँ के उत्सवों और उनकी कविता को परखा है। उन्होंने यह दिखाया है कि कैसे गाँवों में कविता एक सांस्कृतिक माध्यम के रूप में विकसित हुई और समाज के विभिन्न पक्षों को प्रस्तुत किया। यह अध्याय ग्रामीण साहित्य और उसकी महत्ता को समझने में मदद करता है।

'प्रेम व मधुरता तीक्तका को जीतने वाला-कवि जगदीश नलिन ' अध्याय में कवि जगदीश नलिन के कविता-संग्रह ' साथ नहीं छोड़ता ' की प्रमुख कविताओं का विवेचन हुआ है। 'अनुष्ठान ' की फैटसी तो देखते ही बनती है-

" खंडहरों में सो गया इतिहास मेरा
कौन हूँ मैं ?

दीर्घ जीवन-सूत्र की अवहेलना कर
चेतना के क्रोड़ में चिरमौन हूँ मैं।"

डॉ. हरेराम सिंह ने नलिन की कविताओं में प्रेम, मधुरता, और समाज की समस्याओं को अभिव्यक्त किया है। उन्होंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि कैसे जगदीश नलिन की कविताएँ समाज की कठोर वास्तविकताओं के बावजूद प्रेम और मधुरता को जीवित रखती हैं। नलिन की कविताओं में समाज की विषमताओं और मानवीय संघर्षों के बीच प्रेम और सौहार्द की भावना को प्रमुखता से उभारा गया है। यह अध्याय नलिन के काव्य संसार और उनके साहित्यिक योगदान को समझने में सहायक है।

'वहशत से टकराती रामेश्वर प्रशांत की कविताएं ' अध्याय में रामेश्वर प्रशांत के कविता-संग्रह 'सदी का सूर्यास्त ' की कविताओं का विश्लेषण है। डॉ. हरेराम सिंह ने प्रशांत की कविताओं में निहित सामाजिक और राजनीतिक चेतना को उजागर किया है। 'बंदूकें यूँ ही नहीं तनती ' कविता का एक टुकड़ा -

" क्रांतिगीत यूँ ही नहीं गूँजते फिजाओं में

जब आदमखोर-रक्तपिपासु नोचते हैं

आदमी का मांस

पीते हैं रक्त

अपने वहशीपन में

खेलते हैं बहू-बेटियों की आबरू-अस्मत से खेल तभी।"

प्रशांत की कविताएँ समाज में व्याप्त वहशत, अन्याय और असमानता के खिलाफ विद्रोह का प्रतीक हैं। उन्होंने यह दिखाया है कि कैसे प्रशांत की कविताएँ एक संघर्षशील समाज की तस्वीर प्रस्तुत करती हैं, जहाँ मनुष्य अपनी अस्मिता और अधिकारों के लिए लड़

रहा है। यह अध्याय प्रशांत के काव्य संसार की गहराई को समझने का प्रयास है। "दलितों को मजबूत बनाती सोनकर की 'कफन'" अध्याय में दलित साहित्यकार सोनकर की कहानी 'कफन' का विश्लेषण किया गया है। डॉ. हरेराम सिंह ने इस कहानी को दलित चेतना और उनके संघर्षों के संदर्भ में प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद के 'कफन' और सोनकर के 'कफन' के तुलनात्मक अध्ययन के उनका निष्कर्ष है कि प्रेमचंद कहानी के सम्राट हैं। इसमें कोई शक भी नहीं है। रूप नारायण सोनकर की 'कफन' कहानी शैली में और अधिक गहराई मांगती है। सोच व समझ में सोनकर दलित साहित्य के झुकाव कहानीकार हैं।" मेरी दृष्टि में, सोनकर की 'कफन' एक ऐसी कहानी है जो दलित समाज की पीड़ा, उनके संघर्ष, और उनकी मजबूती को उजागर करती है। डॉ. सिंह ने दिखाया है कि कैसे सोनकर ने अपने साहित्य के माध्यम से दलितों के अधिकारों और उनकी समस्याओं को समाज के सामने रखा। यह अध्याय दलित साहित्य के महत्व और उसकी सामाजिक प्रासंगिकता को समझने का प्रयास करता है।

"साहित्य का दक्षिणीधूर, कबीर विरोधी" अध्याय में डॉ. हरेराम सिंह ने ब्रह्मेश्वर नाथ तिवारी के आलेखों के आधार पर हिंदी साहित्य में दक्षिणी धारा और कबीर के विचारों का विरोध करने वाले साहित्यिक प्रवृत्तियों का विश्लेषण किया है। उन्होंने दिखाया है कि कैसे साहित्य के दक्षिणी धारा ने कबीर के जनवादी विचारों के विपरीत विचारधाराओं का समर्थन किया और समाज में विभाजन और असमानता को बढ़ावा दिया। यह अध्याय कबीर की जनवादी सोच और उसके विरोध में खड़ी साहित्यिक प्रवृत्तियों का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है।

'रोहतास की साहित्यिक उर्वर-भूमि और ओबीसी साहित्यकार' अध्याय में डॉ. हरेराम सिंह ने रोहतास जिला की साहित्यिक धरोहर और वहाँ के ओबीसी साहित्यकारों - डॉ. राजेंद्र प्रसाद सिंह, डॉ. ललन प्रसाद सिंह, बनाफर चंद्र, बृजनंदन शर्मा, सीडी सिंह, राम लखन विद्यार्थी, डॉ. अमल सिंह 'भिक्षुक', संतोष कुमार सिंह, कविराज सिंह, रामकृष्ण यादव और धर्मेन्द्र कुमार के साहित्यिक योगदान का विश्लेषण किया है। उन्होंने यह दिखाया है कि कैसे रोहतास की साहित्यिक भूमि ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया और ओबीसी साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज के पिछड़े वर्गों की आवाज को उठाया। यह अध्याय रोहतास जिला के साहित्यिक महत्व और वहाँ के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकारों के योगदान को रेखांकित करता है।

'बदलाव की कहानी और प्रतिपक्ष' अध्याय में नीरज सिंह के कहानी-संग्रह 'प्रतिपक्ष तथा अन्य कहानियाँ' के कतिपय कहानियों की अध्ययन परक समीक्षा प्रस्तुत की गई है जिसमें हो रहे सामाजिक और साहित्यिक परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। डॉ. हरेराम सिंह ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि कैसे समाज में होने वाले बदलाव

साहित्य में परिलक्षित होते हैं और साहित्य किस प्रकार से प्रतिपक्ष की भूमिका निभाता है। उन्होंने साहित्य को समाज का दर्पण मानते हुए यह दिखाया है कि कैसे साहित्यिक कृतियाँ समाज के प्रतिरोध और संघर्षों को अभिव्यक्त करती हैं। यह अध्याय कहानी साहित्य के सामाजिक परिवर्तन की भूमिका को समझने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

'विश्व साहित्य में नाविक व कला-संबंधी अन्य विचार' अध्याय में विश्व साहित्य के संदर्भ में नाविक और कला-संबंधी विचारों का विश्लेषण किया गया है। डॉ. हरेराम सिंह ने यह दिखाने का प्रयास किया है कि कैसे विश्व साहित्य में नाविक प्रतीक के रूप में समाज के संघर्षों और चुनौतियों को दर्शाता है। उन्होंने कला के विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए यह दिखाया है कि साहित्य और कला कैसे समाज को नई दिशा देने में सहायक होते हैं। यह अध्याय विश्व साहित्य केवट और कला के बीच के संबंधों को समझने का प्रयास करते हुए हिंदी गद्य का विकास, जाति-चोरी और हिंदी साहित्येतिहास, दो नाटक, चौदह का नौ अक्टूबर और भोजपुरी गीत पर भी प्रकाश डालता है। 'जन-संघर्ष एवं साहित्य' इस पुस्तक का अंतिम अध्याय है। इसमें डॉ. हरेराम सिंह ने डॉ. ललन प्रसाद सिंह से साहित्यिक संवाद करते हुए जन-संघर्ष और साहित्य के सापेक्ष अन्तर्संबंध को आलेखित किया है। उन्होंने यह दिखाया है कि कैसे साहित्य जन-संघर्षों का हिस्सा बनता है और किस प्रकार से साहित्य ने समाज में बदलाव लाने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह अध्याय डॉ. ललन प्रसाद सिंह के विचारों के आलोक में साहित्य को समाज के संघर्षों और उसके विकास के संदर्भ में समझने का एक समग्र प्रयास है।

कुल मिलाकर 'हिंदी आलोचना का जन पक्ष' हिंदी साहित्य के आलोचना क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण पुस्तक है। डॉ. हरेराम सिंह ने इस पुस्तक के माध्यम से हिंदी साहित्य को समाजवादी दृष्टिकोण से परखने और समझने का प्रयास किया है। उन्होंने साहित्य को समाज का दर्पण मानते हुए, उसमें निहित सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों को उजागर किया है। यह पुस्तक उन सभी पाठकों के लिए अनिवार्य है जो हिंदी साहित्य और उसकी आलोचना के क्षेत्र में गहरी रुचि रखते हैं और साहित्य और समाज के बीच के संबंधों को समझना चाहते हैं। इस तरह यह न केवल साहित्य के विभिन्न पहलुओं को समझने में सहायता करती है, बल्कि समाज और साहित्य के बीच के जटिल संबंधों को भी उजागर करती है।

डॉ. अमल सिंह 'भिक्षुक'

१३३/३० भारती गंज

सासाराम-८२१११५

रोहतास (बिहार) मोबाइल-९१३५७०४८००



दीपोत्सव संदेश

अंधकार पर जीत हित, जलते दीप सगर्वी
देता जय - संदेश शुभ, दीपावलि का पर्वी

'तमसो मा ज्योतिर्गमय', सारस्वत युग - धर्मी
सद्प्रवृत्तियों से जुड़ा, दीपमालिका - मर्मी

वनवासी प्रभु रामसिय, बिता चतुर्दश वर्षी
घर लौटे साकेत जब, दीपक जले सहर्षी

मिटे अंधेरा हृदय का, फैले दिव्यालोका
जनजीवन से दूर हो, भूख, रोग, भय, शोका

देती मानवमात्र को. दीपावलि संदेश ।
गति प्रकाश की ओर हो, त्याग छल कपट वेश।

अमा रात्रि में दीप मिल, करते चेतन - यज्ञ।
मर्म समझ संदेश का, मानव बने गुणज्ञ।

दीपोत्सव संदेश है, साथ चलें, सुख ओरा
सबके जीवन में सहज, आए नूतन भोरा

सर्वे सन्तु निरामया, सर्वे सुखिनः सन्तु ।
जोड़ें ज्ञान - प्रकाश से, स्नेहिल जीवन - तन्तु।

बने दीप मानव स्वयं, करे अंधेरा दूर।
अन्यायी की एकदिन, सत्ता होगी चूर।

शुभ संकल्पों के लिए, दीपोत्सव वरदान।
आलोकित होकर स्वयं, दूर करें अज्ञान।

आओ! हम मिलकर चलें, शुभ प्रकाश की ओरा
नव ऊर्जा से काट दें. तम - पतंग की डोरा

बिजली के सम्मुख कभी, भले न कुछ लघु दीपा
परम्परावश एक दिन, बन तो गए महीपा

रुई की बाती तेल सँग, मिलें-जलें शुभ दीपा
भयवश पास न आ सके, तम बलवान महीपा

सिद्धि मिले संकल्प से, साधक दीप अनन्या
ज्योति हेतु बलिदान दे, करता जीवन धन्या

दीप धन्य हैं साधु सम. करते दिव्य प्रकाशा
सूर्य - चंद्रमा से बड़ा, उनका मन - आकाशा

बाह्य तिमिर से भी घना, अंतरतम अज्ञान।
दोनों पक्ष प्रदीप्त हों, फले ज्ञान - विज्ञान ।

महानगर के साथ ही, ज्योतित हों सब गाँवा
निर्बल, निर्धन, दुखित पर, चले न तम का दाँवा

राम अयोध्या में बसे, विग्रह लें पहचाना
उन्हें बसा लें हृदय में, दिव्य रूप में माना

ज्योति पर्व पर दीपगण, गाते स्वागत गाना
ज्ञान देवि! माँ दीजिए, प्रज्ञा का वरदान।

जगमग में भूलें नहीं, मानवता का अर्थी
कुम्भकार के हाथ की, कला न जाए व्यर्थी

खेल - खिलौने क्रय करें, रखें कला का मान।
शिल्पकार को मिल सके, रोटी का सामान।

छलकाओ अमृत कलश, धन्वन्तरि भगवान।
जन - जन को बल - बुद्धि दे, आयुर्वेद महान।

लक्ष्मी धन - वर्षा करें, हो प्रसन्न संसारा
भूखे को रोटी मिले, हाथों को व्यापारा

भले पटाखे फोड़िए, इतना रखना ध्याना
निर्धन की भी झोपड़ी, रहे नहीं सुनसान।

ज्योति - पर्व की सीख है, चलें प्रकृति के साथ।
स्वच्छ स्वस्थ वातावरण, रखना अपने हाथ।

धन त्रयोदशी शुभ दिवस, क्रय कर लें सामान।
हो अभाव की पूर्ति जब, घर हो स्वर्ग समान।

भैया दूज सुपर्व है, भाई - बहिन का प्यारा
रोली - अक्षत से बढ़े, सिद्धि - समृद्धि अपार ।

सुख, धन और समृद्धि के, शुभ सूचक त्यौहारा
जन - मन को जोड़े रखे, आत्मीय व्यवहारा

गौरीशंकर वैश्य विनम्र

117 आदिलनगर, विकासनगर, लखनऊ 226022

‘कोशिशों के पुल’ और उससे गुजरना

समय के साथ साथ काव्य का भी मंतव्य और लक्ष्य का बदलना बहुत जरूरी होता है, वर्तमान समय को दर्ज करने के लिए !

आज का समय जितना क्रूर है, उतना ही अश्लील भी, संवेदनशून्य है, तो उत्पीड़क और दुर्दांत हिंसक भी ! शास्त्रीय स्थापनाओं से भी बहुत अपेक्षा नहीं है, इस काल की कविताओं का गीतों का विशाल फ़लक और स्वतंत्र अभिव्यक्ति ही इसे आवाज दे सकती है, आवश्यक शिल्प के साथ बहुत से पारंपरिक बंधन को ढीला भी करना पड़ेगा, इसीलिए निराला जी ने मुक्त छंद की अवधारणा प्रस्तुत की थी, आजकल के समय में तो कविता गीत गज़ल आदि काव्यात्मक विधाएँ अपनी पूरी धार के साथ बेबाक़ रवानी में बह रही है, जीवन के विहंगम परिदृश्य को समेटते हुए यह अजस्र धारा, प्राणवान भी है और अत्यंत प्रवाह पूर्ण भी।

निरंकुश तो मनुष्य सदा से रहा, पर आज टेक्नोलॉजी ने उसकी हिंसक प्रवृत्ति को बेपनाह ताक़त दे दी है, अश्लील और श्लील का अर्थ समाप्त हो चुका है, सीमाओं के अतिक्रमण का यह एक अनोखा बलात्कारी समय है, जो हमसे हमको ही छीनता जा रहा है, बाज़ारवाद ने करुणा और प्रेम, विश्वास और ईमानदारी के हाथ पाँव काट दिये हैं, यह अपंग भावनाएँ घिसट घिसट कर चलने को बाध्य हैं, जो मनुष्य कहीं न कहीं इन दुर्घटनाओं से अभी तक बचा भी रह गया है, वह व्यंग्य और हँसी का, कटाक्ष और घृणा का पात्र है, और उसे सभ्य जगत में मूर्ख समझा जाता है, फिर भी आज की कविता में गीतों में यह आम आदमी लगातार दर्ज हो रहा है, उसकी पेशानी के सारे बल नोट कर रही है, आज की कविता, अपनी हर विधा में ! पिछले लगभग साठ वर्षों से नवगीत ने नई कविता को काव्य साहित्य के मानदंडों पर समानता के स्तर पर सबसे बड़ी चुनौती दे रखी है, अपने कथ्य की कसावट और वैविध्य पूर्ण समदृष्टि के कारण !

देवेन्द्र कुमार ‘इंद्र’ की प्रतिस्थापना नवगीत के विषय में बहुत संतुलित

और सुगठित है-

‘ उसकी आँखों में आस्था और जिजीविषा के धूप मंडित पलाशों की गुलाबी गरमाहट है, तो उसकी पसलियों के भीतर करवटें लेते हुए इंक्रलाब की एक जादुई झनझनाहट भी है नई कविता अगर भीड़ और अकेलेपन के बीच की मरीचिका है, तो नवगीत को मैं अस्तित्व और अस्मिता के फ़ासलों पर रचा गया, ध्रुवांत व्यापी क्षितिज सेतु कहना अधिक पसंद करूँगा’

इसी के साथ एक प्रश्न यह भी है, कि हम किसी कृति की आलोचना क्यों करते हैं ?

आलोचना वह काव्य शास्त्रीय सैद्धांतिक प्रक्रिया है, जिससे हम किसी रचना का निचोड़ और उसके रचे जाने के पीछे की खदबदाहट समझने की कोशिश करते हैं। उस रचना का सामाजिक संदर्भों में क्या मूल्य

है, वह भविष्य के गर्भ में छुपी तमाम सम्भवनाओं का कितना कुछ संज्ञान लेती है !

इतिहास की करवटों में भी वो तमाम पन्ने होते हैं, जो मनुष्य को मनुष्य बनाने के लिए अपनी बाहें फैलाते हैं, सुदूर नभ के तारामंडल में अज्ञात आकाशगंगाओं से भी वार्तालाप करती कविताएँ मनुष्य की चेतना और और परिकल्पनाओं की बँधी गाँठें खोलती हैं, स्वीकार अस्वीकार मनुष्य की दोनों मनःस्थितियों में उसे निर्विकार रहना सिखाती हैं, सरल भाषा में कहें तो मनुष्य को मनुष्य बनाती है कविता !

मेरे कविता कहने के अर्थ में काव्यात्मक सभी रूपों की ध्वनियाँ सम्मिलित हैं। डा० कपिल देव कहते हैं कि ‘कविता के मौन और खालीपन के प्रश्नों के संदर्भ तलाशने का दायित्व आलोचना निभा रही है आज क्षिप्र परिवर्तनों और अकल्पनीय उत्पादकता की तुलना में मनुष्य की आत्मसात्करण की शक्ति बहुत पीछे छूट गई है, ज्ञानात्मक विस्तार के बावजूद कवि की संवेदना का लोकेल बहुत छोटा है, पूँजी और

बाज़ार के हमलों की जद में स्वयं मनुष्य का अन्तर्जगत भी आ चुका है, उत्तरवर्ती चरण में पूँजी ने बाहर से हटा कर हमलों को मनुष्य के भीतर शिफ्ट कर दिया है नए समाज की सुविधाएँ भोगते हुए हम



डॉ. रंजना गुप्ता

विरोध की नक़ली मुद्राओं की कवितायें लिख रहे हैं।सैमसंग का फ़्रिज यूज करते हैं,और बाज़ारवाद को गाली देते हैं।आरंभिक विद्रोहों की तीव्रता अपनी धार खोकर क्रमशःकुंद होती गई।विद्रोहों को रस्सी बना कर उन्हें पूंजीवाद ने अपने सुरक्षा कवच में,बदल लिया।(नयी सदी की हिन्दी कविता का दृष्टि बोध- अजित कुमार राय)

गरिमा सक्सेना का यह नवगीत संग्रह विश्व अपने वैविध्यपूर्ण सामयिक कथ्य और भाव बोध के कारण नवगीत की नई पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करता है।गरिमा सक्सेना अपनी उम्र से कहीं अधिक परिपक्व गीतकार हैं दोहाकार हैं,और उससे भी अधिक वे शिल्पकार कार है,जन चेतना की,सामयिक द्वंद्वात्मक परिवेश के संतुलन की ! इनके गीतों का मानवीय पक्ष बहुत उजला है,गरिमा स्त्री विमर्श के वितान तले मात्र स्त्री विमर्श ही नहीं रचती, वे संपूर्ण मानवता की पीड़ा को अपने शब्दचित्र में ढाल कर सजीव बिंब ऐसे उकेरती हैं,कि संवेदनाओं का स्वर वाचाल होने लगता है।

वास्तव में आज हम नवगीत के नाम से जिस गीत की विधा को स्थापित कर चुके हैं,वह वास्तव में आजतक के मानवता के उद्धार की सबसे बड़ी शब्दांजलि है,

मधुकर अष्टाना जी इसी संवेदना की व्याख्या इस तरह करते हैं, कि 'संवेदना जब अभिनव प्रतीक-बिम्बों को सहज रूप से सटीक प्रयोग कर अपने समय की विविध सामाजिक समस्याओं एवं विषम परिस्थितियों से जूझते साधारण जन के जटिल जीवन संघर्ष को न्यूनतम शब्दों में छान्दसिक गेयता के साथ मार्मिक रूप में परिणत होती है, तो नवगीत की सृष्टि होती है।'

गरिमा सक्सेना का एक बिंब प्रकृति को लेकर इस तरह से व्यक्त होता है-

'पत्तियों की छन्नियों से छान रही है धूप/ दिख रहा पगडंडियों का अब सुनहरा रूप / गढ़ रहीं है नवल कल का पुस्तकें प्रारूप'
नये प्रतीक और बिंब उनमें कथ्य की कसावट के साथ ही शैल्पिक सौष्ठव भी प्रखर है-

'चूहे जैसा कुतर रहा है वक्रत पुराने चित्र / यादों की अलमारी में अब कुछ ही कतरन शेष / उनमें भी बस वही बची हैं / जो थीं बहुत विशेष / मतभेदों की सीलन भी थी दीमक की घुसपैठ /और व्यस्तताओं ने मन पर इतनी डाली ऐंठ / अनजानी सूरत से लगते सभी पुराने मित्र'
जीवन की जटिल स्थितियाँ शायद आज मनुष्य के वश में नहीं हैं,उत्तरजीविता के सारे प्रयास लड़खड़ा रहे हैं -

'पढ़े हुए अखबाओं को हम बार बार पढ़ते / पीछे हटना चुना हमेशा कैसे आगे बढ़ते'

मनुष्य ने अपनी उड़ानों को पंख तो दिये, पर उन्हें साधना भूल गया, तभी तो उसे अब ज़मीन पर आने में इतनी कठिनाइयाँ आ रहीं हैं-

'उड़ते उड़ते पंछी कितनी दूर निकल आया/ नदिया पनघट पगडंडी चौपालें छूट गई / अमिया बरगद पीपल की वो डालें छूट गई / सिर्फ धूप ही धूप मिल रही /नहीं कहीं छाया'



नवगीत

हाँफ रही धरती

सूरज आँख तड़ेरे
हाँफ रही धरती

हवा फेकती आग अभी
साँसों की देह गरम
है कठिन निकलना घर से
हुआ सूरज बेशरम
चर रहीं सूर्य-किरणें
वन, तड़ाग, परती

ले साँसों की आग अभी
पक जाती है रोटी
जिह्वाग्र निकाले कुतिया
हाँफ छाँव में लोटी
हवा न पंखा झलती है
आग कंठ से झरती

सन्नाटों का राज अभी
सबको मारा लकवा
बाट-घाट, हर बातों का
है शून्य अभी रकवा
हलचल जड़-चेतन की
त्राहिमाम करती

मार्तण्ड

प्रधान संपादक " संवदिया " (साहित्यिक पत्रिका)
बंगाली टोला, फारबिसगंज-854318 (बिहार)
मो: 9973269906

जिंदगी को एक नवगीत में गरिमा ने बहुत दार्शनिक अन्दाज़ में उकेरा है, वे जिंदगी को श्वेत श्याम कह कर उसके दुख सुख को परिभाषित कर रही हैं, पर परिकल्पना भी तब आहत हो जाती है, जब आगे बढ़ कर वे इस नवगीत में आज के समय की त्रासदी घोल देती हैं—

‘रंग सारे उड़ गये शायद हवा में/ जिंदगी फिर श्वेत श्याम हो गई / अब दुआ में भी मिलावट हो रही है और दवा लगता हलाहल हो गई है ‘
गरिमा जनसरोकारिता को बहुत शिद्दत से अपने नवगीतों में धार देती दिखाई देती हैं, क्योंकि एक यही तथ्य है, जो कविता को, गीत को किंबहुना समस्त साहित्य को, मनुष्य के जीवन में एक बहुत ऊँचा सिंहासन देता है, हाशिये पर पड़े हर व्यक्ति का दुख जब तक कविता के गीत के आँचल को न भिगोयेगा, तब तक कविता कविता न होगी गीत गीत न रहेगा—

‘मजबूरी ही पैदल चलती सिर पर लादे धूप / आतों में अंगारे रख कर चलते जाते पाँव / लेकिन इनको भान नहीं / अब बदल चुका है गाँव / लाचारी उम्मीदें हारी / नहीं कहीं भी ठाँव’

आस्थाहीन मूल्य हीन होते समाज की निर्भीक आलोचना करती गरिमा की लेखनी भविष्य में और भी प्रखरता से अपनी बात कहेगी, ये विश्वास और आस गरिमा की इन पंक्तियों से भी झलक रहा है —

‘व्यर्थ इनसे जिंदगी की आस रखना / ये हवाएँ आस की हर श्वास छीनेगी’

दो पीढ़ियों का द्वन्द बहुत पुरातन समस्या है, आज यह समस्या और भी विकराल इसलिए हो गई है, कि आज दोनों ही पीढ़ियों में सहन शक्ति और धीरज का अभाव, लालच की पराकाष्ठा दिखाई देती है, अंध स्वार्थ और विलासिता पूर्ण जीवन शैली की उच्छृंखल चाह आज के नवजवानों को पथभ्रष्ट कर रही है, वर्तमान के बहुत से सुलगाते सवाल्लों के बीच एक यह भी सवाल आज चिंगारियाँ बिखेर रहा है—

‘पीढ़ी दर पीढ़ी टकराते मतभेदों के पहिये/ कौन सही है कौन गलत है किसकी साइड रहिये ?

शांति चाहे वह विश्व स्तर पर हो, या राष्ट्रीय स्तर पर, या सामाजिक पारिवारिक किसी भी स्तर पर हो, उसकी उम्मीद आज बहुत क्षीण हो चुकी है, लिप्सा और घृणा का जो बाज़ार हमने अपने आसपास सजाया है वो हमें ही नष्ट भ्रष्ट कर रहा है, पर ये हम कब समझेंगे?—

‘शांति का पथ अब अकेला पड़ गया / जी रहें हैं आज कैसी सन्धियाँ/ फैलती ही जा रहीं है आग बन कर ये सियासी तितलियाँ ‘

मुझे लगता है, गरिमा ने कोटा शहर में कोचिंग सेण्टर के बच्चों द्वारा की जा रही लगातार हताशा भरी आत्महत्याओं को भी रेखांकित किया है, माँ बाप की दमित आकांक्षा पूर्ति का भयावह लक्ष्य बेचारे मासूम बच्चे बन रहे हैं, इस दारुण परिपेक्ष्य में गरिमा की पंक्तियों में एक चेतावनी सी छुपी है—

‘उम्मीदों की जंजीरों का बढ़ता रोज दबाव / डर कर साँसे छोड़ रहा है

अब जीने का ख्वाब / छूट रहें है कोरे पन्ने लेकर काला अंत / रोज हो रही साँसों की असमय बन्द किताब’

कबीर का नाम अपनी बेबाक्री, निर्भीकता और जिंदादिली के लिए सदा याद जाएगा, उस भयावह अंधे युग में जहाँ वैचारिककट्टरता हर कहीं हावी थी, वैसे युग में भी अपनी साफ़गोई और खरी खरी कहने के लिए पहचाने जाने वाले कबीर, आज बहुत से लेखकों और कवियों के आदर्श हैं, गरिमा भी उन्ही रचनाकारों की अगली कड़ी हैं—

‘हम जिंदा हैं हममें जिंदा रहा कबीर/ हम जिंदा है हमने सही परायी पीर’

आज हवा, जल आदि प्राकृतिक पर्यावरण प्रदूषण के चरम पर है। जहर साँस साँस में घुल चुका है, आये दिन पर्यावरण प्रदूषण से होने वाली मौतों में वृद्धि होती ही जा रही है—

‘नदी बची तो वह सबको बतलायेगी / हर पल यहाँ असभ्य हुई किस तरह सभ्यता’

गरिमा का इस पुस्तक का हस्ताक्षर गीत है, ‘कोशिशों के पुल-वे संकल्पित हैं, कि किसी भी परिस्थिति में वे सार्थक बदलाव के लिए होने वाली कोशिशों को नहीं छोड़ेगी—

‘पार करनी है हमें विद्रूपताओं की नदी / हम नये बदलाव का संकल्प ले आगे बढ़े/ कोशिशों के पुल गढ़ें’

सागर के रूपक से गरिमा ने एक बहुत करुण विमर्श को ज़मीन दी है, मुझे यह नवगीत व्यक्तिगत स्तर पर सबसे अधिक आकृष्ट कर रहा है, मन का गीलापन तो कभी शायद ही सूखे, पर हम उसके दर्द को तो व्याख्यित कर ही सकते हैं, यही गरिमा भी कह रहीं है इन नवगीत में अपनी पीड़ा को शब्द देते हुए—

‘अच्छे भले नदी थे / लेकिन सागर होकर पछताए / हमने खाली अंजुलियों को मोती सीपी शंख दिये हैं / अपनी सीमाओं में रह कर सबकी खातिर रोज़ जिए हैं / सबने हममें लाकर घोला है नित अपने अवसादों को / चंचल नदियों ने सौंपा है आकर अपने उन्मादों को / सबका खारापन पी पी कर निष्ठुर खारे कहलाये हम’

वर्तमान जिंदगी में बहुत सी असंगतियाँ हैं, पर एक असंगति बेहद तकलीफ़ देती है, वह है भागती दौड़ती जिंदगी ! बैचन से हम सब जाने कहाँ जा रहें हैं, कौन सा खज़ाना लूटने के लिए यह भीड़ भागती जा रही है, अपनी साँसों को भी ख़तरे में डालती हुई हर पल—

‘जी रहें हैं रोज़ ही हम एक भागम भाग/ बुझ न जायें कहीं खुद में इक ज़रूरी आग’

गरिमा का एक कोमल सा नवगीत पढ़ कर मुझे बाल्मीकि रामायण का एक श्लोक याद आ गया—

‘हारम न रोपितम कंठे यनम्या विश्लेष भिरूना
साम्प्रतम् तुव आवयोरमध्ये सरितसागरभूधरा’(अर्थ कहना)

कुछ कुछ इसी भाव की व्यंजना है यह नवगीत—

‘बिना नमक की सब्ज़ी सा था फीका फीका दिन / मीत तुम्हारे बिन /

मन का मानसरोवर गुमसुम चुप चुप सा ठहरा / लहरों की आवाजाही पर नींदों का पहरा / नहीं चली पुरवाई कोई पेड़ नहीं झूमा / बिना तुम्हारे मुस्कानों ने ज्यों पारा चूमा/ बिना तुम्हारे मन मरुथल में उड़ती थी रेती/ मुरझाई खुशियाँ जैसे बिन पानी की खेती'

मनुष्य आज लालसा, नफ़रत और वैमनस्य की आग में जलता हुआ आज कहाँ से कहाँ तक पहुँच चुका है, शांति का संदेश देती पृथ्वी का जीवन चक्र अब लगभग पूरी तरह बिगड़ चुका है, हमें नहीं पता अब हम या मनुष्य जाति कब तक इस पृथ्वी पर जीवित है, मनुष्यों के साथ साथ नानाजीव जंतुओं की विशाल श्रृंखला और जड़ चेतन अन्यान्य वनस्पतियाँ भी, सागर और नदियाँ भी कब तक हमारे साथ हैं ? इसी पीड़ा को व्यंजित करती गरिमा के नवगीत की कुछ पंक्तियाँ —

‘अपनी गरिमा अपना अपना है अस्तित्व हमारा बने रहो तुम आसमान हम तो धरती हैं / सच है तुमको छूने को चिड़िया उड़ती है / किसकी आँखें तुमको यूँ टकती रहती हैं’

और ‘ग्रह युद्धों से धर्म युद्ध तक हार रहा उजियारा/ बंद बैरकों में बंदी है मानवता के मानक / धू धू कर जलती इमारतें / दिखते दृश्य भयानक / चारों ओर दिखाई देता बस विक्षिप्त नजारा’

बौद्धिक विमर्शों के साथ ही भावनात्मक और सामाजिक विमर्शों के नये हथियार लेकर उपस्थित यह संग्रह अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। शिल्प की भलीभाँति कसावट के साथ ही कथ्य के स्तर पर इस संग्रह में कुछ नवगीत अति सामान्य पृष्ठभूमि में रचे जाने के कारण अधिक प्रभावी नहीं भी बन पड़े हैं। और कहीं कहीं कथ्यात्मकता की पुनरुक्ति भी भावक के रसास्वादन में व्यतिक्रम डालती है। गरिमा सक्सेना को नवगीत के भविष्य ने उम्मीदों की एक फ़ेहरिस्त सौंप रखी है। जिसे पूरा करने के लिए उन्हें स्वयं को और भी तपाना होगा। निखारना होगा।

डा० भगीरथ मिश्र ने ऐसे ही साहित्यकारों के संबंध में कहा है ‘साहित्य एक सामाजिक यानी समाज के हेतु की गई सृष्टि है, अतः उसमें अपनी वैयक्तिक दुःखानुभूति को, सामाजिक धरातल पर, सामाजिक संवेदना के रूप में, प्रकट करना अधिक उत्कृष्ट है। इस प्रसंग में गोस्वामी तुलसीदास और प्रेम चंद का नाम लिया जा सकता है। इन दोनों के समान दुःख और निराशा पूर्ण परिस्थितियाँ और किसी की क्या होंगी ? या हो सकती हैं ? फिर भी इनके साहित्य में सामाजिक तत्व इतने उदात्त और शुभ्र रूप में प्रतिफलित हुए हैं, कि इनकी रचनायें हमारे लिए आदर्श का काम करती हैं।’

गरिमा सक्सेना नवगीत में नई पीढ़ी का एक समृद्ध नाम है। गरिमा ने सफलता पूर्वक दोहा संग्रह का भी संपादन किया है, और उनके दोहे भी अप्रतिम हैं। यह ‘नवगीत संग्रह उनकी संभावनाओं का भी एक और पुल है, जो अपनी उत्कृष्ट कहन और शिल्प के लिए भी जाना जायेगा, मेरी अनंत शुभकामनाएँ गरिमा को !

डा० रंजना गुप्ता , लखनऊ, 9936382664



संगी-साथी

गाँव की धूल में
खेत-खलिहान में
सरकारी स्कूल में
पढ़ते-पढ़ते
पता नहीं चला कि
कब बड़े हो गए।
धीरे-धीरे
रिश्ते आने शुरू हुए
शादी हुई, बच्चे हुए
और शुरू हुई घर की चिंता।
इन्हीं की तलाश में
छूट गया सब कुछ।
गाँव, घर
खेत, परिवार
दादा-दादी
और छूट गए
सब संगी-साथी।
कुछ जीवन में दुबारा मिले ही नहीं
और कुछ मिले तो
केवल स्मृतियों में।

विकास कुमार शर्मा

35/338, शिवपुरी-बी, सर्वोदय स्कूल के पीछे
गंगापुर सिटी, जिला-गंगापुर सिटी (राजस्थान)
ईमेल पता-vikasg82@gmail.com
फोन नम्बर-07665150750

आज का श्रवण कुमार



सविता चड्ढा

सो

मनाथ का भव्य मंदिर, समुद्रतट पर बना है, समुद्र की लहरें बार-बार मंदिर को छूने की कोशिश कर रही थी और लहरों का यह उठान हर पल पर्यटकों को आकर्षित कर रहा था। तभी एक बूढ़ी औरत व्हील चेयर पर अकेली बैठी समुद्र की लहरों, ठंडी हवा और संगीत का आनंद ले रही थी। मैं उनसे कुछ पूछना चाहती था तभी अचानक एक युवक आया और उनकी व्हील चेयर को धक्का देकर वहां ले गया जहां कुछ ही देर में लाइट एंड साउंड कार्यक्रम शुरू होने वाला था। एकमात्र महिला जिसे मैं देख सकी व्हीलचेयर पर थी। मैंने देखा कि युवक ने व्हील चेयर को आगे ले जाकर रोक दिया। हालाँकि मैं पीछे बैठी था लेकिन मेरी नज़र इसी महिला पर थी। मैं इस महिला से कुछ जानना चाहती थी। लाइट एंड साउंड कार्यक्रम शुरू हो चुका था। समुंद्र की ठंडी लहरें और तेज़ हवाएं हमें जून महीने की गर्मी का एहसास नहीं होने दे रही थीं। खुले में बना पूरा सभागार खचाखच भरा हुआ था। इस लाइट एंड साउंड कार्यक्रम में देश भर से लोग सोमनाथ के भव्य मंदिर का इतिहास देखने आए थे। अमिताभ बच्चन की आवाज़ में बताया जा रहा था सोमनाथ

का इतिहास। 25 मिनट बाद शो खत्म होने पर सैकड़ों लोग एक साथ खड़े हो गए। मैंने उसी युवक को व्हील चेयर चलाते हुए मंदिर से बाहर जाते देखा। मैं जानना चाहती था कि यह औरत कहाँ से आयी है और यह युवक कौन है। अभी दो दिन पहले ही मैंने इस महिला को द्वारिकाधीश के मंदिर में दर्शन कराते हुए देखा था, तब भी यही युवक इस महिला को अलग रास्ते से दर्शन कराने ले जा रहा था। मैं एक लंबी कतार में खड़ी थी। इसलिए उस दिन भी मेरी उनसे बात नहीं हो पाई। आज मुझे उससे पूछना ही है, मुझे नहीं पता कि कल क्या होगा।

मैंने अपने परिवार को पीछे छोड़ दिया और तेज तेज चलने लगी। इस भव्य और विशाल मंदिर से बाहर निकलने का काफी लंबा रास्ता था। मैं वहील चेयर के पास पहुंच गई। जूते लेने वाले स्थान पर व्हील चेयर को रोककर वह युवक अपने जूते लेने के लिए चला गया। यही अवसर था। मैंने उस महिला से पूछा "माता जी आप कहां से आए हैं।"

"दिल्ली से" उस महिला ने मुझे देखते हुए उत्तर दिया।

"आपके साथ ये कौन है" मैंने जाते हुए युवक की ओर इशारा किया।

"वह मेरा बेटा है, दिल्ली में पुलिस का आला अफसर है।" वृद्ध के चेहरे पर बहुत खूबसूरत





मुस्कान थी।

"आपको दिल्ली से यहां आने में कोई दिक्कत तो नहीं हुई" मैं कुछ और भी जानना चाहती थी।

"नहीं बेटा, कोई दिक्कत नहीं हुई, दिल्ली से अहमदाबाद तक हवाई जहाज से फिर एयरपोर्ट से ही इनोवा कार से हम लोग चल रहे हैं। मेरे साथ मेरा बेटा, बहु है।" वृद्धा शांत और प्रसन्न दिख रही थी। मुझे हैरानी हो रही थी आज के समय में बुजुर्ग मां जो ज्यादा चल भी नहीं सकती, उसे लेकर यात्रा के लिए आना।

मैंने पूछ लिया "आपका बेटा आपको साथ लाकर परेशान तो नहीं है ना।" मैंने देखा वृद्धा हंसने लगी थी। वह बोली "पिछले दिनों मैंने यूं ही कह दिया था तुम्हारे पापा ने तो कभी मुझे जहाज की सैर नहीं कराई, भगवान के पास जाने से पहले मुझे एक बार भगवान के दर्शन तो करा दे।" बस मेरा इतना ही कहना था कि इसने द्वारका नगरी के दर्शन कराने के लिए अहमदाबाद तक की जहाज की टिकट करा दी थी। मैंने भेंटद्वारका देखी, वह स्थान देखा जहां सुदामा ने श्री कृष्ण को चावल भेंट किए थे। द्वारकाधीश का मंदिर दिखा, रुक्मिणी मंदिर के दर्शन कराए बेटे ने। अगले दिन इनोवा से ही हम सोमनाथ का मंदिर देखने आ गए हैं। द्वारका से 240 किलोमीटर दूर.... थकान तो हुई है पर रास्ते भर समुद्र के किनारे रुकना, खाना, ठहरना, कोई थकान नहीं, बस थका तो मेरा बेटा है जो मेरी व्हील चेयर को धकेलता रहा।"

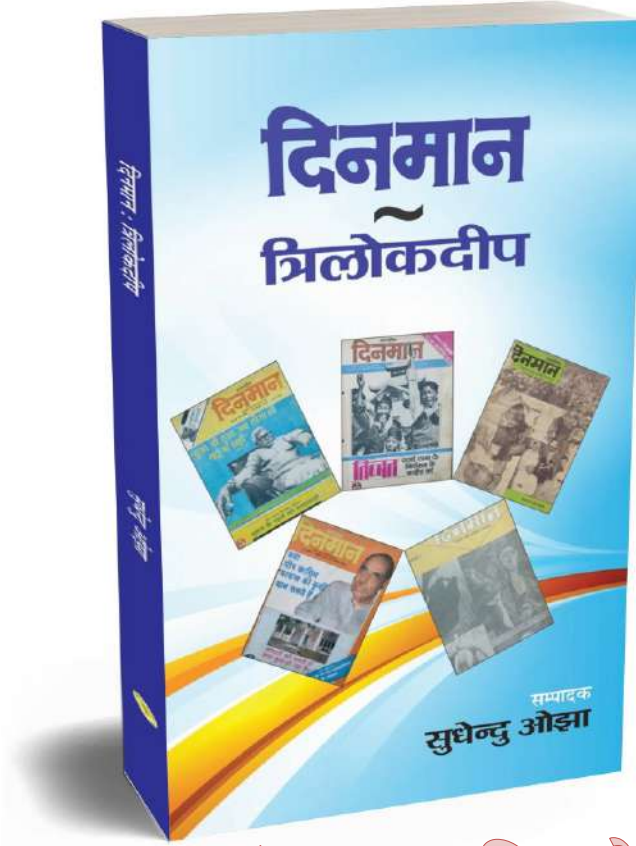
मैंने देखा वह युवक माता जी की चप्पल उठाए इधर ही आ रहा था। मैंने देखा वह पसीने से तरबतर था। मुझे हैरानी हुई यहां तो बहुत शीतल हवा चल रही है। तभी मैंने उस युवक की पत्नी जो पीछे-पीछे आ रही थी को देखा। वृद्धा ने उससे मेरा परिचय कराया "इनसे मिलो

यह भी दिल्ली से आई है।" वह मुझसे बात करती है। उसी ने बताया कि "उस युवक की उम्र भी 55 के लगभग है और वह कुछ ना कुछ स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से घिरा हुआ है।"

मैंने अनुमान लगाया तभी इस युवक को इतना पसीना आ रहा है। मैंने अब हिम्मत जुटाई और पूछ ही लिया "भाई साहब आपने अपनी मां को आज यात्रा कराकर बहुत अच्छा किया।" उनके चेहरे पर एक कृष्णामयी मुस्कान उभरी और उन्होंने कहा "मैं आपको तो नहीं जानता परंतु कहना चाहता हूं की मां के जाने के बाद उसकी फोटो पर महंगा हार चढ़ाकर, रोज धूप बत्ती करने से बेहतर है मैं अपनी मां को जीते जी.... उनकी इच्छाओं की पूर्ति को करने की कोशिश करूं।" बातचीत करते हुए मैंने उसके चेहरे को देखा उसके चेहरे पर यह कहने के बाद उदासी के भाव आ गए थे। मानो वह मां के जाने की बात से उदास हो गया हो। वह अब फिर से व्हीलचेयर को खींचता हुआ इनोवा कार की तरफ जा रहा था। मैंने पूछा "आपको परेशानी तो हुई होगी, आप कितनी देर से व्हीलचेयर को खींच रहे हैं।" मैंने एक बेकार का प्रश्न किया।

"आप भी तो भगवान के दर्शन करने आई हैं। आपको भी तो परेशानी हुई होगी और मैं तो एक भगवान को दूसरे भगवान से मिलाने लाया हूं। मुझे कैसी तकलीफ।" वह एक भरपूर मुस्कराहट के साथ आगे बढ़ गया था। उसकी पत्नी ने मुड़कर मुझे देखा और हाथ हिलाया। मैं इतना ही कह पाई "आज के श्रवण कुमार तुम्हें मेरा प्रणाम।" श्रवण कुमार ने शादी नहीं की थी नहीं तो मैं उसकी पत्नी को उसीका नाम दे देती। आंखों देखी एक सत्य घटना को यहां प्रस्तुत कर मन बहुत प्रसन्न है।

ई-51, दीप विहार, रोहिणी, सेक्टर 24. दिल्ली-110042.



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Book is Available on Flipkart

Book Name : दिनमान~त्रिलोकदीप

Author सुधेन्दु ओझा

ISBN : 978-81-963524-6-2

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 168

Price : 300/-

Genre: गद्य : पत्रकारिता

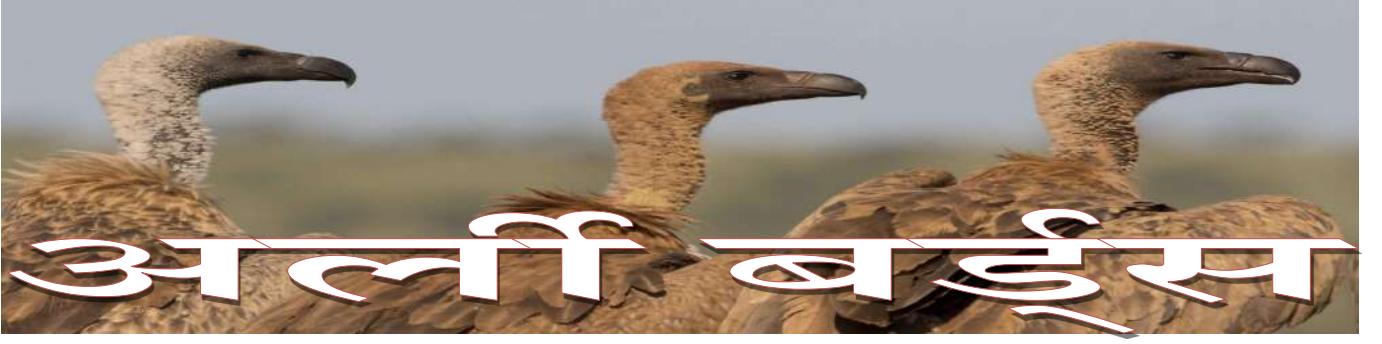
Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in



लघुकथा:

कुछ लोग गिद्धों की तरह बस इंतज़ार करते रहते हैं, कि कब कोई मरे और वे जल्दी से अपना काम करें अर्थात् सबसे पहले मातमपुर्सी के लिए पहुँचकर रोना-धोना शुरू करके सबको जता सकें, कि वे मृतक व उसके परिवार के लिए कितने दुखी हैं। इसी से कोरोना जैसे भयंकर संकट के दौरान भी लाख मना करने के बावजूद, वे मृतक के परिवार के सदस्यों से लिपट-लिपट कर रोने में कोई कमी नहीं रखते। निरंतर एक वर्ष तक कोविड से संक्रमित रोगियों का उपचार करते हुए, डॉक्टर विश्वास कोरोना संक्रमण से ग्रसित हो गए। एक सप्ताह तक घर पर ही क्वारंटीन रहकर उपचार करने के बाद, जब उनकी हालत बिगड़ गई, तो महीनों तक विभिन्न हस्पतालों की शरण लेनी पड़ी, लेकिन बात नहीं बनी। एकमो सपोर्ट के लिए घर से डेढ़ हजार किलोमीटर से भी अधिक दूर, एक बेगाने शहर में रहना पड़ा। ब्लड लॉस और ब्लीडिंग की वजह से रोज़ खून की ज़रूरत पड़ती। पैसा भी पानी की तरह बहाना पड़ रहा था। इस दौरान सैकड़ों लोगों ने, न केवल अपना रक्त, प्लाज़्मा व प्लेटलेट्स दिए, अपितु आर्थिक मदद करने में भी उदारता का परिचय दिया। परिवार को उपचार के लिए करोड़ों रुपए उधार लेने पड़े। हाँ, कई करोड़ रुपए उधार लेने पड़े।

इस सब के बावजूद एक लंबे संघर्ष के बाद, डॉक्टर विश्वास परिवारजनों को एक बेगाने शहर में अकेले रोता-बिलखता छोड़कर उस लंबी यात्रा पर निकल गए, जहाँ से कभी किसी की वापसी नहीं होती। माता-पिता, पत्नी, बहन, छह वर्षीय पुत्र व दो अन्य रिश्तेदारों ने युवा डॉक्टर की अर्थी को कंधा देकर बड़ी मुश्किल से चिता तक पहुँचाया। अर्थी को चिता तक पहुँचाने के लिए सचमुच कुछ मजबूत कंधों की बेहद ज़रूरत थी। यदि उस बेगाने शहर में सुरेश सिंघल जी नामक एक सज्जन ने भरपूर मदद न की होती, तो बड़ी मुश्किल से भी ये संभव न हो पाता। अंतिम संस्कार करने के बाद देर शाम तक वापस घर पहुँचे। घर जो किराए पर लिया हुआ था। उस समय भी कुछ ऐसे कंधों की ज़रूरत थी, जिन पर सर रखकर रोने से कुछ सुकून मिल सके। बारह घंटे से अधिक का समय व्यतीत हो चुका था और इतने समय में कुछ परिचित कंधों का आसपास होना असंभव अथवा मुश्किल नहीं था, लेकिन ऐसा कोई कंधा उपस्थित नहीं हुआ। खुद ही रो लिए, खुद

ही चुप हो गए। रात के तीन बजे गए थे पूरे परिवार को रोते-रोते।

सुबह पाँच बजे अस्थियाँ चुनने के लिए जाना था, अतः चार बजे ही उठ गए। पिता अपने पुत्र की अस्थियाँ चुनने के लिए श्मशान घाट पहुँचे। सुरेश सिंघल जी वहाँ पहले ही पहुँच चुके थे। सुरेश सिंघल जी ने ही सारी व्यवस्था की थी। पहले दिन अंतिम संस्कार करवाने की पूरी व्यवस्था भी उन्होंने ही की थी। श्मशान घाट तक पहुँचने और अस्थियाँ चुनने के बाद एयरपोर्ट तक जाने के लिए ड्राइवर के साथ एक गाड़ी उन्होंने पहले ही भिजवा दी थी। पुत्र की अस्थियाँ चुनने के बाद पिता वहाँ से सीधे हरिद्वार चले गए और वहाँ गंगा में अस्थि-विसर्जन के बाद सीधे अपने घर के लिए निकल पड़े और रात बारह बजे के बाद दिल्ली स्थित अपने घर पहुँचे। घर जो अब घर जैसा नहीं रह गया था। बाकी लोग भी किसी तरह से व्यवस्था करके रात के डेढ़-दो बजे तक घर पहुँच पाए। अगले दिन सुबह-सुबह ही मातमपुर्सी के लिए लोगों का आना प्रारंभ हो गया। मातमपुर्सी के लिए सबसे पहले जिस परिवार के सदस्य आए, वे सभी स्वयं कोरोना से संक्रमित हो चुके थे। इनमें से कुछ की हालत बहुत बुरी हो गई थी, लेकिन गनीमत थी कि वे सभी पूरी तरह से स्वस्थ हो गए थे। मातमपुर्सी के लिए सबसे पहले पहुँचने वाले परिवार के सभी सदस्यों का उपचार डॉक्टर विश्वास ने ही किया था। उसी दौरान डॉक्टर विश्वास भी कोरोना से संक्रमित हो गए थे और लगभग चार महीनों तक जीवन के लिए घोर संघर्ष करते और कठिन शारीरिक व मानसिक यातना झेलते हुए एक सुबह पूरी तरह से शांत हो गए। मातमपुर्सी के लिए आया पूरा परिवार डॉक्टर विश्वास की मृत्यु पर अत्यधिक दुखी था, लेकिन पिछले तीन महीनों में परिवार के किसी भी सदस्य ने डॉक्टर विश्वास के माता-पिता अथवा पत्नी से एक बार भी फोन करके डॉक्टर विश्वास अथवा उसके परिवार का हालचाल नहीं पूछा। उस समय जब सब कुछ समाप्त हो गया था, तब भी ये नहीं पूछा कि मृतक का दाह-संस्कार कब, कहाँ और कैसे होगा। वापस कब और कैसे आओगे? आठ आदमियों के वापस आने के लिए टिकटों के पैसे हैं या नहीं, ये पूछना भी भूल गए। बस एक बात याद रही और वो ये कि मातमपुर्सी के लिए सबसे पहले पहुँचना है, क्योंकि नजदीकी रिश्तेदारों के लिए यही सबसे ज़रूरी होता है।

सीताराम गुप्ता, ए.डी. 106 सी., पीतम पुरा, दिल्ली - 110034

मोबा0 नं0 9555622323 Email : srgupta54@yahoo.co.in

मुख्य अतिथि

(लघुकथा)

गली के नुक्कड़ पर एक चाय की थड़ी पर पिछले तीन-चार महीनों से रोज सुबह आकर बैठ जाता वो बूढ़ा व्यक्ति जिनका नाम राम प्रसाद था जिसके लिए ये शहर अंजान सा था। चाय की थड़ी के सामने एक सरकारी स्कूल भी था। बच्चों संग शिक्षकों के पढ़ने-पढ़ाने की आवाज सदैव आती रहती। स्कूल की छुट्टी के बाद वो वृद्ध सज्जन वहाँ से चले जाते। शहर के जीवन में किसके पास फुर्सत ये जानने कि ये कौन है ? यहाँ रोज आकर क्यूँ बैठता है ? अगर किसी के मन में जानने का खयाल भी आया होगा तो अभिभावक समझ कर रह गया होगा मन ही मन विचार। चाय वाले को भी क्या, उसकी तो रोज तीन चार चाय का ग्राहक तो था ही वो।

एक दिन स्कूल में कोई कार्यक्रम था विद्यालय सजाया गया था। विद्यालय-स्टाफ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि (जिला कलेक्टर) के इंतजार में गेट पर खड़ा था। तब ही एक गाड़ी आकर रुकी, उसमें से एक संत्रांत महाशय उतरे, सभी ने उनका अभिवादन किया। अचानक आगंतुक कलेक्टर साहब की नजर चाय की दुकान पर बैठे उस सज्जन पर पड़ी, वो तुरंत भीड़ से निकल कर वहाँ पहुंचे और उनके चर्णस्पर्श किये। गुरुजी, आप यहाँ ! आजकल नौकरी कहां चल रही है ? और आप कैसे हो ? मैं ठीक हूँ और मुझे सेवानिवृत्त हुए दो वर्ष हो गये हैं आजकल मैं और मेरा परिवार इस शहर में ही रहता है। मैंने यहाँ एक छोटा सा मकान खरीद लिया है बच्चों का अपना छोटा मोटा व्यवसाय भी यहीं था इसलिए शहर में आना पड़ा। स्कूल स्टाफ कार्यक्रम की देरी से अंदर ही अंदर परेशान थे पर कुछ भी कह नहीं पा रहे थे। तब ही कलेक्टर महोदय ने प्रिंसिपल साहब को बुलाया और कहा- आज कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मेरे स्थान पर मेरे गुरुजी रहेंगे और मैं दर्शक दीर्घा में बैठूंगा, मेरी कुर्सी सामने लगा दी जाये। बहुत मना करने पर भी कलेक्टर महोदय नहीं माने और गुरुजी को स्कूल कार्यक्रम में सहभागिता निभानी पड़ी। कलेक्टर महोदय ने अपने उद्बोधन में शिक्षक के महत्व को बताया साथ ही अपने गुरुजी के बच्चों व स्कूल के प्रति लगाव को बताते हुए कहा कि आप शायद इसलिए ही रोज विद्यालय के सामने आकर बैठते होंगे मैं समझ सकता हूँ। कलेक्टर शिष्य की बात सुनकर रिटायर्ड शिक्षक राम प्रसाद जी मुस्करा रहे थे। अगले दिन अखबारों में गुरु-शिष्य के संबंधों के समाचार पूरे शहर में चर्चा के विषय बने रहें।

व्यग्र पाण्डे (लघुकथाकार)

छपास रोग !

ल

घुकथा

प्रेजुएट आलोक की नौकरी न लगने से वैसे ही पूरा परिवार परेशान था, उसपर निरंतर लिखने की सनक से घरवाले सकते में आ गए। उसे समझाया गया, 'माना कि तुम्हारे पत्र विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में छप रहे हैं, लेकिन पत्र और रचनाओं का लेखन, दोनों भिन्न-भिन्न विधाएं हैं। वैसे भी ये रूखा-सूखा, बेकार काम है, जिससे कोई खास कमाई नहीं होती है।' आत्मविश्वास और सकारात्मक सोच से लबालब आलोक ने हारकर हथियार डालने की बजाय मैदान में डटे रहने का फैसला सुनाया।

शुभचिंतकों द्वारा स्थानिय पत्र-पत्रिकाओं से शुरुआत करने का सुझाव देने पर, आलोक ने इसे अपनी शान के खिलाफ समझकर ठुकरा दिया। सिर्फ प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिकाओं को ही लक्ष्य बनाना शुरु किया। महिनों के प्रयास के बावजूद सफलता उससे कोसों दूर रही। निराश-हताश होने के बदले सुध-बुध खोकर लिखने में मगन रहा। आखिरकार एक रविवार उसकी मेहनत का सुनहरा सुरज उगा। छह मौसमों के बीत जाने के बाद ही सही, उसके मन की मुराद पूरी हुई। एक प्रसिद्ध, प्रतिष्ठित, पुराने पत्र में आलोक का आलेख छपा। अपने नाम के साथ लेख, फोटो छपा देखकर अत्यधिक आनंद से उछल पड़ा। उसे लगा जैसे- चंद्रमा के लिए मचलने वाले बच्चे को चंदामामा मिल गया हो। जैसे-बेरोजगार को मनचाही नौकरी लगी हो। जैसे- किसी कुंवारे लड़के को कल्पना से कहीं अधिक सुंदर लड़की मिली हो। जैसे- हज़ारों रुपए इकट्ठे न देखने वाले को लाखों की लोटी लगी हो आलोक ने ताबड़तोब सोशल मीडिया पर अपना प्रकाशित आलेख भेजने के साथ मित्रों, परिचितों को भी खुशखबरी फारवर्ड की। सारे मित्रगण उसके घर इकट्ठे हुए। शुभकामनाएं देने लगे। उन में अधिकतर ऐसे दोस्त थे जोकि पीठ पीछे उसके लेखन पर कटाक्ष करते थे। रविवार की रात को यादगार बनाने के लिए पार्टी की मांग कर डाली। आलोक चौंका। अपने आप को सम्भालते हुए कहा, 'मैंने महीनों तक कल्पनाओं के घोड़े भगाए, दिमाग दौड़ाया, अनगिनत सफेद कागज़ों को काला करने के बाद मुश्किल से कामयाबी हासिल की है। खुद की सोच बदलो, पार्टी देने का नहीं, लेने का हकदार हूँ।' आलोक के मुख से अकल्पनीय उत्तर सुनकर सभी मित्र मायूस हुए। वहां ठहरकर जोखिम उठाने के बदले अपने-अपने घरों की ओर लौटने लगे।

अशोक वाधवाणी, गांधी नगर, कोल्हापुर, महाराष्ट्र,

संपर्क : 9421216288,



आर्य संस्कृति की जन्मदात्री हरियाणा की पावन भूमि

हरियाणा का नाम लेते ही कुछ अल्पज्ञानी मंद मुस्कान के साथ ऐसा भाव प्रकट करते हैं, जैसे वह असभ्य और पिछड़ा प्रदेश हो। वे हरियाणा में कल्चर के नाम पर एग्रीकल्चर को जोड़ देते हैं। ऐसे लोगों की बुद्धि पर तरस आता है, जो बिना गहन अध्ययन किए, एक स्वनिर्मित गलत धारणा के वशीभूत रहते हैं।

देश को स्वतंत्रता मिलने के बाद 1 नवंबर, 1966 को हरियाणा को पूर्ण राज्य का अस्तित्व मिला, किन्तु आज इसका सांस्कृतिक इतिहास मात्र 60 वर्ष पुराना मान लेना अत्यंत हास्यास्पद होगा। इस प्रदेश का उल्लेख ऋग्वेद, मनुस्मृति, वामनपुराण सहित अनेक प्राच्य ग्रंथों एवं शिलालेखों में मिलता है। ऋग्वेद के एक मंत्र में इस प्रदेश का उल्लेख दृष्टव्य है -

ऋजमुंक्ष यायने रजत हरयाणो।

रथं युक्तसमनाम सुषामणि।।

प्राचीनकाल में इस प्रदेश को ब्रह्मवर्त भी कहा जाता था। मनुस्मृति में इसका उल्लेख निम्नवत है -

सरस्वती दृश्यद्वयोर्दिवन द्यौर्यदन्तरम्।

तं देवं निकितं देशं ब्रह्मवर्तं प्रचक्षत्॥

हरियाणा के लिए प्राचीन वाग्मय में 'ब्रह्मर्षि देश' और 'आर्यावर्त' आदि नाम भी बताए गए हैं। हरियाणा के विषय में वैदिक साहित्य में अनेक उल्लेख मिलते हैं। हरियाणा भारतीय संस्कृति का मूल केंद्र है और परंपरानुसार इसे आदिसृष्टि का जन्मस्थान माना जाता है।

कुछ विद्वान हरियाणा को 'हरि' और 'यान' शब्दों का संयुक्त रूप मानते हैं, जिसका अर्थ है हरि का यान अर्थात् विष्णु का वाहन। कुछ विद्वान इसको आर्याना (आर्यों का मूल स्थान) का अपभ्रंश मानते हैं। वहीं कुछ इसको 'हरित - आरण्यक' का अपभ्रंश मानते हैं। साथ ही ये प्रमाण भी मिलते हैं कि यह क्षेत्र कभी हरि (संस्कृत हरित - हरा) तथा अरण्य (जंगल) रहा है। इसी से इसका नाम 'हरियाणा' पड़ा। तैत्तिरीय अरण्यक (5.1.1) आदिग्रंथ के अनुसार इस क्षेत्र की सीमा सरहिंद (वर्तमान पंजाब में) से खांडव (दिल्ली और मेवात) तक जाती है।

हरियाणा प्रदेश की ऐतिहासिकता का उल्लेख विक्रमी संवत् 1384 के सारवान से प्राप्त लेख में भी मिलता है -

देशोस्ति हरयाणाख्यः पृथिव्यां स्वर्गसन्निधः अर्थात् हरियाणा नाम का एक देश है, जो इस पृथ्वी पर स्वर्ग के समान है।



सिंधु सभ्यता और वैदिक सभ्यता का साक्षी है हरियाणा विश्व की सबसे प्रतिष्ठित वैज्ञानिक पत्रिका नेचर के एक शोध लेख के अनुसार सिंधु घाटी सभ्यता कम से कम 8000 वर्ष पुरानी है। यह मिस्र और मेसोपोटामिया की सभ्यताओं से भी पुरानी है। शोधार्थियों ने इस बात के भी प्रमाण खोजे हैं कि हड़प्पा सभ्यता के 1000 वर्ष पूर्व भी कोई सभ्यता थी। शोधकर्ताओं का मानना है कि इस सभ्यता का फैलाव भारत के बड़े हिस्से में था और इसका विस्तार सरस्वती नदी के किनारे या घघघर और हाकड़ा नदी तक था। यह विस्तार हरियाणा के भिराणा और राखीगढ़ी में भी था। भिराणा में खुदाई करने पर उन्हें हड्डियाँ, गायों के सींग, बकरियों, हिरण और चिंकारे के अवशेष मिले। इनके कार्बन - 14 परीक्षण में पाया गया कि किस प्रकार उस काल की सभ्यता को पर्यावरणीय परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। अब इस सभ्यता के प्रमाण भारत के लोथल, धोलविरा और कालीबंगन से भी मिल चुके हैं।

हरियाणा में वैदिक संस्कृति के प्रवर्तक अनेक ऋषि-मुनियों के आश्रम थे, जिनमें महर्षि वशिष्ठ, महर्षि विश्वामित्र, च्यवन, भृगु, आप्लवान, जमदग्नि, उद्दालक, दुर्वासा, एवं कपिल मुख्य हैं।

राखीगढ़ी का पुरातात्विक महत्व :

राखीगढ़ी हिसार जिले की नारनाँद तहसील का एक गाँव है, जो दिल्ली से लगभग 150 किलोमीटर दूर राखीखास और राखी शाहपुर गाँवों के बीच पड़ता है। इस गाँव के पुरातात्विक होने के प्रमाण अनेक वर्षों से मिल रहे थे। पुरातत्व वैज्ञानिक अब इस निष्कर्ष पर पहुंच गए हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता की राजधानी हरियाणा के जिला हिसार में स्थित राखीगढ़ी में थी। शोध के अनुसार राखीगढ़ी की स्थापना हजारों वर्ष पूर्व हो चुकी थी। यहाँ पहली बार 1963 में खोदाई हुई थी और

तब इसे सिंधु - सरस्वती सभ्यता का सबसे बड़ा नगर माना गया। इसके बाद 1997 से 2000 तक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने और खोदाई की, जिसके पश्चात पता चला कि राखीगढ़ी नगर लगभग 3.5 किलोमीटर की परिधि में फैला था। यह शहर विलुप्त सरस्वती के किनारों पर ही स्थित था।

राखीगढ़ी से संबंधित प्राप्त विवरण के अनुसार यहाँ की सभी गलियाँ 1.92 मीटर चौड़ी थीं। इसके अतिरिक्त असंख्य प्रतिमाएँ, तांबे के बर्तन और एक भट्टी के अवशेष भी मिले हैं। श्मशान गृह के अवशेषों में 8 नरकंकाल मिले हैं।

खोदाई में पाये गये जीवाश्मों से ज्ञात होता है कि मछली पकड़ने के अलावा लोगों का मुख्य धंधा कृषि तथा पशुपालन था। कृषि उत्पादों में यहाँ गेहूँ और जौ के कुछ नमूने मिले हैं। इसके साथ एक साधारण धान्यागार भी मिला है। यहाँ सोने की मालाएँ, सेलखड़ी की मुहरें, चाँदी के बर्तन, मिट्टी के खिलौने, ताँबे की बनी वस्तुएँ, टेराकोटा की चूड़ियाँ, अँगूठी तथा सोने के हथफूल मिले हैं। खोदाई में पशु बलि के गड्ढे, अन्निकुण्ड, कब्र और उसके ढाँचे पाये गये हैं। यहाँ मिली वस्तुएँ झज्जर के संग्रहालय में रखी गई हैं।

राखीगढ़ी में मिले सरस्वती नदी होने के प्रमाण :

सरस्वती नदी की खोज में शोधकर्ताओं को हरियाणा में यमुनानगर के आदिबद्री से मात्र पाँच किलोमीटर की दूरी पर सरस्वती नदी की खोदाई में बड़ी सफलता मिली, जिसमें धरातल से मात्र 7-8 फीट की खोदाई पर ही वहाँ जलधारा फूट पड़ी। आदि - बद्री को ही सरस्वती का उद्गम स्थल माना जाता है तथा इस जलधारा में सरस्वती नदी का पवित्र जल होना सिद्ध होता है। वेद और पुराणों में सरस्वती का वर्णन नदी के रूप में न होकर, वाणी और विद्या की देवी के रूप में हुआ है।

कई भू विज्ञानी मानते हैं कि हजारों वर्ष पूर्व सतलुज और यमुना के बीच एक विशाल नदी थी, जो हिमालय से लेकर अरब सागर तक प्रवाहित होती थी। भूगर्भीय शोधों से सिद्ध हुआ है कि किसी समय इस क्षेत्र में भीषण भूकंप के कारण जमीन के नीचे के पहाड़ ऊपर उठ गए और सरस्वती नदी का जल पीछे की ओर चला गया।

राखीगढ़ी की खोदाई से प्राप्त तथ्यों से सिद्ध है कि यहाँ की सभ्यता और वैदिक सभ्यता समकालीन थी, जिससे इस धारणा को नकार दिया गया है कि सिंधु घाटी सभ्यता केवल सिंधु घाटी के आसपास ही फैली थी। ऋग्वेद में सरस्वती नदी के उल्लेख मिलने से इस बात की पुष्टि होती है कि हरियाणा प्रदेश वैदिक सभ्यता का केंद्र रहा है। पुरातत्व विदों का मानना है कि हड़प्पा सभ्यता का प्रारंभ इसी राखीगढ़ी से हुआ था।

इसके अतिरिक्त हरियाणा के विभिन्न स्थलों में पुरातत्व अवशेष विद्यमान हैं। उनमें कुछ के नाम हैं - हर्षकालीन अवशेष (थानेसर कुरुक्षेत्र), सुग(अंबाला), मीताथल (हिसार), दौलतपुर(कुरुक्षेत्र), बालू (जींद), वणावली (हिसार)।

महाभारत में वर्णित हैं अनेक तीर्थ स्थल :

महाभारत में अनेक तीर्थ स्थल आज भी परिवर्तित नामों से यहाँ विद्यमान हैं। इसमें पेहोवा(पृथूदक), करनाल (कर्णताल), महम (महित्थम), पानीपत (पाणिप्रस्थ), सोनीपत (श्रोणिप्रस्थ), कैथल (कपिस्थल), बसथली(वत्सली), पुण्डरी(पुण्डरीक), सफीदों (सर्पदमन), गुडगाँव(गुरुग्राम),सीवान (शिववन) प्रमुख हैं। आर्ष ग्रंथों में अनेक वनों यथा - काम्यकवन (कमोधा), शीत वन(सीवन), फलकीवन(फरल), आदित्य वन(अमीन), व्यासवन(वरास), मधुवन (मोहणा), सूर्य वन (संजूमा), स्थाण्वीश्वर (थानेसर) आदि उल्लेखनीय हैं। सूरजकुंड नामक स्थल फरीदाबाद से 15 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहाँ कभी एक सूर्य मंदिर होता था, जिसके भग्नावशेष आज भी दिखाई देते हैं।

सांस्कृतिक दृष्टि से समृद्ध है हरियाणा :

हरियाणा की पावन भूमि पर फली - फूली संस्कृति, भारतीय संस्कृति का आदिकाल से ही प्रतिनिधित्व करती आ रही है। हरियाणा के लोक जीवन के विविध रूपों में यहाँ की लोक-संस्कृति की झलक स्पष्ट परिलक्षित होती है। हरियाणा प्रदेश की बोली के लिए 'हरियाणी' और 'हरियाणवी' दोनों नाम प्रचलित हैं। डॉ. जयनारायण कौशिक के अनुसार " वर्तमान हिंदी का विकास हरियाणवी से हुआ है। हिंदी हरियाणवी का शहरी संस्करण है। हरियाणवी का सीधा संबंध वैदिक भाषा, संस्कृत, पालि, प्राकृत तथा अपभ्रंश से है। "

यह आदिकाल से ही दार्शनिकों, ऋषि-मुनियों, वीरों, सूफी - संतों, देशभक्तों, धर्मनिष्ठों और साहित्यकारों की भूमि रही है। आज यह प्रदेश हस्तकला, कृषि, पर्यटन, शिक्षा, लोक संस्कृति, लोक संगीत,

आसमान पर छाओगे



सत्य पथ पर तुम चलकर देखो,
अद्भुत सुख को पाओगे।
ना ही कभी तुम विचलित होगे,
ना ही तुम पछताओगे।

जलने वाले जलते रहेंगे,
आगे तुम बढ़ जाओगे।
जल-जल कर वो सियाह बनेंगे,
तुम शुचिता को पाओगे।

कर लो तुम शुद्ध अंतःकरण को,
अभयदान को पाओगे।
चाहे परिस्थिति कैसी भी हो,
कभी नहीं घबराओगे।

करोगे जो तुम मन को वश में,
परम् तत्व को पाओगे।
लेकर हाथ तुम विजय पताका,
आसमान पर छाओगे।

कुमकुम कुमारी "काव्याकृति"
मुंगेर, बिहार

लोक वाद्य, लोकगीत, लोक नृत्य, खेल, मेले, उद्योग आदि विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय भूमिका निभा रहा है।

धार्मिक एवं ऐतिहासिक क्षेत्र है कुरुक्षेत्र :

कुरुक्षेत्र की चर्चा के बिना हरियाणा का परिचय अधूरा ही कहा जाएगा। भगवद गीता के प्रारंभिक श्लोक में ही कहा गया है -

धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।

मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजया॥

इस श्लोक से पता चलता है कि महाभारत युद्ध से पहले भी 'कुरुक्षेत्र' नाम प्रचलित था। राजा कुरु कौरवों और पाण्डवों के पूर्वज थे, उन्हीं के नाम पर कुरुक्षेत्र नाम पड़ा। यह पवित्र स्थान सरस्वती नदी और दृषद्वती का मध्यवर्ती क्षेत्र है। भगवान श्रीकृष्ण ने वीर अर्जुन को गीता का उपदेश यहीं दिया था। भगवान वेदव्यास ने पंचमवेद महाभारत की रचना भी यहीं की थी। आज से लगभग पाँच हजार वर्ष पूर्व द्वापर युग में कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर कौरवों और पाण्डवों के मध्य 18 दिनों तक महासमर हुआ था। प्राचीन ग्रंथों में कुरुक्षेत्र का धार्मिक महत्व बताते हुए कहा गया है कि यदि कोई व्यक्ति कहता है कि " मैं कुरुक्षेत्र जाऊँगा, मैं कुरुक्षेत्र में निवास करूँगा " तो वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है। कुरुक्षेत्र में तीर्थों की संख्या 360 बताई गई है, परंतु ऐसे तीर्थयात्री बहुत कम होते हैं, जो सभी तीर्थों का दर्शन करने का कष्ट उठा सकें। कुरुक्षेत्र के प्रमुख प्राचीन ऐतिहासिक तीर्थों तथा दर्शनीय स्थलों में सन्निहित तीर्थ, ब्रह्म सरोवर, श्रीलक्ष्मी नारायण मंदिर, सर्वेश्वर महादेव मंदिर, चंद्रकूप, स्थाणीश्वर महादेव मंदिर, भद्रकाली मंदिर, नाभि कमल मंदिर, बाणगंगा, कर्ण का खेड़ा, आपगा तीर्थ, ज्योतिसर तीर्थ, भूमिसर, पेहवा, काम्य तीर्थ, कैथल, द्वैपायन हृदय तीर्थ, रेणुका तीर्थ, सप्तसारस्वत, विश्वामित्र तीर्थ आदि उल्लेखनीय हैं। कुरुक्षेत्र में कई वर्षों से आयोजित 'गीता जयंती' उत्सव अब एक अंतर्राष्ट्रीय उत्सव के रूप में विख्यात हो गया है।

हरियाणा का अतीत गौरवपूर्ण रहा है। 'देसा में देस हरियाणा, जित दूध दही का खाणा' कहावत चरितार्थ करता हरियाणा संप्रति चहुँमुखी प्रगति कर रहा है। 'म्हारा हरियाणा' की गर्वोक्ति के साथ यहाँ के निवासियों की निष्ठा, लगन और समर्पण से इसका भविष्य और उज्ज्वल होगा, इसमें कोई संदेह नहीं है।

**-गौरीशंकर वैश्य विनम्र, 117 आदिलनगर, विकासनगर
लखनऊ 226022, दूरभाष 09956087585**

संपर्क भाषा भारती के साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :



1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharti@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सएप पर भेजी गई रचनाएँ, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अतः उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।



बारिश

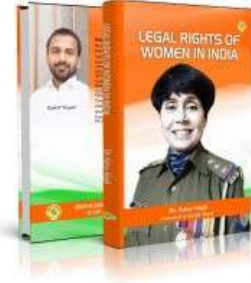
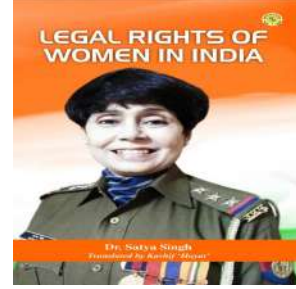
बीच सड़क,
बहुत आहिस्ते आहिस्ते,
चल रहा हूँ,
हाथ में छाता है,
बारिश हो रही है,
लेकिन, छाता खोला नहीं मैंने।

मैं भीग रहा हूँ,
बारिश से भी,
इस बात से भी,
कि, कब और,
कैसे निकलेगा,
रिक्शे वाला।
कब और कैसे निकलेंगे
वो, जो फटे बोरे लेकर निकलते हैं,
झुंड में, और फैल जाते हैं,
पूरे शहर में,
कचरा उठाने।

ऐसे बहुत से लोग,
जो, शाम को जलाने के लिए,
चूल्हे की आग,
निकलते हैं सुबह से ही,
और, खटते हैं,
दिन भर,
कैसे निकलेंगे इस तेज बारिश में,
घर से।
मैं, अपने इस एक छाते को,
इस तरह खोलना चाहता हूँ,
कि, वह ढंक लें इन सबको,
या, कम से कम,
वे लकड़ियाँ,
जो, आग जलाने काम आती है।

राजेंद्र ओझा

मोबाइल नंबर 9575467733/8770391717



Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर

चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर,

नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2,

Shakarpur, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

सौभाग्य प्रकाशन साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :



1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabhara-ti@gmail.com ईमेल पर ही भेजी जाएँ।
9. पुस्तक की पाण्डुलिपि भेजने से पूर्व कृपया फोन पर संवाद अवश्य कर लें : 8595036445, 8595063206

संपर्क भाषा भारती के साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :



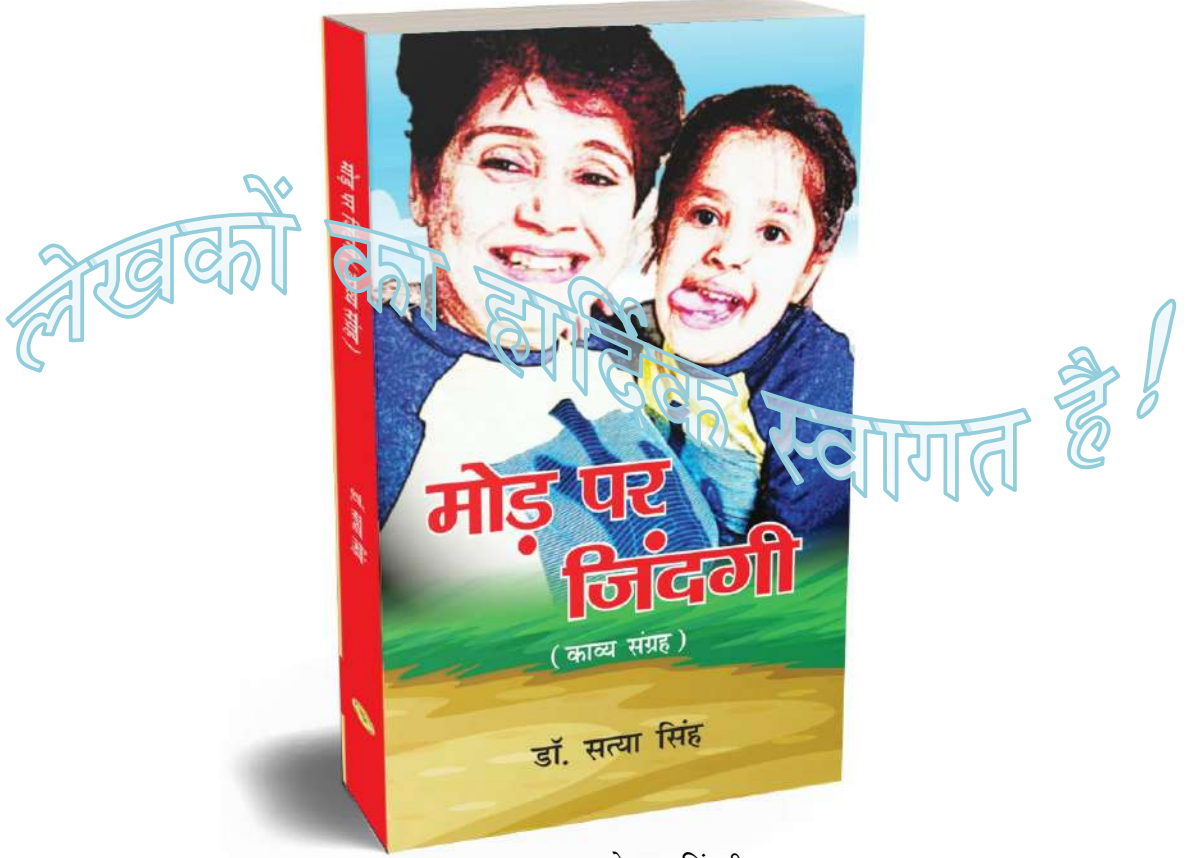
1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पत्ते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabhara-ti@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सएप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अतः उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।



अक्तूबर-2024



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें



Book Name : मोड़ पर जिंदगी

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : : 978-81-963524-3-1

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 118

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता



Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagypublication@gmail.com : **Website** : www.newzlens.in



Book Name : मुझे कुछ कहना है

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : : 978-81-963524-8-6

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 126

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता

सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

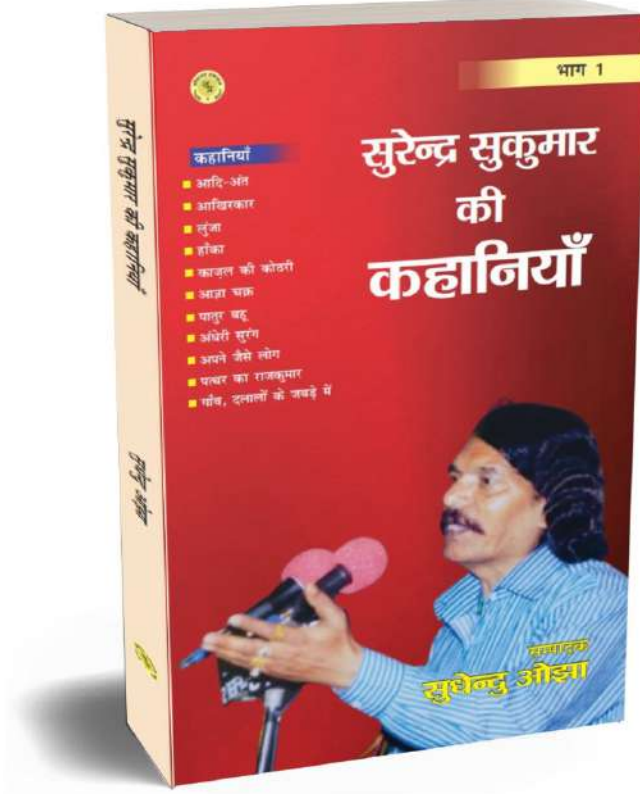
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in



अक्तूबर-2024



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें



Book Name : सुरेन्द्र सुकुमार की कहानियाँ (भाग-1)

Editor : सुधेन्दु ओझा

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Price : 250/-

Genre Prose



Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

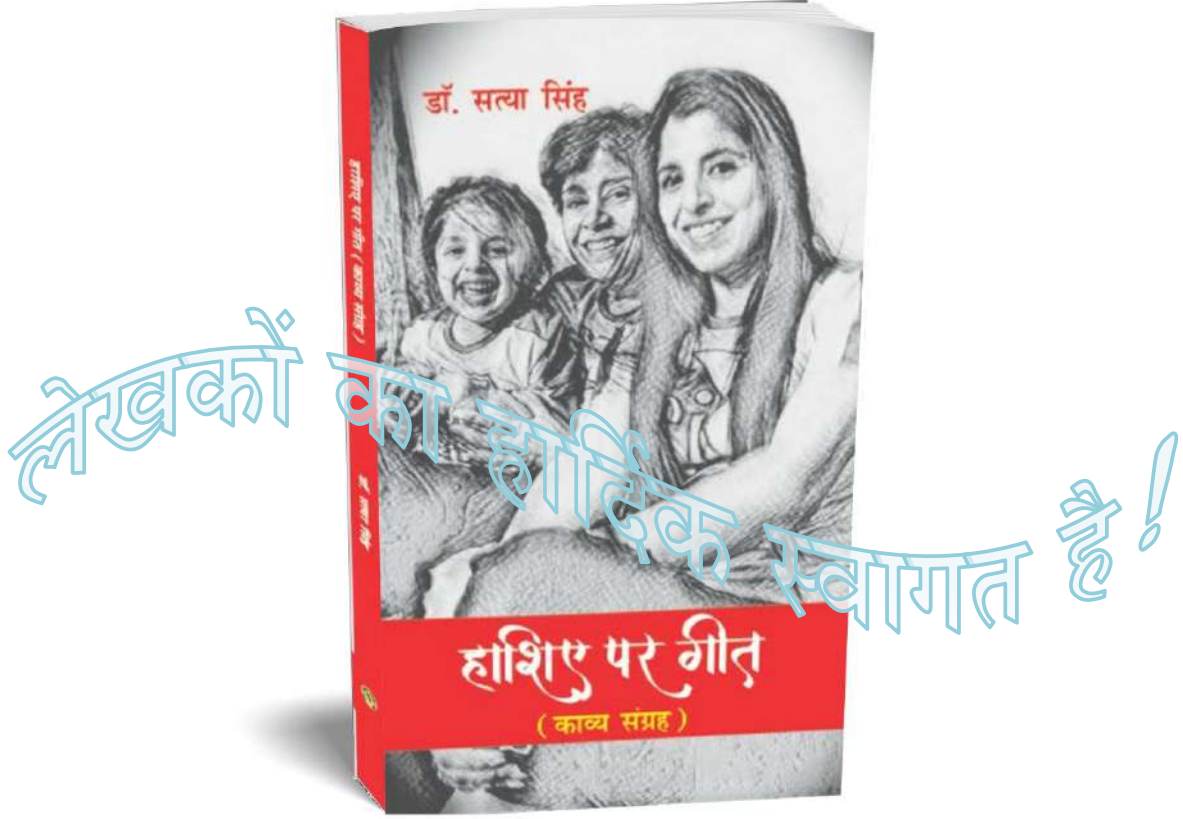
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in



अक्तूबर-2024



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें



Book Name : हाशिए पर गीत

Author डॉ सत्या सिंह

ISBN : 978-81-963524-7-9

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 120

Price : 250/-

Genre Poetry : कविता



Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in



भारतीय डाक : 170 वर्षों का गौरवशाली सफरनामा

कृष्ण कुमार यादव

विश्व डाक दिवस (9 अक्टूबर) पर विशेष डिजिटल इण्डिया, वित्तीय समावेशन से लेकर न्यू इंडिया तक में डाक विभाग निभा रहा अहम भूमिका

संचार सेवायें सदैव से मानव जीवन का अभिन्न अंग रही हैं और इनमें डाक सेवाओं का प्रमुख स्थान है। भारतीय डाक प्रणाली ने आम जनता को संचार का सबसे सस्ता और सुगम साधन सुलभ करा सामाजिक-आर्थिक विकास में अनूठी भूमिका निभाई है। यथापि



संचार क्रान्ति और डिजिटल सेवाओं के चलते तमाम नवीन तकनीकों का आविष्कार हुआ, पर डाक विभाग ने समय के साथ नव तकनीक के प्रवर्तन एवं अपनी सेवाओं में विविधता व उन्नयन द्वारा अपनी निरन्तरता कायम रखी है। भारत जैसे विशाल और विविधता पूर्ण देश में सांस्कृतिक आदान-प्रदान, व्यापार, घरेलू अर्थव्यवस्था, सामाजिक एकीकरण को सहेजे डाक विभाग का विशाल तंत्र न केवल हर दरवाजे पर दस्तक लगाता है बल्कि इंटरनेट के इस युग



में हाथ से लिखे गये शब्दों का भावनात्मक महत्व भी बरकरार रखता है। आज इसी नेटवर्क व साख के चलते तमाम अन्य संगठन भी अपने उत्पादों और सेवाओं के प्रचार-प्रसार व बिक्री हेतु डाक विभाग के साथ हाथ मिला रहे हैं।

डाक विभाग 'डिजिटल इण्डिया' और 'वित्तीय समावेशन' की संकल्पना को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है। देश के हर कोने में, हर दरवाजे पर डाक विभाग की पहुँच है और वह लोगों के सुख-दुःख में बराबर रूप से जुड़ा हुआ है। डाक सेवाएं नवीनतम टेक्नालॉजी अपनाते हुए नित्य नए आयाम रच रही हैं। समय के साथ डाकघरों का स्वरूप भी बदला है और उनकी भूमिका में भी परिवर्तन आया है। आज डाकघर में एक ही छत के नीचे तमाम जनोपयोगी सेवाएं उपलब्ध हैं। पत्र, पार्सल, ई-मनीऑर्डर, अंतर्राष्ट्रीय धन अंतरण सेवा, बचत बैंक, डाक जीवन बीमा, ग्रामीण डाक जीवन बीमा, फिलेटली, आधार नामांकन और अद्यतन सेवा, पोस्ट ऑफिस पासपोर्ट सेवा केंद्र, कॉमन सर्विस सेण्टर, रेलवे टिकट, गंगा जल की बिक्री, विभिन्न प्रसिद्ध मंदिरों के प्रसाद की बिक्री जैसी तमाम सुविधाएँ एक ही छत के नीचे उपलब्ध हैं। फिलेटली के प्रति विद्यार्थियों और युवाओं को आकर्षित करने हेतु डाक विभाग डाक टिकट प्रदर्शनियों का आयोजन भी करता है, ताकि उनमें शैक्षणिक और रचनात्मक अभिरुचि विकसित की जा सके।

डाक विभाग ने अपने विस्तृत नेटवर्क और व्यापक सेवाओं के साथ लोगों के जीवन को प्रभावित किया, वहीं नए डिजिटल वातावरण की चुनौतियों का सामना करने के उद्देश्य से निरंतर अपनी सेवाओं का

उन्नयन तथा विविधीकरण भी किया। भारत एक कृषि प्रधान एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था वाला देश है, जहाँ सेवाओं को अन्तिम व्यक्ति तक पहुँचाना सरकार की प्राथमिकता है। डाक विभाग ने प्रत्येक नागरिक के जीवन को प्रभावित किया है, चाहे वह डाक, बैंकिंग, जीवन बीमा और धनांतरण के माध्यम से हो अथवा रिटेल सेवाओं के माध्यम से। देश में 1.65 लाख डाकघरों का नेटवर्क है जो कि विश्व का सबसे बड़ा नेटवर्क है। इनमें से करीब 90 प्रतिशत डाकघर ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित है। भारतीय डाक ने समाज में अपनी प्रासंगिकता बनाए रखने के लिए लोगों के कारोबार और वित्तीय आवश्यकताओं के अनुरूप अनेक व्यावसायिक एवं वित्तीय कार्यकालापों को प्रारंभ किया। विभाग ने नए अवसरों का पता लगाने तथा नई सेवाओं को विकसित करने में अपने को संलग्न किया। वर्ष 1985 में यदि एस.एम.एस. पत्रों के लिए चुनौती बनकर आया, तो उसके अगले ही वर्ष द्रुतगामी 'स्पीड पोस्ट' सेवा भी आरम्भ हो गई। 'ई-मेल' के मुकाबले 'ई-पोस्ट' के माध्यम से डाक विभाग ने शहरों और ग्रामीण क्षेत्रों के मध्य डिजिटल डिवाइड को कम करने का भी प्रयास किया। डाकघरों की मनीऑर्डर सेवा को द्रुतगामी बनाते हुए इसे ई-मनीऑर्डर में तब्दील कर दिया गया। आईटी के निरंतर विकास और डिजिटल होती प्रक्रियाओं के इस दौर में डाकघर सामाजिक लाभ भुगतान, मनरेगा भुगतान आदि जैसे अपने सामाजिक दायित्वों तथा वाणिज्यिक और प्रतिस्पर्धी वातावरण की चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए तैयार है। आईटी के इस दौर में चुनौतियों का सामना करने के हेतु डाक विभाग



अपनी ब्रांडिंग भी कर रहा है। 'प्रोजेक्ट एरो' के तहत डाकघरों का लुक बदलने से लेकर काउंटर सेवाओं, ग्राहकों के प्रति व्यवहार, सेवाओं को समयानुकूल बनाने जैसे तमाम कदम उठाए गए। व्यवसायिक प्रक्रियाओं को पुनः व्यवस्थित करने तथा प्रचालनात्मक कार्यकुशलता पर विशेष ध्यान दिया गया है। पेमेंट बैंक का दर्जा मिलने के बाद डाक विभाग वित्तीय समावेशन में अहम भूमिका निभा रहा है। नेटवर्क और आईटी से युक्त डाकघर अपने देशव्यापी नेटवर्क के माध्यम से देश के कोने-कोने को कवर करते हुए एक प्रत्यक्ष लाभ अंतरण प्रदाता के रूप में स्थापित हो रहा है।

भारतीय डाक विभाग वर्ष 2024 में अपनी सेवाओं के 170 गौरवशावली वर्ष पूर्ण कर रहा है। 1 अक्टूबर, 1854 को लार्ड डलहौजी के काल में विभाग के रूप में स्थापित डाक विभाग समय के विभिन्न पगचिन्हों का गवाह रहा है। आधुनिक डाक विभाग की कार्यप्रणाली से पूर्व भारत में प्राचीन काल से ही समय-समय पर विभिन्न डाक प्रणालियाँ प्रचलित थीं। वैदिक व उत्तर वैदिक काल में किसी न किसी रूप में दूतों का संदेशवाहक के रूप में जिक्र मिलता है। महाकवि कालिदास ने अपने काव्य मेघदूत में संदेशवाहक के रूप में मेघों की कल्पना की थी। भारतीय राज व्यवस्था में मौर्य काल के उद्गम के साथ ही 'कबूतर-डाक' का आरम्भ मिलता है, जो कि कुषाण काल के बाद तक प्रभावी रहा। भारत में व्यवस्थित डाक का प्रथम लिखित

इतिहास जियाउद्दीन बरनी द्वारा अलाउद्दीन खिलजी (1296) के समय का प्राप्त होता है, जिसने सैन्य सम्बन्धी नियमित जानकारी हेतु 'पैदल डाक' और 'घुड़सवार डाक' व्यवस्था कायम की। मु0 बिन तुगलक के शासन काल (1325-51) में भी इस व्यवस्था के कायम रहने का जिक्र उत्तर अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता ने किया है। दिल्ली से दौलतगिरी राजधानी स्थानांतरित होने पर मु0 बिन तुगलक हेतु नियमित गंगा का जल पैदल और घुड़सवार डाक द्वारा ही ले जाया जाता था। शेरशाह सूरी (1541-45) ने अपने काल में डाक व्यवस्था को तीव्रता देने हेतु बंगाल से सिंध तक निर्मित सड़क किनारे एक निश्चित दूरी पर सरायों की व्यवस्था की, जहाँ पर दो घुड़सवार डाक को आगे ले जाने हेतु सदैव मुस्तैद रहते थे। मुगल सम्राट अकबर (1556-1603) ने घुड़सवार डाक के साथ-साथ 'ऊँट-डाक' का भी आरम्भ किया। पर ये सारी 'शाही डाक' सेवा केवल सम्राट, उसके प्रमुख दरबारियों, पुलिस और सेना हेतु ही थी। आम जनता से इनका कोई सरोकार नहीं था। शाही डाक सेवा के अलावा विभिन्न वर्गों की अपनी अलग-अलग डाक-सेवायें थीं। सम्पन्न सेठ-साहूकारों की अपनी 'महजनी डाक सेवा' थी तो मारवाड़ (जोधपुर) में मिर्धा जाति के कतिपय लोगों द्वारा 'मिर्धा डाक', एवं मेवाड़, मालवा आदि में 'ब्राह्मणी डाक' सेवा थी।

अंग्रेजों के भारत आगमन के साथ ही ईस्ट इंडिया कम्पनी ने वर्ष 1688 में मुंबई में एक डाकघर खोलकर अपनी पृथक डाक सेवा



का श्रीगणेश कर डाला। इस कंपनी डाक सेवा के वाहक भी डाक धावक या घुड़सवार ही थे। वर्ष 1766 में राबर्ट क्लाइव ने भी इस संबंध में कुछ प्रयास किए और 27 मार्च 1776 को बंगाल में सर्वप्रथम नियमित डाक सेवा का आरम्भ किया। इस हेतु जमींदारों को 'डाक धावक' उपलब्ध कराने हेतु कहा गया और इस प्रकार 'जमींदारी डाक' का आरम्भ हुआ। पर सही अर्थों में आधुनिक डाक सेवा का आरम्भ वारेन हेस्टिंग्स ने किया। 31 मार्च 1774 को कलकत्ता जी.पी.ओ के गठन और पोस्टमास्टर जनरल की नियुक्ति पश्चात प्रथम बार प्रति सौ मील की दूरी हेतु दो आने के मूल्य वाले तांबे के टिकट सिक्के शुल्क के रूप में निर्धारित किये गये। इसी दौरान प्रथम डाकिया की भी नियुक्ति हुई। वारेन हेस्टिंग्स द्वारा संचालित व्यवस्था मात्र देश के मुख्य नगरों तक ही सीमित थी, अतः एक समानांतर 'जिला डाक सेवा' का आविर्भाव हुआ। इसका उद्देश्य जिले के मुख्यालय को जिले के शेष नगरों से जोड़ना था। इसके व्यय का प्रबंध जमींदारों पर और नियंत्रण जिले के अधिकारियों द्वारा होता था। इस व्यवस्था में पत्रों का वितरण सिपाही व चौकीदारों द्वारा होता जो अपनी मर्जी से पत्र शुल्क वसूलते।

वर्ष 1837 में लागू 'प्रथम डाकघर अधिनियम' ने डाक सेवाओं में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाये। इसने सभी प्राइवेट डाक सेवाओं को समाप्त कर सरकार को डाक व्यवस्था पर अनन्य एकाधिकार दे दिया। आधुनिक डाक सेवाओं के इतिहास में पहली बार नियमित पोस्टमास्टर की नियुक्ति आरम्भ हुयी। इससे पूर्व जिले के अन्य वरिष्ठ अधिकारी ही अपने कर्तव्यों के साथ-साथ पोस्टमास्टर का भी दायित्व निर्वह करते थे। इस अधिनियम के तहत ही प्रथमतः जनता हेतु डाक सेवायें खोली गईं और 1 अक्टूबर 1837 को प्रथम 'जनता डाकघर'

खोला गया।

वर्ष 1854 भारतीय डाक के इतिहास में एक परिवर्तनकारी वर्ष रहा है। पहली अक्टूबर 1854 को भारतीय डाक, जैसा कि आज हम इसे जानते हैं, की शुरुआत महानिदेशक के नियंत्रणधीन 701 डाकघरों की मामूली संख्या के साथ हुई। 1854 के डाकघर अधिनियम ने पूर्व की डाक प्रणाली में सुधार किए तथा डाकघरों के प्रबंधन और पत्रों की ढुलाई के विशेषाधिकार के लिए सरकार को पूर्ण एकाधिकार प्रदान किया। इस तरह देखें तो वर्ष 1854 कई कारणों से भारतीय डाक के इतिहास में अविस्मरणीय रहेगा। प्रथमतः, लार्ड डलहौजी द्वारा 1 अक्टूबर 1854 को डाक विभाग को एक महानिदेशक श्री एच.पी.ए.बी.रिडेल के अधीन लाना। द्वितीयतः, राष्ट्रीय स्तर पर प्रथमतः 1 अक्टूबर 1854 को डाक-टिकट जारी करना। यद्यपि इससे पूर्व 1852 में डाक टिकट जारी करके भारत एशिया में डाक टिकट जारी करने वाला प्रथम राष्ट्र बना था, पर वह मात्र सिंध प्रांत हेतु ही था। तृतीयतः, डाक टिकट के परिचय के साथ ही बिना दूरी का ध्यान रखे 'एक समान डाक दर' को लागू करना। चतुर्थतः, 'अखिल भारतीय डाक सेवा' का गठन। पंचम, सर्वप्रथम 'लेटर बाक्स' की स्थापना। षष्ठम, पोस्टमास्टर जनरल को जीपीओ के कार्यक्षेत्र से मुक्त कर जीपीओ हेतु स्वतंत्र स्थापना की गयी। सप्तम, 1854 में ही रेल डाक सेवा की स्थापना की गई तथा भारत से ग्रेट ब्रिटेन और चीन तक एक नई समुद्री डाक सेवा प्रारंभ की गई।

वर्ष 1854 के बाद डाक विभाग द्वारा विभिन्न सेवाओं का आरम्भ हुआ - फील्ड पोस्ट आफिस (1856), लिफाफा (1856), अन्तर्देशीय पत्र (1857), रेलवे छँटाई सेवा (1863), शाखा डाकघर (1866), पंजीकृत लिफाफा (1866), पोस्ट बैग (1866), चलित



डाकघर (1867), आर.एल.ओ. (1872), मुद्रित लिफाफा (1873), पंजीकृत पत्र पावती (1877), मूल्यदेय पार्सल सेवा (1877), बीमा पत्र (1878), पोस्टकार्ड (1879), मनीऑर्डर (1880), डाकघर बचत बैंक (1882), टेलीग्राम संदेश (1883), डाक जीवन बीमा (1884), टेलीग्राम मनीऑर्डर (1880), सैन्य पेंशन का वितरण (1890), सर्टिफिकेट आफ पोस्टिंग (1897), एयर मेल सेवा (1911), नकद प्रमाण पत्र (1917), व्यापारिक जवाबी पत्र (1932), राजस्व टिकट बिक्री (1934), इंडियन पोस्टल आर्डर (1935) इत्यादि आजादी पश्चात तो भारतीय डाक ने तमाम नये आयाम छुये। भारतीय डाक को यह गौरव प्राप्त है कि अगर 1852 में तत्कालीन भारत के एक प्रांत सिंध ने एशिया का प्रथम डाक टिकट जारी कर इतिहास दर्ज कराया तो 21 फरवरी 1911 को इलाहाबाद से नैनी के मध्य विश्व की प्रथम एयर मेल सेवा आरम्भ करने का श्रेय भी भारत के ही खाते में दर्ज है। राष्ट्रमण्डल देशों में भारत पहला देश है जिसने सन् 1929 में हवाई डाक टिकट का विशेष सेट जारी किया।

डाक विभाग का प्रमुख कार्यकलाप डाक की प्रोसेसिंग, पारेषण और इसका वितरण करना है। देश भर में 4.44 लाख से अधिक पत्र-पेटिकाओं से डाक एकत्र की जाती है जिसे डाक कार्यालयों के नेटवर्क द्वारा प्रोसेस किया जाता है तथा इसे रेल, सड़क व वायु मार्ग से देश भर में प्रेषिती तक पहुँचाया जाता है। डिजिटल वातावरण में इसे और भी सुगम्य बनाया गया है। स्पीड पोस्ट, पंजीकृत पत्र और पार्सल मर्दों को भारतीय डाक की वेबसाइट (www.indiapost.gov.in/) के जरिए ऑनलाइन रूप से ट्रैक किये जाने की सुविधा है। 'एंड्रॉयड आधारित मोबाइल ऐप पोस्ट इन्फो' के माध्यम से भी इन्हें ट्रैक किया जा सकता है। डाक वस्तुओं के वितरण संबंधी सूचना रियल टाइम में अपडेट

करने हेतु पोस्टमैनों को एक मोबाइल आधारित डिलिवरी एप्लिकेशन 'पोस्टमैन मोबाइल एप्लिकेशन' भी दिया गया है, जिसे केंद्रीय प्रौद्योगिकी उत्कृष्टता केंद्र, मैसूर द्वारा डिजाइन व विकसित किया गया है। डाक विभाग ने लेटर बॉक्स के क्लियरेंस के डिजिटल प्रमाण हेतु 'नन्यथा' एप द्वारा इनके इलेक्ट्रॉनिक क्लियरेंस की प्रणाली आरम्भ की है। नन्यथा की मदद से जनसामान्य द्वारा भी वेब टूल (<http://appost.in/nanyatha/>) पर लॉग-इन कर किसी क्षेत्र विशेष के लेटर बॉक्स के क्लियरेंस की स्थिति ट्रैक की जा सकती है। डाक प्रोसेसिंग कार्यों में तेजी लेने हेतु दिल्ली और कोलकाता में डाक विभाग द्वारा ऑटोमेटिक मेल प्रोसेसिंग सेण्टर की स्थापना की गई है, जिससे छँटाई कार्यों में काफी तेजी आई है। अपंजीकृत डाक थैलों की ट्रैकिंग के लिए भी बार कोड युक्त लेबल की शुरुआत की गई है, ताकि गुणवत्ता में सुधार हो सके। ई-कॉमर्स के क्षेत्र में हुई व्यापक वृद्धि ने डाक विभाग के लिए ऑर्डर पूर्ति सेवा के रूप में कूरियर, एक्सप्रेस एवं पार्सल क्षेत्र में अनेक संभावनाएं उत्पन्न की हैं। इसके मद्देनजर डाक विभाग ने वर्ष 2018 में पृथक रूप से एक पार्सल निदेशालय की भी स्थापना की है। विभिन्न शहरों में पार्सल हब और नोडल डिलिवरी सेंटर के माध्यम से पार्सल की मेकनाइज्ड डिलिवरी से जनमानस को काफी सहूलियत मिली है।

डाक विभाग पत्रों के साथ-साथ बचत और बीमा के क्षेत्र में भी लम्बे समय से कार्यरत है। डाकघर वर्ष 1882 से बचत बैंकिंग सेवाओं में और 1884 से जीवन बीमा के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। आज भी डाकघर की बचत और बीमा योजनाओं में समाज के विभिन्न वर्गों और आयु-वर्गों के हिसाब से विभिन्न योजनाएं हैं। नवीनतम टेक्नालॉजी का इस्तेमाल करते हुए इन्हें कोर बैंकिंग और कोर इंश्योरेंस से जोड़ा गया है। बचत योजनाओं के साथ-साथ अब 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' योजना के अंतर्गत संचालित सुकन्या समृद्धि योजना, अटल पेंशन योजना, प्रधानमंत्री सुरक्षा



अक्तूबर-2024



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें



Book Name : विश्वास की हत्या (उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-964179-8-7

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 198

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)



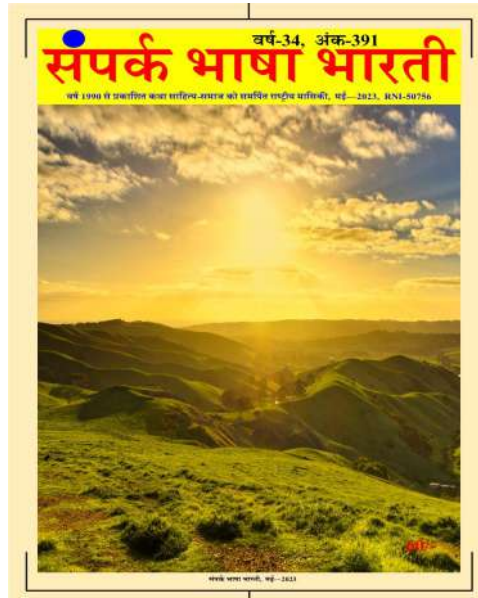
Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in



पत्रिका में प्रकाशित
लेखक के हैं उनसे

लेख में व्यक्त विचार
संपादक मण्डल या

संपर्क भाषा भारती पत्रिका का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

किसी भी विवाद की स्थिति में न्याय-क्षेत्र नई दिल्ली रहेगा।

पुस्तक समीक्षा के लिए समीक्षार्थ पुस्तक की प्रति भेजना अनिवार्य है।

प्रधान कार्यालय : ग्राम-मकरी, पोस्ट-भुइंदहा, पृथ्वीगंज हवाई अड्डा, प्रतापगढ़-230304 उत्तर प्रदेश
नई दिल्ली कार्यालय : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

पत्रव्यवहार तथा पुस्तक भेजने का पता : 97, सुंदर ब्लॉक, शकरपुर विस्तार, नई दिल्ली—110092

फोन नंबर : 9868108713/7701960982

ईमेल : samparkbhashabharati@gmail.com



बीमा योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और राष्ट्रीय पेंशन प्रणाली की सुविधा भी डाकघरों में उपलब्ध है। डाकघरों में भी अब एटीएम सुविधा उपलब्ध है। डाक विभाग के प्रथम एटीएम का उद्घाटन 25 फरवरी, 2014 को चेन्नई में त्यागराज नगर प्रधान डाकघर में हुआ था। वर्तमान में देश भर में 1000 एटीएम स्थापित किए गए हैं, जिसमें यह सुनिश्चित किया गया है कि प्रत्येक जिले में कम से कम एक एटीएम अवश्य हो। ये एटीएम अन्य बैंकों के साथ भी जुड़े हुए हैं। डाकघरों में अब ई-बैंकिंग और मोबाइल बैंकिंग भी आरम्भ हो गई है। 14 दिसंबर, 2018 से आरम्भ ई-बैंकिंग सुविधा के द्वारा, डाकघर बचत खाताधारक अपने बचत खाते से सुकन्या समृद्धि योजना तथा पोस्ट ऑफिस पब्लिक प्रोविडेंट फंड खातों में ऑनलाइन जमा करा सकते हैं। इंटरनेट बैंकिंग की सुविधा का लाभ www.ebanking.indiapost.gov.in के माध्यम से उठाया जा सकता है। वहीं, 15 अक्टूबर, 2019 से आरम्भ मोबाइल बैंकिंग की सुविधा का लाभ गूगल प्ले स्टोर से इण्डिया पोस्ट मोबाइल बैंकिंग ऐप डाउनलोड करके उठाया जा सकता है। डाक जीवन बीमा को सरकारी और अर्ध सरकारी कर्मियों के साथ-साथ अब अन्य प्रोफेशनल्स सेवाओं और स्नातक धारक युवाओं के लिए भी इसका दायरा बढ़ाया गया है। अब डिजिटल वातावरण में डाक जीवन बीमा/ग्रामीण डाक जीवन बीमा के अंतर्गत, प्रीमियम राशि का भुगतान, ग्राहक पोर्टल (<https://pli.indiapost.gov.in>) पर, डेबिट/क्रेडिट कार्ड, नेट बैंकिंग, भीम/यूपीआई, वॉलेट तथा रूपे कार्ड के माध्यम से किया जा सकता है।

आधुनिक आईटी के दौर में डाक विभाग ने तमाम नई पहल की

हैं। डाक विभाग की आईटी आधुनिकीकरण परियोजना को भारत सरकार द्वारा नवंबर 2012 में मिशन मोड ई-गवर्नेंस परियोजना के तौर पर अनुमोदित किया गया। इसका कुल परिव्यय 4909 करोड़ रु. है। वस्तुतः यह परियोजना डाक सेवाओं को प्रौद्योगिकी सम्पन्न, स्वावलम्बी और मार्केट लीडर में तब्दील करने हेतु उभर कर सामने आई। इसके द्वारा जहाँ डाकघरों में कोर बैंकिंग लागू की गई है, वहीं आईटी परियोजना द्वारा देश के दूरस्थ और अंतिम छोर तक प्रौद्योगिकी के लाभ पहुँचा कर शहरी व ग्रामीण के बीच अंतर को कम किए जाने की भी आशा है। यह परियोजना आठ विभिन्न खंडों में कार्यान्वित की जा रही है- डेटा सेंटर सुविधा (डीसीएफ), नेटवर्क इंटीग्रेटर (एनआई), वित्तीय सेवा प्रणाली इंटीग्रेटर (एफएसआई), कोर प्रणाली इंटीग्रेटर (सीएसआई), एक नवीन भारत के लिए ग्रामीण डाकघरों का डिजिटल उन्नयन (दर्पण), ग्रामीण प्रणाली इंटीग्रेटर (आरएसआई) और ग्रामीण हार्डवेयर (आरएच), मेल प्रचालन कार्य हार्डवेयर (एमओएच) और परिवर्तन प्रबंधन (सीएम)। डाक विभाग के आईटी आधुनिकीकरण परियोजना का उद्देश्य डाक नेटवर्क के लिए एक मजबूत डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर तैयार करना है, जो दुनिया का सबसे बड़ा डाक नेटवर्क है। इस परियोजना के अन्तर्गत देश भर के 1,65,000 डाकघरों का कंप्यूटरीकरण, आधुनिकीकरण व नेटवर्किंग किया जा रहा है, जिसमें ग्रामीण क्षेत्रों में ग्रामीण डाक सेवकों द्वारा संचालित 1,39,891 शाखा डाकघर भी शामिल हैं। इसी परियोजना में डाक विभाग के मेल, मानव संसाधन, बैंकिंग, बीमा तथा वित्त एवं लेखा आदि सभी कार्यों को सेंट्रल सर्वर आधारित, एकीकृत, मानक और मापन योग्य भी बनाया जा रहा है। इसमें डेटा सेंटर, आपदा



रिकवरी सेंटर, वाईड एरिया नेटवर्क स्थापित करना, सौर संचालित और पोर्टेबल हस्तचालित माइक्रो एटीएम सक्षम कंप्यूटिंग उपकरण सभी शाखा डाकघरों को प्रदान करना भी शामिल है।

डाक विभाग अलग-अलग स्थानीय सर्वरों से संचालित प्रणाली से आगे बढ़कर एक ही एकीकृत केंद्रीय सर्वर आधारित प्रचालन में स्थानांतरित हो गया है। प्राथमिक डेटा सेंटर 3 अप्रैल, 2013 से नवी मुंबई में और आपदा रिकवरी सेंटर 15 मई, 2015 से मैसूर में संचालित है। 31 दिसंबर, 2020 तक 26,447 विभागीय इकाइयों में वाईड एरिया नेटवर्क की कनेक्टिविटी स्थापित की गई है। इस प्रकार, ये कार्यालय केंद्रीकृत एप्लीकेशन के जरिए केंद्रीय डेटा सेंटर के साथ डेटा विनिमय कर जनसाधारण को सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। कोर सिस्टम इंटीग्रेटर जरिए डाक विभाग ने एक एकल, केंद्रीय सर्वर आधारित प्लेटफॉर्म पर कार्यालय के सभी डाक, मेल और काउंटर संचालनों को डिजिटल कर दिया है। इसके अतिरिक्त, इससे डाक विभाग के वित्त एवं लेखा तथा मानव संसाधन प्रबंधन क्रियाकलाप ऑनलाइन एसएपी आधारित प्लेटफॉर्म पर डिजिटल हो गए हैं। डाक एवं आरएमएस डिवीजन तथा प्रधान डाकघरों/जीपीओ में सीएसआई आरंभ हो चुका है।

डाक विभाग का उद्देश्य समावेशी विकास के तहत शहरों के साथ-साथ सुदूर ग्रामीण अंचल स्थित लोगों को भी सभी योजनाओं के तहत लाना है। ग्रामीण सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी प्रोजेक्ट के तहत गाँव में स्थित शाखा डाकघरों को भी हाईटेक किया जा रहा है। एक नवीन भारत के लिए ग्रामीण डाकघरों का डिजिटल उन्नयन (दर्पण) के तहत शाखा डाकघरों को सौर संचालित, माइक्रो एटीएम सक्षम, सिम आधारित हस्तसंचालित उपकरण 'साइलो' मशीन उपलब्ध कराई गई है। ये उपकरण अब तक 1.30 लाख से ज्यादा शाखा डाकघरों को दिए जा चुके हैं, ताकि ग्रामीण लोगों को तमाम सुविधाओं के लिये

शहरों की तरफ न भागना पड़े और अपने गाँव में ही उन्हें शहरों जैसी डिजिटल सेवाएं प्रदान की जा सकें। डाक विभाग के कामकाज में भारी बदलाव को देखते हुए ग्रामीण डाक सेवक एवं अन्य कर्मचारियों को आईटी वातावरण में प्रभावी ढंग से कार्य करने में सक्षम बनाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यशालाएं भी आयोजित की गईं।

इण्डिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के माध्यम से डाक विभाग ने बैंकिंग के क्षेत्र में भी प्रवेश किया है। वर्ष 2017 में देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने पहली बार डाकियों और विशेषकर ग्रामीण डाकियों का जिक्र करते हुए 'इण्डिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक' के बाद उनकी बदलती भूमिका पर प्रकाश डाला था। इसी क्रम में 1 सितंबर, 2018 को प्रधानमंत्री ने समस्त भारत के 3250 सेवा केंद्रों सहित पैन इण्डिया ऑपरेशन के आईपीपीबी की 650 शाखाओं का शुभारंभ किया। यह मुख्यतः सामाजिक क्षेत्र के लाभार्थियों, प्रवासी कामगारों, गैर संगठित क्षेत्र के कर्मचारियों, सूक्ष्म-लघु एवं मध्यम उद्यमों, पंचायतों, अल्प आय वाले परिवारों, ग्रामीण क्षेत्रों तथा ग्रामीण व शहरी क्षेत्र के बैंकिंग सेवाओं से वंचित और अल्प बैंकिंग सुविधाओं वाले वर्गों पर ध्यान केंद्रित करता है। सभी डाकघर काउंटेर्स, शाखा डाकघर, पोस्टमैन और ग्रामीण डाक सेवक के माध्यम से संचालित इण्डिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक डिजिटल बैंकिंग को प्रोत्साहित करता है और आवश्यकतानुसार जनसामान्य को वित्तीय और डिजिटल रूप से साक्षर भी करता है। इण्डिया पोस्ट पेमेंट्स बैंक के माध्यम से 'आपका बैंक, आपके द्वार' की तर्ज पर हर किसी के लिए घर की रसोई से लेकर खेतों तक सहजता से डिजिटल बैंकिंग की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। आधार इनेबलड पेमेंट सिस्टम द्वारा अन्य बैंकों में प्राप्त राशि का भी माइक्रो एटीएम द्वारा घर बैठे भुगतान किया जा रहा है। इसमें कोई शक नहीं कि देश के हर कोने में, हर दरवाजे पर डाकियों के मध्यम से डाक विभाग की पहुँच है और वह लोगों के सुख-दुःख में बराबर रूप से

जुड़ा हुआ है। इण्डिया पोस्ट पेमेंट बैंक की स्थापना के बाद आर्थिक और सामाजिक समावेशन के तहत ग्रामीण पोस्टमैन चलते-फिरते एटीएम के रूप में नई भूमिका निभा रहा है।

कोरोना महामारी के दौरान डाक सेवाओं को भारत सरकार ने आवश्यक सेवाओं के रूप में अधिसूचित किया। ऐसे में, डाक विभाग के कर्मी 'कोरोना वॉरियर्स' के रूप में उभरकर सामने आये, जिसकी कई बार प्रधानमंत्री ने भी सराहना की। हार्डटेक और डिजिटल संसाधनों की बढ़तीत डाक विभाग ने लोगों को घर बैठे तमाम सुविधाएँ उपलब्ध कराई। आवश्यक दवाओं, पीपीई किट्स से लेकर कोविड-19 टेस्टिंग किट्स तक डाकघरों के माध्यम से पहुँचाई गई। डाक विभाग ने अपना रोड ट्रांसपोर्ट नेटवर्क विकसित करके देश के विभिन्न हिस्सों तक डाक पहुँचाई। आधार इनेबलड पेमेंट सिस्टम के माध्यम से घर बैठे ही लोगों ने डाकिया के माध्यम से अपने बैंक खातों से राशि निकाली। सामाजिक सुरक्षा योजनाओं और डीबीटी से प्राप्त धन राशि लोगों को बिना बैंक या एटीएम गए, अपने दरवाजे पर ही डाकिया के माध्यम से प्राप्त हुई। 'डिजिटल लाइफ सर्टिफिकेट' के माध्यम से डाक विभाग ने पेंशनर्स को घर बैठे अपना जीवित प्रमाण पत्र प्रस्तुत करने की सुविधा प्रदान की।

आधुनिक दौर में आई.टी. मॉडर्नाइजेशन के माध्यम से डाक विभाग अपनी नई भूमिका को नई चुनौतियों के साथ स्वीकारने को तत्पर है। दिसंबर, 2020 में भारत के राष्ट्रपति श्री रामनाथ कोविंद ने भारतीय डाक विभाग को "एक्सेलेंस इन डिजिटल गवर्नेंस" की श्रेणी में "डिजिटल इण्डिया गोल्ड अवार्ड" से भी सम्मानित किया। आज डाकघर न केवल पत्र वितरित करता है बल्कि अपने व्यापक नेटवर्क के माध्यम से विभिन्न प्रकार की डिजिटल और हार्डटेक जनोपयोगी सेवाएं भी प्रदान करता है। वित्तीय लेनदेनों का संवहन करने की क्षमता रखता है तथा स्थानीय इलाके की जानकारी होने के कारण यह सरकार की योजनाओं को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने का प्रमुख जरिया भी है। भारतीय डाक आज पारम्परिकता और आधुनिकता दोनों की झलक प्रस्तुत करता है। डाकघर निरंतरता एवं परिवर्तन की पहचान बन गया है। ऐसे में निश्चिततः डिजिटल इण्डिया, वित्तीय समावेशन से लेकर न्यू इंडिया तक की संकल्पना को समाज के अंतिम व्यक्ति तक पहुँचाने में डाकघरों की अहम भूमिका होगी।

कृष्ण कुमार यादव
पोस्टमास्टर जनरल,

उत्तरी गुजरात परिक्षेत्र, अहमदाबाद -380004

मो0- 09413666599 ई-मेल: kkyadav.t@gmail.com

संपर्क भाषा भारती के साहित्यकारों/रचनाकारों से विशेष अनुरोध :



1. रचनाएँ केवल UNICODE फॉन्ट में ही भेजें।
2. रचनाओं को साधारण टाइप करके ही भेजें। उनमें कलाकारी दिखलाते हुए फूल/पते न डालें।
3. रचनाओं को 'Justified' फॉर्मेट में ही भेजें, 'Left Aligned' में नहीं।
4. नया पैरा शुरू करते समय भी या तो कोई स्पेस नहीं छोड़ें और यदि छोड़ते हैं तो वह स्पेस पूरे आलेख में समान हो।
5. सभी रचनाओं का प्रूफ पढ़ कर, उन्हें दुरुस्त कर के ही भेजें।
6. अर्ध विराम, पूर्ण विराम, विस्मय, प्रश्नवाचक के पहले स्पेस नहीं दें, बाद में दें।
7. संवाद कोष्ठक शुरू करने से पहले स्पेस दें और कोष्ठक आरंभ करने के बाद स्पेस नहीं दें।
8. सभी रचनाएँ : samparkbhashabharti@gmail.com पर ही भेजी जाएँ। व्हाट्सएप पर भेजी गई रचनाएं, प्राप्त संदेशों के क्रम में पीछे चली जाती हैं अतः उनका संज्ञान लेना कठिन होता है। फोन : 8595036445, 8595063206
9. रचना के साथ अपना फोटो अवश्य संलग्न करें।

जिन्दगानी

कभी सुस्ताई यादों की सुनहरी धूप में,

तो कभी ठहरी बस एक पल तमन्नाओं के आगोश में दीवानी,
लहलुहान हुई गर्दिशों की ठोकरो से कभी फिर भी तपती धूप में
निशां ए फर्ज लिए चलती गई जिन्दगानी

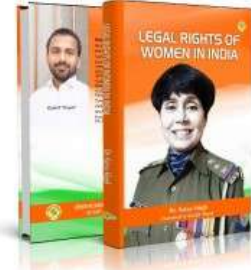
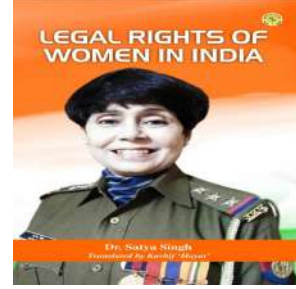
कभी हुई रूबरू स्याह दामन में लिपटे फरेब से, तो कभी देखा वफा
ए पाकीजगी को बड़े ही करीब से, जो गुम हो गये हैं अजनवी हुई
उन गलियों में उन्ही अनछुए लम्हों को सजदा करती गई जिन्दगानी

जब कदमों में थीं बहरें तो इतरा के मगरूर हुए चले थे, रास्ता रोके
थीं सदाएं कई पर हम मजबुर हुए चले थें, मुड़ के देखें भी तो क्या
देखें खाक ए अरमा ही नजर आएगी कि लिक्खी थी अतीत के
दामन पे कभी... मिटती गई जिन्दगानी

चंद खुशियो का वास्ता देकर तमन्ना ख्वाबों को बहलाने लगी, कि
दिल से उठी हर दर्द ए आह लव तक आते आते मुस्कुराने लगी,
गम ए निशा गहरी ही सही पर रोशन है मुक्कमल जहाँ जैसे ढलती
है लौ ए आफताब से शमां.. ढलती गई जिन्दगानी

बेरहम वक्त के खंजर से दोस्तों हमनें खुद को ही मिटा डाला, कि
खुद के दामन में लगा के आग किया राह ए हयात पे उजाला, बनी
रहे रूह ए आबरू और दाग लगे न कफन ए पाक को.. कि खुद को
खुद में समेट के ममता लिखती गई जिन्दगानी
कभी सुस्ताई यादों की सुनहरी धूप में.....

ममता राही



Legal Rights of Women in India

By Dr. Satya Singh

Price : Rs. 250/-

Pages :120

Paperback

यह FLIPKART पर उपलब्ध है

गूगल-पे (9868108713) माध्यम से मंगाने पर कूरियर
चार्ज का भुगतान प्रकाशक द्वारा किया जाएगा।

सौभाग्य प्रकाशन

कार्यालय : 495/2, द्वितीय तल, गणेश नगर-2, शकरपुर,
नई दिल्ली-110092

Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2,

Shakarpur, New Delhi-110092

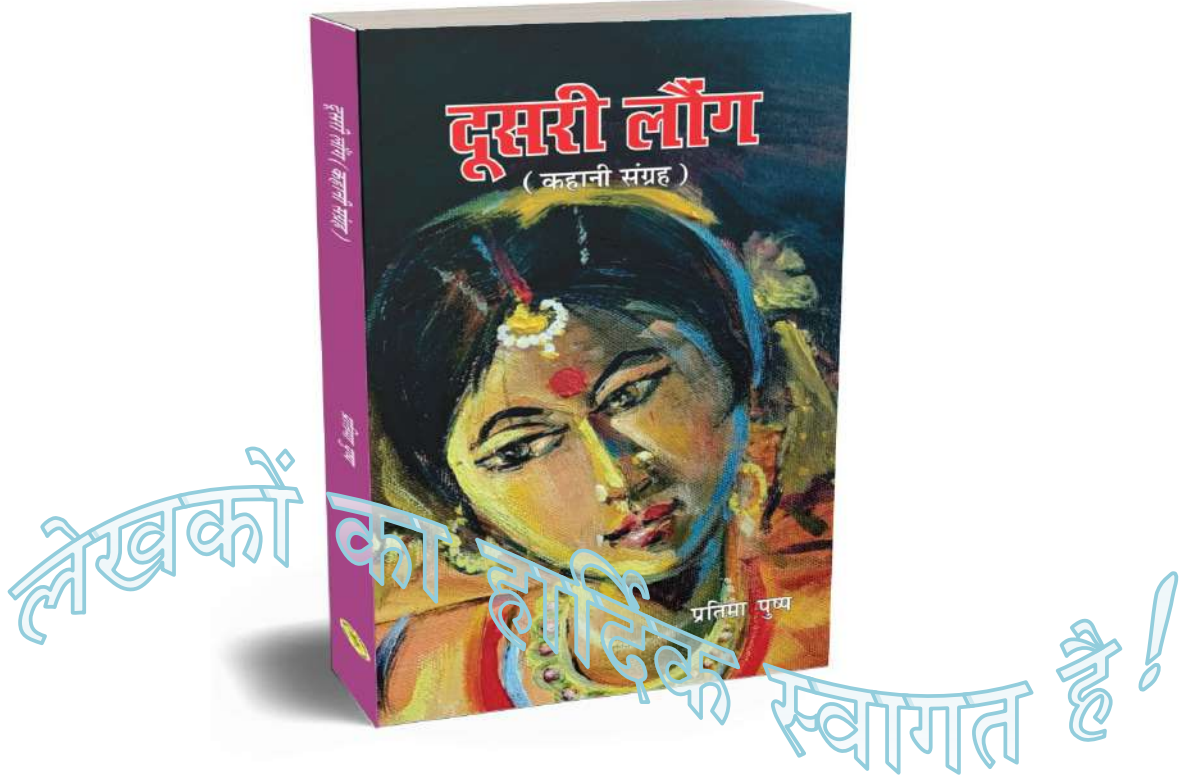
Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982



अक्तूबर-2024



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें



Book Name : दूसरी लौंग (कहानी संग्रह)

Author प्रतिमा 'पुष्प'

ISBN : : 978-81-963524-2-4

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 134

Price : 250/-

Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)



Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

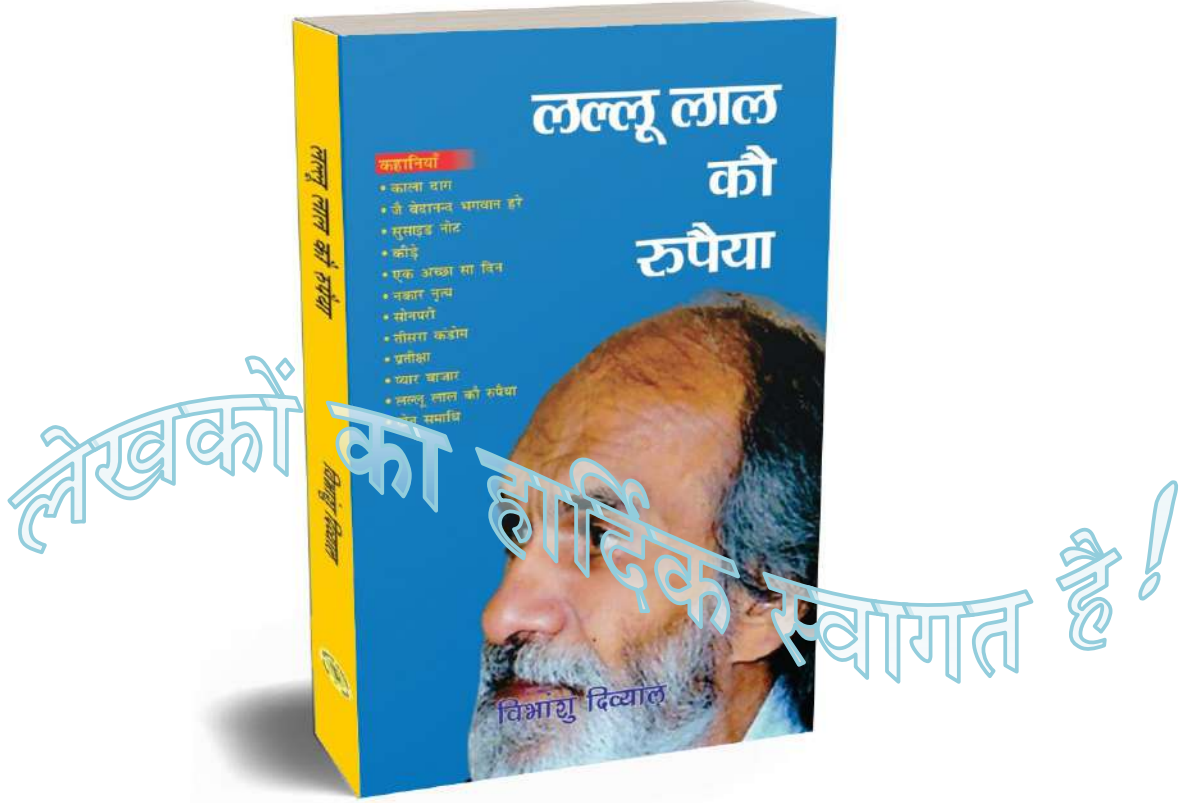
Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in



अक्तूबर-2024



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें



Book Name : लल्लू लाल कौ रुपैया (कहानी सांग्रह)

Author विभांशु दिव्याल

ISBN : : 978-81-964179-3-2

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 190

Price : 350/-

Genre Prose : गद्य (कहानी संग्रह)



Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagypublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in



अक्तूबर-2024



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें



Book Name : रोग, लक्षण एवम निदान

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : : 978-81-958985-7-2

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 190

Price : 150/-

Genre Prose : गद्य (चिकित्सा)



Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in



अक्तूबर-2024



सौभाग्य प्रकाशन संस्थान की लोकप्रिय पुस्तकें



Book Name : प्रतापगढ़ न्यूज़ (उपन्यास)

Author : सुधेन्दु ओझा

ISBN : 978-81-964179-7-0

Language : हिन्दी

Year of Publication : 2023

Page Numbers : 154

Price : 200/-

Genre Prose : गद्य (उपन्यास)



Saubhagya Publication

Office : 495/2, 2nd Floor, Ganesh Nagar-2, Shakarpur, New Delhi-110092

Postal Address : 97, Sunder Block, Shakarpur Extension, New Delhi-110092

Ph : 8595036445, 8595063206, 7701960982

Email : saubhagyapublication@gmail.com : Website : www.newzlens.in

संपर्क भाषा भारती, अक्तूबर—2024

चौहत्तर

रौद्र नाद

हे पाखण्ड-खण्डिनी कविते! तापिक राग जगा दे तू।
सारा कलुष सोख ले सूरज, ऐसी आग लगा दे तू।
कविता सुनने आने वाले, हर श्रोता का वन्दन है।
लेकिन उससे पहले सबसे, मेरा एक निवेदन है।

आज माधुरी घोल शब्द के, रस में न तो डुबोऊंगा।
न मैं नाज-नखरों से उपजी, मीठी कथा पिरोऊंगा।
न तो नतमुखी अभिवादन की, भाषा आज अधर पर है।
न ही अलंकारों से सज्जित, माला मेरे स्वर पर है।

न मैं शिष्टतावश जीवन की, जीत भुनाने वाला हूँ।
न मैं भूमिका बाँध-बाँध कर, गीत सुनाने वाला हूँ।
आज चुहलबाजियाँ नहीं, दुन्दुभी बजाऊँगा सुन लो।।
मृत्यु-राज की गाज काल-भैरवी सुनाऊँगा सुन लो।।

आज हृदय की तप्त बीथियों, में भीषण गर्माहट है।
क्योंकि देश पर दृष्टि गड़ाए, अरि की आगत आहट है।।
इसीलिए कर्कश-कठोर वाणी का यह निष्पादन है।
सुप्त रक्त को खौलाने का, आज विकट सम्पादन है।।

कटे पंख सा विवश परिन्दा, मन के भीतर जिन्दा है।
कुछ लोगों के कारण भारत, बुरी तरह शर्मिन्दा है।।
जितना खतरा नहीं देश को, दुश्मन के हथियारों से।
उससे ज्यादा भय लगता है, छुपे हुए गद्दारों से।।

ये इतने मतलब परस्त हैं, धर लें धन की पेटी को।
बदले में गिरबी रख सकते, हैं माँ-बीवी-बेटी को।
दाँव लगे तो धरा-धाम परिवेश बेच सकते हैं ये।।
क्षणिक स्वार्थ के लिए स्वर्ग सा, देश बेच सकते हैं ये।।

जासूसों की ठण्ड घटाने को, सिगड़ी रख देते ये।
गुस्ताखों की भूख मिटाने को, रबड़ी रख देते ये।।
देशद्रोहियों के मुख में मुर्गी तगड़ी रख देते ये।
जयचन्दों के अभिनन्दन में, झट पगड़ी रख देते ये।।

जिनकी सोच-समझ पर कुण्ठा, के जाले पड़ जाते हों।
राष्ट्र-गीत गाते ही अधरों, पर ताले पड़ जाते हों।।
जिनकी शक्ल देखते रोटी, के लाले पड़ जाते हों।
कौओं की क्या कहें कबूतर, तक काले पड़ जाते हों।।

उनके सम्मुख अपना माथा, रोज टेकना पड़ता है।

जिन्हें देखना नहीं चाहता, उन्हें देखना पड़ता है।।
रोटी खाते जिस धरती की, उसकी गरिमा भूल गए।
गोबर सा भर गया बुद्धि में, माँ की महिमा भूल गए।।

जिनको अन्तर नहीं सूझता, कंकर और पहाड़ों में।
कौन शक्ति बलबती सोचते, भों-भों और दहाड़ों में।।
उनकी चिन्ता नहीं मुझे वे, सुनें या कि अनसुना करें।
बैठें या फिर चले जाँय, घर पर जाकर सिर धुना करें।।

वही रहे नर-नाहर जिसमें, सुनने का दम-गुर्दा हो।
वरना चला जाय बैठक से, जिन्दा हो या मुर्दा हो।।
मैं आया हूँ वीरों की रग-रग में रोश जगाने को।
कायर में ही नहीं नपुंसक तक में जोश जगाने को।

इतना है विश्वास कापुरुष सुन लें मेरी वाणी को।
निश्चय ही हथियार उठा लेंगे, कर में कल्याणी को।।
मेरी आग भरी वाणी से, दहक उठेगी यह दुनिया।
ज्वालाएँ बरसेंगी मुख से, धधक उठेगी यह दुनिया।।

जिन लपटों की लपक देख, थर्राती लोहे की छाती।
पिघल-पिघल कर मोम सरीखी, पानी-पानी हो जाती।।
उसी आग की चिनगारी को, बिछा रहा हूँ डग-डग में।
कोशिश है भर दूँगा बाँके, वीरों की मैं रग-रग में।।

मैं छन्दों में ढाल चुका हूँ, लावा ज्वालामुखियों का।
जबरदस्त आह्वान किया है, योद्धा सूरजमुखियों का।।
हिम्मत हो तो ही तुम सुनना, वरना जाना भाग कहीं।
कविता सुनने के चक्कर में, लगा न लेना आग कहीं।।

छोटे मुँह से बड़ी बात बेशक तुमको चुटकुला लगे।
या आए इस सुप्त काल में, प्रलयंकर जलजला लगे।।
मेरी कविता तुम को चाहे, कला लगे या बला लगे।
यह भारत का रौद्र नाद है, बुरा लगे या भला लगे।।

कपटी मन के पेट दर्द की, जड़ी हमारे पास नहीं।
छूमन्तर कर देने वाली, छड़ी हमारे पास नहीं।।
इसीलिए इस शेष सभा को, काज बताने आया हूँ।
मैं यौवन के स्वर्ण-काल का, राज बताने आया हूँ।।
तुम क्या हो? तुम क्यों आये हो? क्या करना मालूम नहीं?

कैसे जीना तुम्हें और कैसे मरना मालूम नहीं ??
इसीलिए इस ज्ञान-खण्ड की, शिक्षा बहुत जरूरी है।
जन्म लिया जिस भू पर उसकी, रक्षा बहुत जरूरी है।।

हे बलिवीरो! उठो सुनो तुम, जो चाहो कर सकते हो।

मात्र आत्म-बल के बल पर, तन में पौरुष भर सकते हो।।
तुम्हें किसी अदृश्य शक्ति ने, जो सामर्थ्य परोसा है।
जिस के बल पर मातृभूमि को, तुम पर अटल भरोसा है।।

जब तक तुम हो तब तक तय है, दुश्मन सफल नहीं होगा।
जीव-जन्तु क्या जड़-चेतन का, जीवन विकल नहीं होगा।।
तुम चाहो तो कण कथीर के, कंचन-कोहिनूर कर दो।
चट्टानों को दबा-दबा कर, कर से चूर-चूर कर दो।।

पलक खोलते ही पल में, तूफान मचलने लग जाएँ।
एक फूँक में आँधी के, अरमान उछलने लग जाएँ।
पाँव पटकते ही पानी की, धार धरा से फूट पड़े।
तुम चाहो तो पूरी ताकत, इन्द्र-बज्र सी टूट पड़े।।

आत्मबली वीरों को किंचित, भय न किसी खाँ का होता।
बीच बैरियों के लड़ते हैं, बाल नहीं बाँका होता।।
सिर पर कफन बाँध कर चलना, व्रत होता रणधीरों का।
तभी साथ मिलता तूफानी, आँधी और समीरों का।।

यश-काया से बढ़कर जग में, कोई भी सम्मान नहीं।
राष्ट्र-यज्ञ में प्राणाहुति से, बड़ा और बलिदान नहीं।।
रात्रि घनी है जंग ठनी है, दीपक बनकर जलना है।
अँधियारों के बीच बैठकर, मुख से आग उगलना है।।

अब जो राष्ट्र-प्रेम के चिन्तन, का मन्तव्य समझते जो।
मातृभूमि की सेवा को, पहला कर्तव्य समझते जो।।
उससे ही मैं कह सकता हूँ, मरने-मिटने-जीने की।
लुटने और लुटा देने की, छक कर पीयूष पीने की।।

शौर्य-शक्ति की जीवटता की, सक्रियता की साहस की।
दुश्मन से लोहा लेने की, पूनम और अमावस की।।
उन सबको मन से प्रणाम है, मेरा बस इतना कहना।
दुश्मन घात लगाकर बैठे, हैं तुम चौकन्ने रहना।।

आज नहीं तो कल इन हालातों से पाला पड़ना है।
हमें युद्ध दोगलों और दुश्मन दोनों से लड़ना है।।
इसीलिए हर प्रहर प्रखर हो काल-बाँध कटिबद्ध रहो।
क्या जाने कब बैरी कर दे, हमला तुम सन्नद्ध रहो।।

गिरेन्द्रसिंह भदौरिया "प्राण"

"वृत्तायन" 957 स्क्रीम नं. 51, इन्दौर पिन- 452006 म.प्र.
9424044284/6265196070



व्योम

अडिग, अस्थिर, अविरल सा स्थापित गगन ये नीला.. जिसने
देखी है ईश्वर के कण कणमय होने की लीला

सम्पूर्ण ब्रह्मांड, जड़-चेतन और कालचक्र का खेल यह सारा
होकर के तटस्थ इसने देखा सर्व रसों का संगम न्यारा

जड़ धरा की उथल-पुथल और चंचला प्रकृति की नीरवता
मनमुदित हो इसने देखी सरल तरलों की भी जड़ता

लेकर प्रकृति को गोद में अपनी जीवनमयी जब थी हुई धरा
कालजयी यूही खड़ा रहा जब भी काल ने भरा हूँकरा

"आह" अद्भुत इस सृष्टि में देखों कहाँ किसी का मिलन रूका है
लाख बुलन्दियों पर खड़ा सही पर "व्योम" सदा धरातल पर झुका है

ममता राही

7500719570